श्री सीमंधरस्वामीन वीनंति र कागळ हुंडी पेठ परपेठ

मेझर नामुं.

ले. मुनि ज्ञानसुंद्र.

प्रकाशक, भी रत्न प्रभाकर ज्ञान पुष्पमाला, मु: फॉलींघी, जि. जोधपुर, मारवाड.

भूमिका.

शासनप्रेमी अने वीरपुत्रो !

आजे हुं हार्दिक रहस्य आपनी सन्मुख जाहेर करुं छुं जे महाशयो ! सूर, वीर, धीर थई - विचारशो, लगमम घणा समयथी आपणा पोताना घरमां हानि थवा मांडी. घरनां चोरज चोरी करवा लाग्या. घरफाटे घर जाय, एवं नाटक थवा लाग्युं. तेनी साथेन बरोबर सावधान पुरुषो पण कटिबद्ध थई पोकार करता आव्या छे. खूब जोर शोरथी आपणा समाजना सुधारको चेताव्या करे छे परंतु घरनां चोरो चरमांज गोंधाई रह्या छे एटले सर्वाशे निर्भय बनी शकातुं नथी. तो पण घणे मागे दीवा हाथमां रुईने उमा रेवाथी घरनां चोर्छे जोर चाली शके नहि एटला माटेज आ साथे कागळ, हुंडी, पेट ्रपरपेठ अने मेजरनामुं छखी दीवा जेवुं अजवाणुं करवाथी घरमां ढुंट थती अटके छे अने श्री सीमंघर स्वामी भगवान्ने आपणी खबर आपीने मनने शांत करुं छुं. आपणा घरमां मुनिम-गुनास्ताओए परस्पर की जगडा करी अनेक उपद्रव करी नांख्या छे, शासनने चारणीनी पेठे चाछी नांख्युं छे, मूळ मार्गने घणी तरेहथी हानि करी नवा नवा रीवाजो दाखल करी खरी बाबतमां गुंचवाडा उमा करी दीघा छे. सत्यने भेळरोळ करी सामान्य प्रजामां कोलाहल मचानी दीशो छे, घणा समज जीनोथी पण खुलासा न नीकळी

राके एवी प्रवृत्तिओ अने परंपरा उमी करी छे; आ बधी मांजगड सर्वािश सुभारवी कठीन थई पडी छे. बणा भव्य जीवो आवा गोटाळाथी कंटाळी गया छे अने हवे शुं करवुं केम तरी पार थशुं एवा धर्म संकटमां मुझाया करे छे. मारी पण एवी स्थिति थई छे. अने तेथीं आ विनीत पक्ष स्वीकारी विनती रुपे मारा विचारो सीमंधर प्रभुनी सन्मुख उमा रही हाथ जोडी अत्यंत नम्नस्वि जाहेर रीते अणावी दीघा छे. तेमां कोईनी साथे अभाव अप्रीतिनुं कारण नथी. जे मछा पुरुषो हरो ते सर्वे मारे माननीय छे अने जे भछाईथी वेगळा हरो ते सर्वनी साथे समभावे उपेक्षा राखुं छुं. आ ग्रंथ साद्यंत वांची विचारी अपक्षपात दृष्टिथी दरेक भछा पुरुषोए निर्णय करी छेवा प्रार्थना छे.

पुष्पांजली.

हे प्रभो दीनोद्धारक ! मारी शी दशा थई. त्हारी पासे जन्म्यो नहि. तेम चोथा आरामां त्हारो मार्ग मल्यो नहि. अरेरे ! हे स्वामिनाथ ! आवा पांचमा आरामां भयंकर कलिकाळमें मारो जन्म तेमां कुगुरु समागम त्यांथी भागी त्हारा शुद्ध शासनमां दाखल थयो. अने आगमश्रीली तपासी जोई तो जुदी जुदी समा-चारी अने गच्छागच्छ मतामत जोई, हे स्वामीनाथ ! क्यां त्हारो लोकोत्तर मार्ग अने क्यां आ लौकिक प्रवाह—गाडरीओ प्रवाह ! हे कहणासागर ! क्यां त्हारी वीतराग वाणी अने क्यां आ कर

दरनी वाणी ? हे भला भगवान् ! क्यां पुन्यानुबंधीनी जैन रोली अने क्या आजे अनंतानुबंधीनी प्रवृत्तिओं हे क्रुपानाथ ! दीन-बन्धो ! हुं खरेखर खेद पाम्यो मने बीजो कोई उपाय न सूझयो. हे जगतारक! में म्हारा आत्माने समजाववा माटे आपना पवित्र चरणकमळमां कागळ, हुंडी, पेठ, परपेठ अने मेझरनामाथी प्रार्थना करी छे. हे सर्वज्ञ भगवान् ! आप आप सर्व जाणो छो—देखो छो, तो पण हुं एक अर्जदार तरीके अरजी करी म्हारा आंखनां आंसुओ रेडी पुष्पांजाले आपनां चरणकमळमां शरणे रही म्हारुं परम कल्याण करवा चाहुं 'छुं. ेहे अनाथनां नाथ ! दीनबन्धो ! भक्तवत्सल भगवान् ! म्हारी अरजी स्वीकारी मने पवित्र करो-निर्भय करो ! दुाद्ध श्रद्धा आपो ! सम्यक्दाष्टे, सम्यक् ज्ञान-दर्शन-चारित्र आपो. हे श्री सीमंघर भगवान्! अधमोद्धारक ! जगत्तारक ! परम द्याळो ! हवे क्रपा करो. मुजने तारी पार उतारी, अरजी स्वीकारी, जयदेव ! जयनाथ ! जय वीतराग ! जय ! जय ! जय श्री सीमन्धर भगवान ! जयविहरमान भगवान जय! जय!

्रित्वमेव सरणंदेव ! त्वमेव सरणं मम. त्वमेव सरणं नाथ ! त्वमेव सरणं प्रभो !

—स्रेखक.

मारा विचारो

अधमोद्धारक श्री सीमंधर स्वामीने आ वीनतीरुपे कागळ-हुंडी-पैठ-परपेठ अने मेजरनामुं बनावीने में मारा हृदयनां विचारो रज़ कर्या. अने तेमां (२०३) ठेकाणे आगम पाठनां प्रमाण दाखल करी मारी दलीलो मजबूत करी मे शासनसेवा बजावी छे. सत्य अने असत्य ए ने मेळरोळ न थई जाय, ए खास रूयालमां राखी आ प्रवृत्ति करी छे. आ एक बाबत भूछवा जेवी नथी के, भस्मग्रहनी मीठी असरथी शासनमां ने हजार वर्ष पर्यंत वणी हानि थई छे. अने ते हानिमांथी घणा भाग्यशाली जैनाचार्यो बची गया छे. छतां पण केटलाक एवा पण शिथिलाचारी चैत्यवासी आचार्यो थया हे के जे शासनमां कांटा खीला समान थया हे. जेनी प्रवृत्तिओ जैन समाजने घणी खटके छे ते दूर करतां पण पार आवतो नथी. पेली काळी बीलाडीनी वार्ती अने " हारितंताम्र भाजनम् " जेम घणी बीलाडीओ पेढी छे अने सत्य दो।घवुं मुशकील थयुं छे. आ प्रकरणमा मात्र मुखनी वाते श्री पण सिद्धातनां पाठथी सत्य समजाववा कोशीश करी छे. आराधक थोडा अने विराधक जीवो घणा होय छे तेथी घणानी देखादेखीमा बिचारा मोळा माद्रिक प्राणी घणी वखत फसाई जाय छे. अने स्रोळने गोळ सरखा मानी पाछळथी जरुर पस्ताय छे. अने केटलाक पासत्थाओ एम समझावे छे के आ ढुंढियामांथी आवेला छे तेने

उत्सर्ग, अपवाद, परंपरा, गुरुगम क्यांथी होय एम छपनमां पाना मुधीनी कुयुक्तियो संमळावी दे छे. परिणाम ग्रुं आवे छे ते हवे फरीथी केवानुं नथी. घणा कोछाहछ करनारने जगत हवे बराबर पीछाणी शके छे. हमेशां सत्यज बहार तरी आवे छे अने छोको बराबर मानी शके छे. छोको खाछी वातोने अने कोरा पंडितोने मानवानां नथी. ए तो हवे चारित्रने मान आपे छे. कदाच एकाद प्रसंगमां मूछथाप खाई जशे, परंतु बीजी वार ठगाशे नहि.

अमारी पक्की श्रद्धा छे के शासनना पुनरुद्धार मुनि महाराजो थीज थवानो छे. अने तेवा मुनिराजो मारसभूमि उपर विचरे छे. रत्न अने काचना टुकडा साथेज पड़्या होय तो जोनारने सादी नजरे सरखा देखाय. पण झीणी नजरे जेवाथी खरी वस्तुओ मळी शके छे—ओळखी शकाय छे. बाह्याडंबरना ममकाथी काचना ककडा झवेरीओ सन्मुख हमेशां नापास थाय छे. रंग, ढंग, चाल, चलगत, चाळा, चेष्टा, टापटीप, वडे ढोंगी, धर्मधुर्त जरुर जुदोक पड़ी जाय छे. अने साचा संत पुरुषो खरी कसोटी उपर दीपी निकळे छे.

एक नित समजवा जेवी छे ते आ छे के, आगमोमां जे बाबतमुं नामनीशान न होय अने पछीनां ग्रंथोंमां आग्रह—कदाग्रह रुपे तथा गच्छ व्यवहार रुपे घर घाछीने बेठा होय तेवा दाखलाओं मळी शके छे. तीन थूई, चार थूई, पांच करुयाणिक, छ करुयाणिक— चोमासामां अधिक मास. बे पर्युशणा—लोकिक टीपणा मुजब अधुन मानवं ने अर्ध न मानवं. करेमीभंते त्रणवार, एकवार, पेला के पछी

श्रावकोने मुहपति चरवले, जुदा जुदा गच्छोनी जोगविधि-उपधान विधि तथा प्रतिष्टा विधि, अंजनशालाका, देवद्रव्य-सातंशेत्र द्रव्य, सुपना पारणा, गोठी, पूजारी, देवकी दुकानो, तीर्थीनी पेढी, मुहुपति बांधवी तथा वखाण वखते काने चडाववी इत्यादि अनेक प्रवित्तओ दाखरु थई छे के जे मन्य जीवोने खास विचारवा जेवी छे. मोक्षनी लुंटालुंट, अने दुकानदारी वधती जाय छे. साधुओ एक बीजाने जुठा मानवा छाग्या. एक बीजाना बापदादाने गाछो भांडवा लाग्या "शंकिए निस्संकंति निस्संकिए संकंति " ज्या शंका जेवं देखाय त्यां निःशंकपणे करवा लाग्या. ज्यां निःशंक के त्यां अनेक रांकाओं काढवा लाग्या. परिणामें आ बाबतोनी छेवटनी सरवाळी गुंचाई गएला सूतरना कोकडा पेठे, काढवो उंदरने खोदवो डुगर-व्यर्थ पाणी वलोवा जेवुं निष्फळ देखाय छे. श्रीमान् उपाध्यायजी यशोविनयनी महाराज तथा पं. सत्यविजयनी गणीए घणो प्रयत्न कर्यों छे, अने तेथी परिणाम घणुं सारुं आन्युं छतां पण पाछळथी मेळसेळ पेसती गई. आ प्रसंगे एक सूचना करवानी छे के-एक क्रियाउद्धारक मुनि मंडल स्थपाय, जैन महा सभा स्थपाय, जैन विश्वविद्यालय स्थपाय, जैन सुलेह कमीटी सभा स्थपाय, जैन जाति मदद फंड कायम थाय तो केवं सारुं.

शासनदेवता सद्बुद्धि आपो.

आ तमाम प्रकरणो आदिथी अंत सूची वांची विचारी मनन करो. कंई पण विरुद्ध विवेचन थयुं होय तो मिच्छामि दुक्कडं आपी क्षमा चाहुं छुं:— सेमक

प्रार्थना

आ विनंति छस्तवामां मारो हेतु ए नथी के हालमां भरत-क्षेत्रमां कोइ साधु नथी, तेमज कोइने हलका पाडवानी कोशिष नथी. मारी मान्यता छे के शासननो आधार मुनिमंडळी उपर छे, तथा समाजनी लाम हानिनी जोखमदारी पण मुनिमंडळी उपर रहेली छे. चालु समयमां भारत भूमिमां अनेक मुनिमतंगजो विचरे छे. .तेओना पवित्र उपदेश द्वारा समयानुसार अनेक सुधारा थया छे, थाय छे अने थता रहेशे. श्री वीर शासन एक-वीश हजार वर्ष पर्यन्त अविच्छित्र स्वरूपे चालशे ते महा मुनिमंडलना प्रनापेज.

ससेद छसवुं पडे छे के रत्न बहु कीमती छता पण काचना टुकडाओ साथे मेळसेळ थवांथी झवरी शिवाय कोइ कींमत करी शकता नथी. बाकी साधारण जनसमुह तो बधाने काचनो देखाय दे छे. एटछा माटेज काच अने रत्नो जुदा पाडवानी जरुर छे. कहुं छे के—"गणिर्छुटित पादाग्रे, काचः शिरसि धार्यते; कयविक्रय वेछायां, काचः काचो मणिर्मणिः। मतछब के रत्न पगे रोळाता होय अने काच माथे बांध्यो होय परंतु परीक्षक पासे काच ते काचज बनवाना अने रत्न ते रत्न वस्तुज छे—एक अमूल्य चीज छे. बन्ने ज्यांसुधी अछग अछग बतावामां न आवे त्यांसुधी भद्विक माणसोनी रत्न तरफ आदरमावना—सत्कारबुद्धि

न थाय. केटलाएक बनावटी रत्नो पण लोकोमां जोवामां आवे छे. उपरथी सारी टापटीप करी मखमलनां चळकदार कपडामां लेपेटी लोकोने रत्नना नंग बताववामां आवे छे. ने खरी रीते साचा रत्ननी मक्करी करवा जेवं थाय छे--साचानी प्रतीत उठाडवा जेवं बने छे. रत्न अने काच बन्ने साथेज रह्या होय ते। समाजनुं भलुं करी राके निह, जैन समाजमां परीक्षको गण्या गांठ्यान होय छे. काचना ककडाओ दृष्टिरागी अने छाछचु छोकोने जेम तेम समजावी पैसा एकठा करावे. कदाच एकाद दावपेचमां आवी जाय; परंतु तेरहाख जैन जीवोनुं कल्याण करावी न राके. समाजमां अंतःकरणनी धर्म लागणी—धर्म तत्वज्ञान—विषय कषायथी निवृत्ति--जिनाज्ञा आराधक ए तो घणा दूरज समजवा. ज्यारे जिनाज्ञा तरफ दृष्टि कर्जुं तो भन्ने मोटा मोटा नामधारक व्याख्यानमां--उपदेशमां कथनी कथता होय; परंतु पोताना ज मंडळमां सुलसंयम यात्रामां तुभ प्रवृत्ति न होय; तो पछी समाजनी सुधारणा कयांथी करी राकाय ! पोथीमांना रींगणा जेवुं धर्मोपदेशो जन रंजनाय । बीजाने कहे खोटो संसार, पोते चाटे बारंबार. आवा काचना टुकडाओथी समाजने घणुं सहन करवुं पडे छे, अने तेवाओथी चेतीने चाछवुं हितकर छे.

छेखक.



सुघारानो मार्ग. अने संघ समा

श्री संघने तीर्थकर भगवान् पण नमस्कार करे छे. संघ पची-समो तीर्थकर गणाय छे. आवो महत्वनो संघ समाजनी अघोगति थती केम जोइ राके छे ? घोर निद्रामांथी जागृत थइ ज्यारे विद्वान् मुनिमंडळ अने श्रावकवर्ग एक महत्ववाळी संघ महासभा स्थापन कररो. तेमां आगम अनुसार देश कालादि उचित नियमो बांघरो ! साधुसमाज सुधारवामां साधुओने वस्त्रपस्त्र पुस्तकादिमां पोतापणुं न राखवा, वधाराना होय ते संघसभाने सोपी देवा.

दीक्षा छेनार श्रावक अगर श्राविकाने प्रथम संवसमामां दाखछ करवा. परीक्षा पछीन समानी मंजुरी छइ दीक्षा आपवी. पुस्तक छापवा बाबत संवसमामां दाखछ करवुं अने समा मंजुरी आपे तो छपाववां. नवीन बाबत आपणा विहार बहार पड ते पण संव समानी मंजुरी छेवी. देवद्रव्यादि धर्मधन ते अमुक एकना कबनामां न राखवुं. संवसमा ज्यां योग्य छागे त्यां वापरवा रजा आपी शके. जैन जाति मदद फंड सुधर्म समा. मुनि महासमा. जैनग्रंथ सोसाइटी इत्यादि कोई जैन जाति उद्धारक संस्था स्थापे.

आ हुं मारा विचार जणावुं छुं तेवी रीते बीजाओए पण पोताना विचार जणाववा. विचारनी आपछे थवाथी कार्यपद्धतिनी कुंबी मळी आवे. गुपचुप बेसी न रहेता शासन सेवा माटे पुरतो प्रयत्न करवानी जरूर छे. छै० ज्ञानसुंदर.

मेजरनामानी अनुक्रमणिका

संख्या.	विषय.		गाथा.
१ श्री	सीमंधर स्वामीने विनती रूप कागळ		१०
२ श्री	सीमंघर स्वामीने विनती रुप हुंडी		g
३ श्री	सीमंधर स्वामीने विनती रूप पैठ		१२
४ श्री र	सीमंधर स्वामीने विनती रूप परपैठ		95
्र श्री	सीमंधर स्वामीने विनती रुप मेझर	दोहा	गाथा.
ढाळ	१ ही सीमंघर स्वामीनी स्तुति	4	હ
ढाळ	२ जी सुविहीत—अधिकार	3	28
ढाळ	३ जी चैत्यवासी—अधिकार	२	३०
ි ਫ (ಹ	४ थी आचार्योपाध्याय—अधिकार	२	२१
ढाळ	५ मी गणीअधिकार	२	१२
ढाञ	६ ठी योगोद्दहनअधिकार	२	२९
ढाळ	७ मी उपधान—अधिकार	3	१७
ः ढाळ	८ मी दीक्षा—अधिकार	8	२९
ढाळ	९ मी आहारग्रहण—अधिकार	3	३२
ढाळ	१० मी रात्रिभोजन-अधिकार	3	9
डाळ	११ मी वंस्र पात्र-अधिकार	२	34

(११)

ढाळ	१२	मी	सावद्य निर्वद्य-अधिकार	२	३६
ढाळ	१३	मी	विहारअधिकार	8	. २९
ढाळ	88	मी	ज्ञानाभ्यास—अधिकार	२	१६
ढाळ	१५	मी	व्याख्यानअधिकार	२	3 3
ढाळ	१६	मी	तपस्याअधिकार	२	38
ढाळ	१७	मी	स्रीसंग निषेधअधिकार	8	१५
ढाळ	१८	मी	एकल विहारी-अधिकार	8	88
ढाळ	१९	मी	गच्छभेदअधिकार	२	१२
ढाळ	२०	मी	निमित्त-अधिकार	२	१३ .
ढाळ	२१	मी	तार टपालअधिकार	8	१ ६.
ढाळ	२२	मी	प्रतिक्रमण— अधिकार	8	३०ः
ढाळ	२३	मी	तीर्थयात्रा—अधिकार	२	३६
ढाळ	२४	मी	मंदिर उपाश्रय—अधिकार	३	३१ :
ढाळ	२५	मी	ढुंढकअधिकार	₹.	३ ४:
ढाळ	२६	मी	तेरापन्थी—अधिकार	?	28
ढाळ	२७	मी	उत्सर्गोपवाद—अधिकार	२	१७
ढाळ	२८	मी	पासत्थाअधिकार	?	१८
ढाळ	२९	मी	श्रावकअधिकार	ب	६७
ढाळ	३०	मी	आराधक विराधक—अधिकार	२	३५
ढाळ	38	मी	पूर्णताअधिकार	२	२५



आ विनितरुप कागळ, हुंडी, पैठ, परपैठ अने मेझरनामानी अंदर आगमोना प्रमाण नीचे प्रमाणे छे.

A ROOM

संख्या.	आगमना नाम.	ढाळ.	गाथा.
· ફ	श्री उववाइजी सूत्र	ર ્ષ	7.3
२	श्री महानिशीथ सूत्र	* 3	(, ',
ૃક	श्री बृहत्कल्प सूत्र	8	: ,
8	श्री व्यवहार सूत्र	8	. * 4
نو	श्री आवस्यक सूत्र	8	ે ક્
- E	श्री दशाश्रुत स्कंध सूत्र	8.	ৃহ্
ن	श्री व्यवहार सूत्र	1 1 2 8 1 2	88
6	श्री निशीथ सूत्र	8	33
9	श्री व्यवहार सूत्र	8	83
30	श्री निशीथ सूत्र	4	8
28	श्री स्थानांग सूत्र	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	33
77	श्री व्यवहार सूत्र	4	33
33	श्री सूयगडांग सूत्र	E	8
38	श्री महानिशीथ ,,	Ę	: १
34.	श्री अंगचुलिया 🦴 🕠	Ę	: १
75	श्री उत्तराष्ययन ,,	ν ξ ″,ν	. ?
.१७	श्री भगवती "	६	, 3

(88)

8.5	श्री पन्नवणा	"	६	3
१९	श्री नंदि	,,	દ્	. ३
२०	श्री व्यवहार	"	દ્	٩.
२१	श्री भगवती	"	६	\$ a
२ २	श्री अणुत्तरोववाइ))	६	१०
२३	श्री अणुत्तरोववाइ	5 7	દ ્	१०
२४	श्री व्यवहार	17	દ્	88
२५	श्री भगवती	"	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	83
२६	श्री समवायांग	79	Ę	१९
२७	श्री अन्तगढदशांगं	,, ^	દ્	२०
२८	श्री बृहत्कल्प	17	દ્	२३
२९	श्री व्यवहार	37	६	२५
३०	श्री व्यवहार	. ,,,	• ६	२७
38	श्री महानिशीथ	. ₎₇	9	4
32	श्री सूयगढाङ्ग	"	o	
33	श्री दशवैकाहिक	"	ر ا	
38	श्री महानिशीथ	39	v	,
३५	श्री स्थानांग	??	6	Y .
36	श्री बृहत्कल्प)	6	2
३७	श्री उत्तराध्ययन	1)	6	२
急	श्री स्थानांग	??	6	C
३९	श्री दशवैकालिक	"	6	
80	श्री ज्ञाता	97		84
88	श्री कर्मग्रंथ))	6	२४

(१५)

પ્રર	श्री दशवैकालिक	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	·	~ 8
४३	श्री भगवती	. دو.ي	9	२
88	श्री भगवती	"	•	8
84	श्री समवायांग		9	4
४६	श्री पिंडनिर्युक्ति	77	9	4
४७	श्री सूयगढाङ्ग	"	·	६
86	श्री निशीय	"		G
४९	श्री स्थानाङ्ग	"	**	9
40	श्री स्थानाङ्ग	"	9	. 80
48	श्री दशवैकालिक	"	9	१५
पुर	श्री उत्तराध्ययन	"	, % - :	१५
५३	श्री दशवैकालिक	2.7	9	१८
48	श्री कल्प	"	8	15
44	श्री उत्तराध्ययन	,,	9	१९
५६	श्री आचारांग 🕝	,,,		२४
५७	श्री भगवती	"	9	२६
46	श्री आवश्यक	"	S	२८
49	श्री दशवैकालिक	"	9	३१
६०	श्री दश्वेकालिक	"	- ९	32
६१	श्री निशीथ	"	१०	8
६२	श्री दश्वेकालिक	"	80	. 8
६३	श्री बृहत्कल्प	"	80	8
68	श्री निशीय	37	80	R
६५	श्री दशवैकालिक	. 77	8.0	પ્

(े**१**६)

६६	श्री निशीथ	57	१०	4
६७	श्री दशवैकालिक))	१०	, · · y ·
६८	श्री आवश्यक	,,	80	હ
६९	श्री कल्प	77	88	?
७०	श्री गच्छाचार पयन्ना))	88	8
তৈ	श्री आचारांग 🕟	1)	18	?
७२	श्री निशीय	"	??	8
ંહરૂ	श्री बृहत्कल्प 🕝))	88	्र
७४	श्री उत्तराध्ययन	"	88	* ?
'७५	श्री ःदशवैकालिक ः	"	88	३
હદ્	श्री निशीय	"	88	8
. ৩৩	श्री पन्नवणा)	88	ે
७८	श्री निशीय)	38	१०
७९	श्रीःप्रश्नव्याकरण 🧸	"	88	80
~	श्री निशीथ	,,	28	१२
28	श्री आ चा रांग	"	88	83
८२	श्री अनुयोगद्वार)) .	38	१७
८३	श्री निशीय	77	? ?	२४
58	श्री ओघनिर्युक्ति	"	११	२८
८५	श्री आचारांग))	. ११	३३
८६	श्री निशीय	1,	88	38
્ટહ	श्री आचारांग))	१२	3
16	श्री महानिशीथ	,,	72	9
29	श्री आचारांग!	29	3 2	१०

(20)

30	श्री निशीथ	· (,))	१२	१०
38	श्री सूयगडाङ्ग	·· ,,	१२	१२
९२	श्री भगवती	",	१. २	१७
९३	श्री उत्तराध्ययन	1))	8.8	२८
98	श्री आचारांग	17.77	१२	२८
94	श्री दशवैकालिक	-,,,	१२	३०
९६	श्री आचारांग	7.77	13	₹,
९७	श्री आचारांग	. , 25	१३	3
90	श्री बृहत्कल्प	"	·	. ३
९९	श्री उत्तराध्ययन	"	. · · · : · १ ,३ . · ·	્હ
300	श्री आचारांग	"	; १३ /:	3.0
3.08	श्री दशवैकालिक		8.3	88
१०२	श्री समवायांग	. 7 77 - 11	? ? \$	38
803	श्री निशीय	· · >>	19 Jun 3 3 194	38
६०४	श्री ज्ञाता	· ,,,	: - : : \$	÷ ₹,
१०५	श्री स्थानाङ्ग	. ,,	\$8	. ર
१०६	श्री ।निशीथ	. 79		₹.
800	श्री बृहत्कल्प	₹.22	48	8
800	श्री निशीथ	27	100 188	· 4.
909	श्री बृहत्कल्प	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	48	6
330	श्री च्यवहार	. 29	18	
111	श्री व्यवहार	.))	1 28 S	88
333	श्री आवश्यक	., 37	38	84
993	श्री प्रश्नव्याकरण	. 22	34	₹.

(१८)

११४	श्री निशिष	. ,,	१५	Ę
११५	श्री आचारांग	"	१५	ं. ६
११६	श्री महानिशीथ)	१५	83
११७	श्री बृहत्कल्प	"	१५	84
११८	श्री आचारांग	"	१५	२ ३
₹ % S	श्री दशाश्रुतस्कंध	* >>	84	58.
१२०	श्री निर्यावलीका	• >>	84	२५
? ??	श्री ज्ञाता	. ,,	84	२५
१२२	श्री समवायांग	"	१६	88
१२३	श्री दशवैकालिक	" ·	१७	8.
१२४	श्री निशीय	"	१७	२
१२५	श्री रायपसेणी	,,	१७	(9)
१२६	श्री दशवैकालिक) >	\$0	6
१२७	श्री सूयगडांग	?	80	18
१२८	श्री बृहत्कल्प	"	१८	8
१२९	भी निशीथ	"	१८	8.
१३०	श्री निशीथ	"	१८	4.
? ३१	श्री बृहत्कल्प))	१८	६
१३२	श्री स्थानाङ्ग	"	१८	6
१३३	श्री उत्तराध्ययन	"	86	8
१३४	श्री स्थानाङ्ग	"	- 80	٩.
१३५	श्री उत्तराध्ययन	",	१८	80
१३६	श्री भगवती	, ,,	88	₹
१३७	श्री उत्तराध्ययन	27	89	. y .

(25)

१३८	श्री निशीथ		20	?
838	श्री भगवती	"	ર ે	Ę
•	त्रा नगरता श्री दश्चवैकालिक	"		,
१४०	• •	"	२१	
888	श्री निशीय	" >>	२१	
१४२	श्री अनुयोगद्वार	· • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	. २२	\$
१४३	श्री भगवती) 2	२२	٩.
888	श्री उपासकद्शांग	"	, (२२	85
१४५	श्री ज्ञाता	"	२२	१२
१४६	श्री मगवती	,,,	२२ ः	१३ :
१४७	श्री आवश्यक	??	२२	80.
१४८	श्री नंदी	,,	२२	99.
१४९	श्री समवायांग	,,	२२	२०
१५०	श्री महानिशीथ	"	२२	२३:
१५१	श्री आचारांग	"	२३	₹:
१५२	श्री भगवती	• >>	२३	₹.,
१५३	श्री आचारांग	"	? ? 3	85
१५४	श्री उत्तराध्ययन	?? .	ः २३	??
१५५	श्री अनुयोगद्वार	"	२३	१७ः
१५६	श्री महानिशीय	- 99	२३	20
१५७	श्री उत्तराध्ययन	, ,,	. २३	२ १
१५८	श्री ज्ञाता	"	२३	२२
१५९	श्री भगवती	"	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	२२ :
१६०	श्री अंतगढदशांग	. ,,	२३	, २२
१६१	श्री स्थानाङ्ग	"	२३	२७

(२०)

.१६२	श्री जीवाभिगम))	28	₹
१६३	श्री जंबुद्दीप पन्नति	, , ,	२४ -	₹.
१६४	श्री राय पसेणी	. 22	२५	6
१६५	श्री ज्ञाता	17	२ 3	9
१६६	श्री भगवती	9)	२५	9
१६७	श्री नंदी	"	२५	33
१६८	श्री समवायांग	??	२५	१२
१६९	श्री निशीथ	, ,,	२५ :	१६
१७०	श्री दशवैकालिक	"	२५	१ ६
१७१	श्री दशाश्रुतस्कंध	1)	२५	२६
१७२	श्री भगवती	. 29	- २६	. २
१७३	श्री ज्ञाता	. ,,	२६	1 8 1
१७४	श्री उत्तराध्ययन	· . :))	२६	8
१७५	श्री सुयगडांग	,,	२६	ह
१७६	श्री भगवती 📌	"	२६	Ę
१७७	श्री कल्प	12	२६	٤
१७८	श्री भगवती)	२६	8
१७९	श्री स्थानाङ्ग	·))	२६	९
960	श्री सुयगहाङ्ग))	२६	80
१८१	श्री प्रश्न ब्याकरण))	२६	१०
१८२	श्री भगवती	"	२६	23
१८३	श्री उपासक दशाङ्ग	"	२६	, १,१ ,
१८४	श्री उववाइ))	२६	12
364	श्री रायपसेणी	.,,	, २६	? ?

(२१)

१८६	श्री भगवती	22	२७	९
350	श्री दशवैकालिक	?)	२७	११
१८८	श्री बृहत्कल्प))))	२७	१२
१८९	श्री प्रश्न व्याकरण	"	२७	१२
१९०	श्री महानिशीय	1)	२७	१ ६
१९१	श्री निशीथ))	२८	8
899	श्री महानिशीथ	,,	२८	6
१९३	श्री महानिशीथ	"	26	१८
१९४	श्री भगवती))	२९	8
394	श्री भगवती))	२९	8
१९६	श्री भगवती	"	२९	8
१९७	श्री उपासक दशाङ्ग	"	२९	8
१९८	श्री स्थानाङ्ग	"	२९	દ્
१९९	श्री भगवती	19	२९.	દ્
२००	श्री भगवती	,,	२९	१२
२०१	श्री नंदी 🌱	"	२९	५६
२०२	श्री स्थानाङ्ग	"	३०	२०
२०३	श्री व्यवहार	•	३०	23



त्रण निर्नामा लेखोनो उत्तरः

नवा जमानानी ननी रोसनीमां घणी समानो प्रकासमां आवी उन्नतिना शिखर पर पहोंची गई छे अने केटलीक समानो उन्न-तिनो प्रयत्न करी रही छे । ज्यारे जैन समाननु दुर्भाग्य कहो के दीर्घ काळनो प्रमाद कहो, के जेने उन्नतिनुं स्वप्न पण आवतुं नथी. अरे उन्नति तो दूर रही पण केटलाक समानना आगेवानो अने धर्मगुरुओ, नाम धरावता (जेना उपर समानना मोटो आधार छे) पडदा पाछळ रही प्रपंचनाल मांडी बेठा छे. जाणे हे शनो तो कंट्राटन लीधो होय.

कोई पण व्यक्ति समाजनी उन्नतिनो सवाल समाजना आगळ मुके अने अवनित नुं कारण बतावी खोटी रुढियोने काढवानो दावो करे, तो झघडा मंडलनी प्रपंच पार्टी एकदम हुमलो करी नास्तिक के निंदक पापी कहीने तेने तुरतज तोडी पाडवानो प्रयत्न करे, अगर एटलाथी न पते तो पांच पचीस अन्ध श्रधालुओने आगेवान बनावी संघवाहर मुकवानी धमकी आपवामां पण कचास राखता नथी, शुं! एवाज संघने तीर्थकर नमस्कार करता हशे! नहीं नहीं आवा अन्यायकारक अने सुख शिलियोंने तो शास्त्रकारे हाडकाना ढगलाज कहा। छे. यथा—

सुहसीलाओ सङ्घंद चारिणो, वेरीणो सिवपहस्स; आणा भट्टांड वहु जणाओ, माभणह संघोत्ति ॥

एको साहू एकावी साहुणी, सन्वओय सट्टीय । आणा जुत्तो संघो, सेसो पुण अडि संघाओ ॥

याद राखशों के आजना सुधरेला लोको आवी खोटी धमकीयो थी कदी पण डरवाना नथी, माटे दश बोलनी साथे एने पण ऊंडा औरडामां मुको.

म्हारे निर्भय थईने कहेवुं जोड्ये के " बाबा वाक्यं प्रमाणम् " नो जमानो हवे अस्ता चल्ले चल्यो गयो छे. आपणी नजर आगळ देशभक्तो देशनी उन्नति माटे केदके काला पाणी थी लमार पण हरता नथी अने देशनी उन्नति माटे कमर कसी तैयार थया छे, त्यारे आ वीर पुत्रो अने पच्चीसमां तीर्थकर जेवो संघ आ समाजनी अधोगति केम जोई रह्यो छे ?

हाखमां केटलाक शासन प्रेमीओए समाजने माटे केटलाक प्रश्नो जाहेरमां मुक्या छे, पस्नु झघडाचारीओना साम्राज्यमां माते महत्वना प्रश्नोने स्थान मलवुं तो दूर रह्यं परन्तु केवा भयंकर रूपमां ते प्रश्नोने उतारी संघमां क्षेशना कांटा पाथरी दीधा छे, आवी स्थिती जोई कटिबद्ध थयेला शासन हितेषियो मुंझाई जाय तेमां नवाई जेवुं शुं ? कारण के आ दुराचारीओनी प्रवृत्ति आजधी ज नथी परन्तु अनादि कालथी चाली आवे छे, जुवो महानिशीध सूत्र अ० ९ मामां श्री धर्मश्री नामना तीर्थकर ना वारे हुन्डाब सार्पिणीना प्रभाव थी नैत्यवासी शिथिलाचारी या दुराचारीओनं खूब जोर चालतुं हतुं अने तेज वखते सुविहित शासन

प्रभाविक श्रीकमलप्रभावार्य ते चैत्यवासीओना टांटीया तोडवाने तैयार ज हता, परन्तु ज्यां दुराचारीओनुं साम्राज्य होय त्यां सत्य वनता उपर पण आक्षेप करवा दुराचारीओ कसर राखता नथी. ते सर्व उक्त शास्त्रथी जोई लेवुं । हालमां पण आ बीर शासनमां अन्दरखाने हुन्डावसिंपणीना जोरथी चैत्यवासी लोको पोताना स्वार्थ माटे शासन डोलाववामां काई कचास राखता नथी, तेमज पूर्वाचार्यो वखतो वखत तेओना दुराचार दूर करता हता. जुवो "संघपट्टकादि ग्रन्थ" पूर्वाचार्यो चैत्यवासीओनो चैत्यवास लोडाव्यो हतो, परन्तु तेओनी इन्द्रीयपोसक प्रवृत्ति अने सुख शिलिया पणुं तो. घणा काळ सुधी एमनुं एम चाल्युं आव्यं। एटला माटेज महात्मा पुरुषो वखतो वखत पोकार करता ज आव्या छे, जुवो संघपट्टक, सन्देह दोहाविल, अध्यात्मकलपद्धम अने हमणा थोडा काळमां थयेला महात्माओना वाक्य—

श्री आनन्द घनजी महाराज कहे छे—
गच्छना भेद बहु नयण निहाळताः तत्वनी वात करतां न छाजेः
उदरभरणादि निज काज करता थका, मोह नडीया कळीः
काळ राजे॥

मत मत भेदे रे जो जई पूछीये. सहुथापे अहमेव * महात्मा देवचन्द्रजी

द्रव्य किया रुची जीवडारे, भाव धर्म रुची हीण; उपदेशक पण तहवा शुंकरे जीव नवीनोरे. ॥ चंद्राव ॥ महामहोपाध्याय श्रीमान यशोविजयजी—

अर्थनी दिये देशना, ओलवे धर्मना ग्रन्थ रे; परम पुरुषना प्रगट चोर थी, किम वहे धर्मनो पंथ रे. क्रगुरुनी वासना पासमां, हिरण परे जे पड्या लोक रे*** **द्वान दर्शन चरण गुण विना, जे करावे कुळाचार रे**; लूटे तेने जन देखतां, किहां करे लोक पोकार रे. जे नवी भव तर्या निर्गुणी, तारसे कीण परे तेह रे; दोकडे कुगुरु ते दाखवे, शुं थयुं ए जग शूल रे +++× विषय रसमां गृही माचीया, नाचीया, कुगुरु मदपूर रे ॥ ध्रम धामे भमा धम चळी, ज्ञान मारग रह्यो दूर रे ॥ कलहकारी कदाग्रह भर्या, थापता आपणा बोळ रे ाजन वचन अन्यथा दाखवे, आज तो वाजते ढोळरे ॥ अरे आ उपाध्यायनी एटलायीन शान्त न थया हता, पण तेओनी पोकार अत्रे कोईए न सांमळी त्यारे तेओश्रीने साढा त्रण सो गाथानी हुन्ही श्री सीमंघर स्वामी उपर छखवी पडी हती, तथा सवासो गाथानुं स्तवन छखवुं पडचुं हतुं अने एक स्वाध्याय तो बापाजीए एवी छली हती के ते वाचतां रुंवाटा उभा थई जाय, ते दुां महात्मा कोईनी निन्दा करता हता एम कही सकाय है नहीं नहीं शासननी पडती दशा तेओश्रीथी जोवाई नहीं. अने तेओने ज्यारे घणाज कांटा रुग्या हुरो, त्यारेज एवा उद्गारी निकळ्या होय एम जणाय छे, अने आ उद्गारोधी दुराचारीओनो दुराचार दूर करी शास-नने लागतुं कलंक अटकावानोज तेमनो हेतु होवो जोईए। अरे महेरबान!

मने उदारता थी कहवा दो के परमात्मा वीरप्रभु पण दुराचारी-ओना पक्का रात्रूज हता, आ वात तेओ श्रीना सिद्धान्तथी झलकी आवे छे. जुवो सुयगडांग आदि सूत्र.

सजानो ! दुराचारनुं खंडन करवुं आ कोईनी निन्दा नथी, पण सदाचारनुं मंडनज छे, दुराचारनुं खंडन अने सदाचारनुं मंडन आज काल थतुं नथी, पण आ प्रवृत्ति पूर्व महाऋषि-ओथीज चाली आवे छे, एटले नवीन नथी.

आत्मबंधुओ ! आपणे अत्यार सुधी एम मानता हता के—खरा हो के खोटा पण आपणा गुरुदेव छे तेओना दुराचार जाहेरमां मुकवाथी आपणीज हांसी थरो. आ आपणा विचारों मोटा मूछ मरेछा हता अने आवा खोटा विचारोथी आपणे आज सुधी केटछा मोटा नुकसानमां उतरी पड्या छीये.

आजे छोको घरमां गाममां समाजमां के देशमां कचरोके सडो होय ते बाहर फेंकी देवा सीखी गया छे अने एज तेओनो खरो उन्नतिनो मार्ग छे, त्यारे जैनोए एवी गंभीर भूछ करी अग्निने कमां शामाटे संघरी राख्या हशे ?

केटलाक अज्ञान लोको पासत्थाओना लपेटामां आवेलां अने स्ट्रीनां गुलामो बनी एम कहे ले आपणां गुरु देवोना दोषो गमे तिटलां गुक्सानकारी होय तो पण प्रकाशमां नन लाववा जोईये, अने जो ते दोषो प्रगट करशो तो शासननो उच्लेद थशे, धर्मनो स्वंस थसे, अने सेथी गुरुना अभावे धर्मीपदेश कोई संमला वरो नहि, ते शिवाय विचारी भोळी बेनो उपधानादि किया कोनी पासे करशे ! एटळे भाई चुपचाप बेसी रहो !

महानुभावो ! आवा दुराचारी गुरुओथी नथी रहेतुं शासन के नथी रहेतो धर्म, अने आवा झघडाचारीओ के पोते रागद्वेषना कीचडमां खुंचेछाना उपदेशथी समाजनो सुधारो थवानो नथी अगर खुछा दिल्रथी कहो तो जैन समाजने क्लेश, कदाग्रह, धर्मभेद, अने पुरुषार्थहीन बनाववामां अग्रेसर कारण होय तो आ दुषित गुरुओज छे. बन्धुओ ! आजे पोप, पादरी, मठधारी, महान्त के मट्टारकोने दूर मुकवाथीज होको उन्नति एवा शब्द काने सांमलवा सीख्या छे.

कदाच आपणे आपणा गुरुओना छतां दोषोने रत्ननी पेठे तीनोरीमां मुकीये, पण ज्यारे अन्य समाजना छोको प्रसिद्ध पेपरोमां "एक जैनाचार्यनो अत्याचार " एवा छेखो छले तेने हजारो निह पण छालो विद्वानो वांचे त्यारे शुं जैनोने सरमावा जेवुं नथी ? एक नहीं पण एवा गामो गाम हजारो दालछा तैयार छे, ज्यारे जैन पत्र अने जैन धर्म प्रकासक जेवा महत्ववाछा पेपरो वलतो वलत पोकार कर्या करे छे के—आज काछ साधुओने परिग्रहना पोटछा वधी पड्या छे, अने ग्रहस्थीओने त्यां मुकवानो प्रचार घणो वधी पड्यो छे इत्यादि, त्यार पछी एवा सडेछा थांमछा ओने मकानना आधारमूत कहेवा ! निहंज कहेवा, माटे एवा थांमछा ओने अज्ञान के दृष्टि रागथी निर्ग्रन्थ कहेवा ते महा मोहनुं कारण

छे, जरा वीचार करजो के जैन मुनिओना नामथा जैनोमां नहीं पण अन्य समाजना छोकोमां पण मोटी छाप पडती हती, तेने बदछे आज जैनोमां पण जम जेवा छागे छे ते शुं खेदनी वात नथी, एटछुंजनही, पण केटछाक छोको तो आ कछहप्रीय झघडा चारियोना नाम सांभछवामां पण मोटुं पाप माने छे.

अन्ने अमे एम कहेवा नथी मांगता के बधा साधु देखित अने झघडा प्रिय छे, अथवा बधा साधु सरखा छे, अमे एटलुं कहीये छीए के पास-त्थाओनो पक्ष करवाथी सदाचारीओनुं महत्व ओछुं थाय छे, वळी पासत्था अने सदाचारिओ साथे रहेवाथी भोला लोको एकन सरलान मानीने खरा मार्गथी दूर थता नाय छे, एटला माटे पासत्थाओने जुदा पाडवा जोईये, तेथी सदाचारीयो पर लोकनी श्रद्धाः मजबूत रहे, एटछा माटेज पूर्वाचार्यो वलतो वलत कियोद्धार करता आव्या छे. आ समय पण क्रियोद्धार करी पासत्थाओने तेनाथी जुदा पाडवानी घणी जरुरत छे. ने अमारी पण एवीज भावना हती, पण आ घोर अंधकारमां म्हारो पोकार सुणे कोण, तेमन बीजी तरफ आ शासननी पडती दशा जोवाई नहि त्यारे न छुटके पूर्वाचार्यी ने पगले चालवानो स्वीकार करी श्री सीमंधर स्वामीने विनंति रुपे। कागळ, हुन्डी, पेठ, परपेठ अने मेजरनामुं, छखी में म्हारा दाजता दिखने शान्त कर्यु छे। ते मेझरनामामां सदाचारीओ समयानुसार संयम तपमां खप करनारा आन भारत भूमिपर विचरे छे, तेओने वारंवार नमस्कार करेल ले. अने जे वर्तमानमां निंदनीक वातावरणनी धमा- ल्यमां चाली रह्या छे अने ने दुराचारीयो दुनीयामां शासननी हीलना करावे छे, तेनुंन आ मेझर नामामां दुनीयाने दर्शन कराव्युं छे. तेमज घणां दाखला ते। शासननी हीलना न थाय एटला माटे पडदा पालल राखी तेनी सूचना मात्रज लखी छे, मेझरनामामां साधुओना ने कल्प किया आचार अने व्यवहार माटे जे कांई लख्युं छे ते म्हारा मोंढानी वातो नथी, परन्तु (२०३) आगमोना सबल प्रमाण आप्या छे, मुख्य वीर वाणी (आगम) नेज आगल राखी छे.

अत्रे अमे ए मेजरनामा माटे विशेष विवेचन न करतां अमारा वाचक वर्गनी विचार श्रेणीपर मुकवानुं उचित घार्युं छे, माटे वाचको आ मेजरनामाने अपक्षपात दृष्टिथी वांचसो तो आपना हृद्य कमळमां सत्य सर्य उदय थया विना रहशे नहीं.

केटलाक मुनि महाराजाओ पण चालती धमालने पन्थे प्रयाण करता आ मेजरनामुं वांची एटलुं तो जाणी गया छे के अमे घर शा माटे छोडयुं छे, अने हालमां अमे कई कर्तव्यनी कोरणीमां कोतराई गया छीए. अरे रे! क्षण मंगुर सुखोने माटे आ चिंतामाण रूप चारित्र हारी जाय छे. तेओना मेजरनामा माटे केवा अभीप्रायो आव्या छे तेना माटे तो एक स्वतंत्र चोपडीज थई जाय.

केटलाक विद्वान ग्रहस्थो पण मेजरनामुं वांचीने समजी गया छे के सगवान वीर प्रभुनो मार्ग जुड़ो छे, अने आजनी घमालना घक्का वाळी प्रवृत्ति जुदाज रूपमां छे, तेमां केटलाक धर्मधूर्त धर्मना नामे जगतने भूती खावानी दुकानदारीओ मांडी बेटा छे, हवे दुनिया बराबर चेती गई छे. तेवा अनाचारिओ थी हजार हाथ दूरज रहेवुं कल्याणकारी माने छे, तेमज जे महान पुरुषों पोतानुं जीवन समाज हितार्थ अर्पण करेछे ते सदाचारीओने माटे विद्वानोनी श्रद्धा मजबूत थती जाय छे.

आ वात स्वमाविक छे के चोरोने चांदणुं गमतुं नथी, तेमज दुराचारिओने सदाचारनुं व्याख्यान केवी रीते गमे ? ज्यारे एमज छे त्यारे मेजरनामुं तो दुराचारीओने माटे एक मोटो कुहाडोज छे, तो पछी बिचारा पासत्थाओ कलकलता कालजाथी पोक पाडे तेमां नवाई शी अने पासत्थाओना पक्षकार खोटा २ लेख लंबी कोलाहल मचावीने पासत्था-ओना उत्तरता आंसुने लुंछे अथवा दाजता हृदयने शान्त पाडे तो मले.

हुं छाती ठोकीने कहीरा के ज्यांसुधी अमारा मेजरनामामां आवेछा (२०३) आगमोना प्रमाण ते असत्य करी न बतावे त्यां सुधी कोईपण विद्वान् मेझरनामाने असत्य न मानी राके !

पाठको ! जरा ध्यान राखशो के वस्तु गमे तेवी होय पण पोतानी मर्यादामां होय त्यांसुधीज सारी कहेवाय छे, तेमज छेखक पण गमे तेवा होय तो पण पोतानी मर्यादामां रहीनेज छेख छखे त्यारेज दुनिया तेनी कीमत आंकी शके छे, अत्रे अमे एटछुंज कहीशुं के मेजरनामुं अने तेनां प्रतिपक्षीओना छेखोने वांचवाथी आपने खरे खरु छखाण जणाई आवशे के कयुं छखाण मयादीवाळुं छे.

मेजरनामामां मुख्य ३१ विषय चर्चवामां आव्याछे, तेमां प्रथम आगमोना प्रमाणथी वस्तुओनुं अस्तित्व पणुं बताव्युं छे, त्यार बाद् चालती धमाल्यी थतुं शासनने नुकशान ने तेना कारण दर्शान्याले, तेनी सायेज अमे पण गरंवार स्याल राखता आव्या छीए के अमारा लेखथी पासत्याओने पृष्टि न मले, तेमज लती कियानुं निषेध पण न थाय, एटलुंज नहीं पण उत्सर्ग, अपवाद, अने समयानुसारना दाखला पण सायेना सायेज आपता आव्या छीये आटलुं, लतां आ मेजरनामुं पासत्याओने वज्जपात नेवुं शा माटे थई पडयुं हशो, ते अमे समझी शक्ता नथी.

मेझरनामाना प्रतिपक्षमां पडदा पाछल रही त्रण निर्नामा लेख बाहर पड्या छे (१) जैनपत्रना अंकमां "मेझरनामा नामंजूर" (२) श्री श्रेयस्कर मंडल तरफथी हेन्डबील (३) एक ३२ पृष्टनी चोपडी तेना योजक केशवलाल डी. शाह अमदाबाद थी निकल्युं छे आ त्रणे लेखोना लेखक गृहस्थ होय के कोई मेषधारी होय ते तपासवानी अमारे जरुरत नथी, परन्तु ते लेखना अन्दर ने गीत गाया छे तेज जोवाना छे. आ त्रणे लेखोमां वधारे महत्ववालो बीषय तो आ छे के तमे मेझरनामुं लखवा बाहर पड्या छो परन्तु तमे ढूंढीयामां केना शिष्य हता? संवेगी मां क्यारे आव्या ? दीक्षा कोनी पासे लीधी? तमारु नाम ज्ञान सुन्दर कोणे आप्युं? इत्यादि.

छेखक छखेछे के आ प्रश्नो नो पहेछा उत्तर आपो अने पछीज बीजाना उपर छेख छखनो, अर्थात् पछी मेझरनामुं छखनो.

अहो ! आ केवुं आश्चर्य ? विद्वानो विचार करी राके छे के

आ पुछेला प्रश्नोंने अने मेझरनामाने शुं संबंध छे ! अगर एमज होय तो धारा समामां एक आवो कायदो पसार कराववो जोईबे के अमुक द्वीयामांथी आवेलो होय, अमुक दिवसे आज्यो होय, अमुकनी पासे दीक्षा लीधी होय, अमुक व्यक्ती ए नाम आप्युं होय, अमुक रंगमां होय, केटलो लांबो पहोलो होय, साधु होय के गृहस्थ होय अने अमुकनी रजा होय तोज सत्य वात लखी शके.

याद राखशो के ज्यां सुधी आवी कायदो जैनोमां प्रसार न थाय त्यां सुधी आ स्वतंत्र विचार वाला विद्वानो सत्य बात दुनीयानी सन्मुख जाहेर करवामां कदी पण पाछा हटशेज नहि.

महाशया ! ध्यानमां राखिता हवे एवा जमाना नथी के एक बीजाना विचारोने कोई दबावी शके अथवा आडा अवला प्रश्नो करीने एक बीजा ने हलको पाडी शके. ज्यारे अमारी उपर मोटा २ आचार्यो, पन्यातो अने साधु भोनां कागल मोटा मोटा विशेषणो वाला थोकबन्ध आव्या, ते वखते उक्त प्रश्नो केम नथी पूल्या,तेमज हुं ज्यारे साथमां रहेता हतो त्यारे पण आ प्रश्नो पुल्लवामां नथी आव्या, त्यारे आ ढोल जेटली पोल खोलवा वालुं मेझरनामुं वांचीनेज आ प्रश्नो पुल्लवामां आव्या छे? तेना अर्थ विद्वानो पोतानी मेलेज समझी सकशे, परन्तु एटलुं तो याद राखती के हुं तमारा चोपडामां साधु तरीके नाम मंडावा आवुं त्यारेज तमारे तेवा प्रश्नो करवाना हक छे. ज्यारे हुं एक शासन सेवक तरीके ओल्खाववा धारुं छुं.

महीना सुधी पेपरो द्वारा चर्चा चलावी छे, तथा आज सुधी ७५००० चोपडीयो देशोदेशमां शासन सेवा बजावी रही छे. तथा महारी दीक्षा अने म्हारुं नाम कई व्यक्तीथी छानुं छे के तमने प्रश्न करवो पड्यो ?

दरेक छेखकने भूछवुं न जोईये के आज गमे तेवा विचारो पब्छी-कमां कोई पण व्यक्ती मुकी राके छे पछी सत्यासत्यनो निर्णय करवो विद्वानानी विचारश्रेणी परज छे, तो पछी एवा नवछाईना प्रश्नो करी पोते हांसीना पात्र शा माटे बनो छो!

हवे बीजा मंडछना हॅन्डिबिल तर्फ जोई द्यां ! तो जे मंडलनो नाम श्रेयस्कर राखवामां आर्न्यु तेमां केटली योग्यता के अने तेना साथेज मंडलनुं हैन्डिबिल जोवामां आवे तो ते मंडलनी केटली कीमत मुंकाय ते अमे कही सक्ता नथीं।

ं मंडले ने प्रश्नो कर्या छे तेमां पण तेन गीत गाया छे के ढूंढीया मांथी आवेल छे अने कोना पासे दीक्षा लीधी इत्यादि तेना उत्तरमां अमे उपर लखी आव्या लीये अने विस्तारथी नोवुं होय ते। मेझरनामानी ढाल ३० मी जुवो.

हुं पूछुं छुं के आ हॅन्डिबिल पहेला मेझरनामुं बाहर पड़ी गयुं हतुं अने हॅन्डिबिलना तमाम प्रश्नोना उत्तर सविस्तारथी तेमां आवेला होवा छतां आ कागलीया शा माटे काला करवामां आव्या हशे! पाठको ! आ मंडलनो जन्म तो हमणांज झघडा पार्टीथी थयेल छे. दुराचारीओनो दुराचार अटकाववा माटे पूर्व महाऋषीओ संकडो ग्रंथ रची गया छे, अने आजे पण चोतरफथी एक अवाजे ते वात स्वीकारवामां आवे छे के समाजनी उन्नति माटे प्रथम दुराचारने दूर करो ! त्यारे आ नामधारीओने तथा श्रेयरकर मंडलने शा माटे खटके छे ते अमे कही सक्ता नथी ! पण एटलुं तो सहजमां समजी सकाय छे? के आ मंडलने घणामांगे दुराचारीओनीज पोलिसी होवी जोईये, परन्तु याद राखसो हवे दुनीया आंधली नथी के दुराचारीओनो पक्ष करीने समाजने अहित करे.

हवे केरावळ छे मेनरनामानुं खंडन केवी रीते कर्युं छे ते अमारा पाठकोने सारी रीते बतावीये छीये. मेझरनामानी त्रीनी ढालमां चैत्यवासीयोनो संक्षेप उल्लेख कर्यों छे, तेमां चैत्यवासी द्रव्य राखता हता, गादी तकीया साल दुमाला वापरता, पाहड रचना कराववा तप छड अटुमादि किया करावी पैसा लेता, रात्रिए रोसनी नाच क्दादि घामधूम करी शासनने घणो डोली नाख्यो हतो इत्यादि [देखो संघ पष्टकादि ग्रंथ]

ते खंडन करता छखे छे के ते साधु उक्त कार्य न करता हता अर्थात् द्वाद्ध चारित्र पात्र हता. आ माया युक्त छेखने म्हारे केशवछाछनी कपट किया कहेवीके पासत्थाओनी प्रपंच जाल कहेवी? कारण अमे चैत्यवासीओने माटे जे छखाण छख्युं छे ते पूर्वीचार्योना ग्रन्थ अने इतिहासना आधारथीज छख्युं छे माटे तेमां सत्य शुं छे ते पाठको पोतानी मेलेज जोई लेशे, पण एटलुं तो म्हारे पण कहवुं जोईये के आ वात जैनोमां प्रसिद्ध छे के चैत्यवासी थया हता, अने तेओनी घणी खरी प्रवृत्तिओ आज सुधी शासनने नुकसान कारक थई रही छे. आ वात माटे प्राचीन शास्त्र खिं छे, तो पछी आजना विद्वानो केवी रीते मानी शकसे के साधुओं लगार मात्र पण शिथिलाचारी (चैत्यवासी) न होता थया, अगर एमज होय तो पछी सेंकडों आचार्यो सेंकडों प्रन्थोमां लखी गया छे के चैत्यवासीओ आ शासनमां कांटा खीला जेवा थया छे. त्यारे शुं पूर्वाचार्यो खोटुं लखी गया हशे? के ते प्रन्थो जूठा ज हसे? परन्तु चैत्यवासीओनी हीमायत करवावाला आजे पण केटलाक देशोमां ते प्रवृत्तिने पुनर्जन्म आपे छे, ते कांई छानी बात नथी.

आगल चालतां हालना साधुओना गुण लख्या छे तेमां पण भगवाननी आज्ञा पालक लगार मात्र दोष सेवता नथी इत्यादि विशे-षणो थी भूषित कर्यो छे. अगर तमे एमज कहशो के अमे उत्तम मुनियोना गुण लख्या छे, तो अमारे कहेवुं जोईये के माई अमे क्यां ना पाडीये छीये? जुवो मेझरनामानी बीजी ढाल-यथा-

अहो तपसी अहो संयमी, अहो ज्ञानी हो अहो ध्यानी तेह. अहो खंती अहो ग्रुत्ती, अहो त्यागी हो वैरागीजेह ॥ग्रु०॥५॥ मेरु जिम अडोल छे, सायर जो जिम होय गंभीर दिनमणी जेवा दीपता, निरमल हो गंगानो नीर ॥ ग्रु० ६॥ अप्रतिबंध वायु परे. निरालंबण हो जाणे आकाशः अप्रमत्त भारंडपरे, केई करे हो कर्मोनो नासः ॥ सु० ॥ ७ ॥ कोषादि रिप्रुने दमे, पीवे हो सुनि उपश्चम रस ॥ अत्रु मित्रने सम गणे व्याप्यो हो भूमंडळ जसः ॥ सु० ॥८ ॥

याद राखरोो धनवाननुं नाम छेवाथी धनवान नथी बनता, परन्तु पुरुषार्थ करवाथीज धनवान बने छे.

आगळ चाछतां छखे छे के बधा साधु एक सरखा नयी × सीमां पंचाणु टका जिनाज्ञा ना पाछक छे इत्यादि. बान्धवो ! अमे क्यारे कहीये छे के बधा साधु सरखा थाय छे, तेमज बधा साधु दोषित छे. जुवो मेजर नामा ढाछ ३१ मी.

साधु नहीं सहु सारखा, श्रावक नहीं सम तुल्यः सामान्य विशेष किया करे, पामी धर्म अमूल्य ॥ १ ॥ वीर्थ उद्धारक केई मुनि, केई हो करे आगमोद्धार ॥ स्नासन मेमी केई मुनि, केई हो करे किया उद्धार ॥ सु०२॥ अद्धालु श्रावक घणा, शासन उपर हो जेने पूरी मेम ॥ देव गुरुभक्ती करे, रुडा पाले हो कीधा व्रतने नेम ॥ सु०३॥

हवे जरा चस्मा उतारीने जुवो के तमे केबी वातनु खंडन करवा तैयार थया छो ? केवल पापी २ करवाथीज खंडन थई जाय छे ? न्याई खंडन करवा तो बाहर पड़्या छो परन्तु खंडन ने मंडन कोने कहे छे, तेना अभ्यास तमारे कोई खंडानाचार्यनी कदमपोशी करीने मेछववो जोईये. आगछ चाछतां छेखक केटलाक दाखला छखी पासत्थाओनी जाज्वल्यमान अग्निमां घी होमवा जेवुं कर्युं छे ते आ छे—चोथा आरामां नंदीषेण नामना मुनि चारित्र थी चुकी ग्रहवास कर्यो—एमज आर्द कुमार मुनि चारित्र मुकी ग्रहवास कर्यों तेमज—कुंडरीक मुनि संयम मूकी ग्रहवास कर्यों इत्यादि आ जोगीयो चोथा आरामां थया छे.

पाठको ! आ दृष्टान्तो आजनी रांडी रांड पासे बेसी किया करावनार पासत्थाओ संयमना साधक छे के बाधक छे है ज्यारे चोथा आराना आवा मुनि थयाना दाखलाओ आगल मूकी आगला कालना केटलाक साधुओने थयेलो संनीपातनो रोगने दूध साकर जेवो बनाव शा माटे बनावो छो है शुं आ चौवीसीमां तमने एवाज दाखला मल्या छे है ज्यां धन्ना मुनि, मेतारज मुनि, खंधक मुनि, जेवा आत्म अटल शक्तिवालाओ दाखला केम नथी जोता है

आगल चालतां गजसुकुमाल मुनि अग्निने संघहे मोक्ष गयाः इत्यादि लखे के पण आ दृष्टान्तथी आजना साधुओने अग्निनो आरंभ करवानो के उपाश्रयमां दीवा राखवानो उपदेश करो के तेम नथी, परन्तु ते महापुरुषो मरणांत कष्टमां पण अडोल रह्या के तेम समजवानुं के.

आगल चालतां साधु दोषित आहार लेवे ते श्रावकने तारवा माटे, अने श्रावक साधुने दोषित आहार देवे ते अल्प पाप अने बहु निर्जरा इत्यादि अरे भाई एमज होय तो पछी शास्त्रमां दोषित आहार देनार अने छेनार बन्नेने चोर कहेवानुं कारण दुं। है जुवे। मेजर नामानी ढाछ ९ मी. सविस्तार—

आगळ चालतां-लले छे के हालना मुनिओने ममत्व भाव नथी तेमज वल्ल पात्रादि वधारे राखता नथी इत्यादि. आ बात लखवाथी पती जाय एम नथी, परन्तु दुनियांने करी बतावे तोज दुनिया मानी सके छे. मठधारीयोना नामथी लोको पोकार करी रह्या छे, अने पात्राओ तथा कामलीओनी संख्या बंध जोडोनी पेटीयो भरेली कदाच भोला भाला प्रहस्थीयोथी छानी हसे, परन्तु केवलीओ थी छानी नथी. ज्यारे एक बीजा पर हुमला कर छे के नोटिसो चैंहेंजो करी हजारो पर पाणी फेरे छे. एने द्युं कहवुं ममत्व के कदाग्रह?

आगळ छखे छे के साधुओं ब्राह्मण पासे भणता नथी, तेमज साध्तीयो व्याख्यान वांचती नथी इत्यादि, आ बात क्या सुधी सत्य छे. कर कंक-णने आरसीनी जरुरत नथी. आ वातने आपणो समाज सारी रीते जाणे छे. तेमज ज्ञानना हजारो रुपिया पर दरवर्षे हाथ फरे छे, अने शासन नी विनय भक्ती नो छोप थतो जाय छे. तेनी साथेज साधुओं स्वच्छंद बनीने शासनने केंद्रु निंदावे छे, ते पण दुनियाथी छानुं नथी.

आगळ योग अने उपधानने तमे निषेषो छो इत्यादि अमे योग उपधानने निषेषता नथी, जुनो ढाल छट्टी अने सातमी. परन्तु तमे बानाने नामे बलाय मटमां घालो छो ते शुं उचित छे ? मगवती सूत्र रा॰ ४९ मां मूळ पाठमां ६७ दिननी बांचना ते पण जुदा जुदा रातक अने जुदा जुदा दिवसोनुं विवेचन करेलुं छे. ते तो असत्य थई जाय, अने पाछल्थी कल्पीत छ मास सत्य थई जाय, आ वात कया विद्वानो मानसे १ हुं पुलुं छुं के छ मास क्या २ रातकना छे अने केटला रातक केटला २ दिवसमां वंचाय १ द्युं पोप पंन्यासो एनो उत्तर आपी राकसे १

उपघान माटे जो तमे कहेता हसो के विना उपधान नव-कार मंत्र मणवाथी अनन्त संसारी थाय छे. तो हुं तमने पुछुंछुं के उपधान करीने नमकार मंत्र मणवावाला केटला छे ! सोमां नहीं पण हजारमां एक टको कदाच मलसे, कारण ज्यारे जैनोनो चार वर्षनी छोकरोके छोकरी थाय छे त्यारे तेओना गुरु अने गुरुणीओ विचारा निरापराधी छोकराओने विना उपधान नवकार मणावी अनंत संसारी शामाटे बनावे छे! शुं ते छोकराओनी तेओंना हृदयमां द्या नथी ! एज नहीं पण केटलाक उपधान करावनार आचार्योने, अने पंन्यासोने पुछवामां आवे के तमे उपधान तो करावो छो, परन्तु तमेज नव-कारना उपधान कोनी पासे कर्या छे. तो पछी पंन्यासोनी ढोलनी पोलमां जुवो अनन्त संसारीना हगलाना हगलाज नीकली पहे!

आगल अंजन सलाका, प्रतिष्टा, उपधान, रात्रि रोसनी करावी, श्रावकोए देरासरमां नाचकूद, दांडीया रमवा, स्त्रियोए गरबागावा, गाडाने गाडा माटी मंगावी पहाड रचाववा, संघ साथे साधु साध्वीओ रात्रि दिवसमां साथेज चाळवुं, अने गाडा अने ऊंट साथे राखवा, तपतेलादि कराली पैसा लेवा, उजमणाना माल लेवा, साधुओना उपाश्रयमां अठाई महोत्सव कराववा, रात्रे दीवा राखवा, आचार्योनी मूर्तिओ जिन चैत्योमां स्थापवी, अने पोत पोताना जुदा २ उपाश्रयमां पेटी पटारा अने पोतानो सिका इत्यादि राखवुं ते आगमवादी पंच महामतधारी मुनि मतंगजोनी किया नथी, परन्तु निगमवादी, चैत्यवासी, शिथलाचारी, सुखशिलीयाओनीज किया छे. एने माटे अमे अत्रे वधारे विवेचन नथी करता, कारण अमोए थोडा दिवसोंमांज एक

प्रपंच नामुं

ल्सवानुं धार्युं छे, अने ने मेझरनामानी अन्दर केटलीक वातो मूलथी लसीन नथी, तेमन केटलीक सूचना मात्र लसी छे, तेओनी सारी टीका, टीपणी, नाम, गाम, साल, सम्मत सिवस्तार लसवामां आवसे, तेथी आपनी निज्ञासा पुरी थरो. माटे अमे अमारा पाठकोने थोडा दिवसना माटे घैर्य राखवानुं निवेदन करीये छीए, बनतां सुधी कार्य शीझ करवामां आवसे.

अमे त्रणे निर्नामा छेखोना छेखकोने सचाट सूचना करीये छीए के हवे पडदा पाछळ रहेवानो जमानो नथी, मेदानमां आवो अने सत्यासत्यनो निर्णय करी स्व अने परनुं कल्याण करो.

इत्यलम्.

छेखक, ज्ञानसुन्दर.



श्री रत्नप्रभस्रीश्वर सहुरूयो नमः । श्री सीमंधर परमात्माने वीनती रुपे कागल, हुंडी, पैठ, परपैठ

मेझर नामो.

प्रथम कागल

(संक्षेप मुद्दासर वातो)

सुणो चंदाजी, ए देशी। सुणो करुणानिधि, कागळ आ छली मेजुं तेने वांचो; जे प्रेम धरी, भरतक्षेत्रनी वाता, हृदये जाचो—ए देशी.

महा विदेह क्षेत्र अति भारी छे, पुष्कळावती विजया सारी छे; पुंडरीगिणी नगरी थारी छे, घणी अमारो केवल घारी छे. सुणो० १ भरतनी वंदना छेजोजी, कागळ पर चित्त देजोजी; सुर भिनतमां मत रीझोजी, उपकार गरीब पर कीजोजी. सुणो • २ चउ संघ गुणनी खाणो छे, पण भरतनी वातो जाणो छे; त्रां ढखुं नहीं परिमाणो छे, थोडामां घणुं ए पीछाणो छो. सुणो० ३ दुकानं आपनी चाले छे, चोरं चारे दिशि महाले छे; दिन दिन घाटो घाछे छे, पण हजु काम कांइ थाळे छे, सुणो० ४ पोलीस मार्ल उठावे छे, वळी चोर चोर करी धावे छे; वार्डं क्षेत्रने खावे छे, ए न्याय भरतमां पावे छे. सुणो० ५ मुनिमं गुमास्ता तेवा छे, ते पण चोरो जेवा छे; छोडी दुकाननी सेवा छे, ते खाय माल नित्य मेवा छे. सुणा ० ६ चरमी पुरा तोटो छे, माथे खरचा अति माटो छे; पुरुषार्थतणी पण खोटो छे, तेथी पुण्य अहींथी छेटो छे. सुणो० ७ श्वेतांवर दिगंबरना, झघडा गच्छ मतांतरनाः स्थानकवासी ढुंढकना, वळी भीखम तेरा पंथीना. सुणो० ८

१ शासन. २ कुदर्शनी, कुलिंगी, पासत्था, मायाचारी. ३ आचा-र्यादि उपदेशक अनेक क्षेत्र झघडा फेलाववाना उपदेश करे छे. ४ क्षेत्र ते शासन अने वाड ते समाजना आगेवानो पदवीधर पुरुषो आचार्य उपाध्याय पन्यास विगेरे. ५ साधुसमाज, श्रावक वर्ग. ६ रोज रोज जैनोनी संख्या घटे छे.

कोई मठघारी बनी रह्या, कोइ लोमी लालचिया थया; कोई मान पूजामां फसी गया, कोई शासनने निंदावी रह्या सुणो • ९ हवे मेहर नजर अमपर कीजे, भरतनी कांइ खबर लीजे; देवा योग्य शिखामण दीजे, तो ज्ञान कहे कारज सीझे. सुणो • १ •

(हे नाथ कागळनो उत्तर केम नथी आप्यो) हवे हुंडी लखुं छुं ते तुर्त सिकारो•

भक्ति हृदयमां धारजीरे—ए देशी.

कागळ कां न वांचीयो रे, माचीओ घोर अंधार; हुंडी सिकारो नाथजी रे, न करो देर लगार हो जिनजी. कागळ०१ स्वस्तिश्री पुष्कलावतीरे, महाविदेह क्षेत्र मोझार; पुंडरीगिणी नगरी भलीरे, जहां वस्या मुज मरतार (रक्षक) हो का०२ वंदना वांचजो साहेबारे, हुंडी लखुं हजुर; नाथ नहीं हमणां मरतमां रे, मचीयो कलियुग क्रूर. हो० ३ सीलकमांहे नाणुं नथी रे, लक्ष कोडाधिप नाम; वादी आवे बारणे रे, नहीं चाले वातोथी काम. हो० ४ संयमथी शिथिल हुआ रे, नहीं रह्यं आतम लक्ष; सम्यग् ज्ञान दूरे धर्यु रे, ले बेटा पोतानो पक्ष. हो० ५ निर्नायक टोळूं थयुं रे, संघमां मंडि खेंचाताण;
पेढी जमावे आपनी रे, न राखे कोइनी काण (दु:ख) हो ॰ ६
जैनमय पृथ्वी हती रे, हता केई करोड;
आज हिस्सो न हजारमो रे, मिवष्यमें शुं निछोड (दशा!) हो ० ७
बात ममेनी आ कही रे, हुंडीमां अधिक न होय;
जाणो छो मुज साहेबा रे, आपथी छानुं न कोय. हो ० ८
हुंडी पहोंचे तुर्तनी रे, नहीं मुदत (विलंब) नुं मान;
चल्लणी नाणुं दो ज्ञानने रे, भरतनी चाले दुकान. हो ० ९

अथ पेठ.

हुंडीनो उत्तर न आववाथी पेठ लखाय छे-

(ऋषभ जिनेश्वर प्रीतम माहरो रे-ए देशी.)
कागळ तो में छख्यो रे, हुंडी माहरी रे केम न सीकरी नाथ;
कारण पामी रे छखुं पेठने रे, जलदी सिकारो तात. काग० १
श्रीसीमंघर साहेब माहरो रे, घणी ते बिराजे आज;
घणी बेठां कदीए न बीगडे रे, मरतनी जैन समाज. काग० २
दुकानो मांडे माहेब जुदी जुदी रे, न करे घणीज संभाळ;
मुनिम गुमास्ता मळ्या चोरटारे, केम रहे साहुकारी माल. काग० ३
केटलुं छखुं साहेब चोरीओ रे, घाडां पडचां रे दुकान;
रत्नाधिक तो हुवे रह्यां नहीं रे, काचे मांचे मस्तान. काग० ४

ंमोटी मोटी पदवी घरावता रे, छडे झघडे मस्तान; मुंडे मुंडे रे करे प्ररूपणा, फेल्युं बहु अज्ञान. काग० ५ एक स्थापे बीनो उत्थापतो रे, न घरे जन विश्वास; श्रद्धा उतरे रे तुज शासन थकी रे, शाहु मुके निशास. का० ६ चेला चेली करे चोरी तणा रे, न गणे जातने कुळ; पुस्तक संचे लोमीडा भंडारमां रे, इम बगडचुं जगशूल. का • ७ कल्पने किया मुकी खुंटीए रे, करे सावद्य व्यापार; आरंम आदेशे ते आडंबरी रे, न आणे शंका लगार. का॰ ८ तरसे घणा रे श्रावक गुरु निना रे, क्यां जड़ पाडे बांग; (पोकार) मोढुं बांघे जो हुवे नगडु (दडो) रे, पण पडी कुवामां भांग. का० ९ काचुं काम न पडचुं पेढीतणुं रे, तीय आवे नाणुं अथागः दुकानों चाले मोटा ठाठथी रे, आ सुधारानो माग (मार्ग) का ० १० हेवुं देवुं मारे कड़ां नथी रे; नहीं ख़ुशामदनुं काम; देख्युं तेवुं छख्युं पेंठमां रे, आगळ मरजी तुम स्वाम (स्वामी) का० ११

नाणुं जमा थयुं छोकमां रे, हरकोई सिकारे दोठ; अधिकाई गणरो ज्ञान ताहरी रे, न नाणे सिकारो पेठ. का० १२

परपेठ.

(पेठनो उत्तर न आववाथी परपेठ लखाय छे.) (वान कहे जग हुं वडो, मुज सरखो न कोय छलना-ए देशी.) कागळ हुंडी पेठने, केम न सीकारी नाथ छछना; हवे परपेठ सीकारजो, जो तमे जगना तात छछना— का० है कागळ हुंडी पेंठमां, अहींआना हाल विचार: ल • रोष छख़ं परपेंठमां, भरतना सह समाचार. ल० का० २ पहेली आडत बांधतां; करवो जोइए विचार: ल० हवे अधवचमां मरतने, किम छोडो निरधार. छ॰ का० ३ मला माणस संसारमां, करे न विश्वासवात: ल० तुं साहेब त्रिभुवन धणी, भर्ली कीधी आ वात. ल० का० ४ एवा कपटी अमे नहीं, नाणां राखी छखीए पेठ; ल० समाचार दुकानना, तेहनी छखं परपेंठ. छ० का० ५ साध्य रोगनी औषिष, होने जीन निद्राद्ध; ल० रोग मोटो असाध्यनो, द्वाथी न थाये हाद्ध. ल० का० 🐔 एक कनक अने कामिनी, वश कर्यो सौ संसार; ल ० प्रवेश कर्यो शासन विषे, सुणीये ते समाचार. ন্ত কাত ত अर्थ (द्रव्य) नी दीये देशना, छेवे ज्ञानने नाम; ल० ऊंजेमणा उपधानमां, काढ्युं पेदारानुं काम. छ० का० 🗸 महिला परिचय अति घणो, भविष्यमां वधरो रोग: ल० वळी सुनो पन्यासजी, झूटा मांडया जोग. ल० का॰ ९

पहाड रचना करावतां, छुंटे जीवोना प्राण; ल० आरंभथी दांके नहीं, उंची घरी तुज आण. छ० का० १०० कदी तमारा मनने विषे, एवो हशे विश्वासः ल ० श्रावकवाड शासन तणी, वारण करशे तास. (तेनी)छ० का० ११ सुणो श्रावकनी वारता, देवद्रव्य पोते खाय: ल ० गच्छ तणा झघडा करे, केटलुं छर्स्युं हवे जाय. छ० का० १२ बांध्या ते दृष्टि रागमां, न करे हृद्ये विचार; ल ० ध्वजा पताका सारीखा, फरी जाय वायु छार. (पछवाडे) छ० का० १३६ साधुने श्रावक तणो एकज जाणो ढंग; ल ० कांण रही नहीं कोईनी, नहीं रह्यो शासन रंग. छ० का० १४ रोग वैरी अग्नि तणो, वळे शीतळ आचार: ∞ ऌ० वध्याथी व्याधी करे, जलदी करो उपचार. छ० का० १६ दुःल नही आणा मुकतां, केम आवे बीजाने देख; ल ० बगला भक्त भेगा हुआ, केटला लखुं हुं लेख. छ० का० १६ पर्पेठ सिकारो नाथजी, मत करो देर लगार; ल ० ज्ञान कहे बगड्या पछी, दुष्कर द्वाद्धाचार. छ० का० १७



मेझर नामुं.

क्रिह्स दोहरा.

श्री सीमंघर साहेबा, महावेदेह क्षेत्र मोझार;
प्रातः उठी वंदन करुं, दिनमां वार हजार.
आनंद घन देवचंद्रजी, यशोविजय उवझाय; (उपाध्याय)
हुंडी कागळ बहु छख्या, पेठ परपेठ पठाय. (मोकली)
उत्तर पाछो नहीं मळ्यो, ते पहोंच्या तुज स्थान;
कागळ हुंडी वाचीआ, पेठ परपेठ सुणी कान.
ते न सिकारी नाथजी, युं कारण छे तेह;
के नाणुं जमे नथी, के नहीं पहोंची जेह.
हुंडी पेठ खोवाई गयी, परपेठ सीकारी न नाथ;
ते कारण मेंझर छखुं, जलदी सीकारो तात.

जिन स्तुति.



वीर सुणो मारी विनती ए-देशी. सुणो सीमंघर विनती, मेझर नामुं हो छखी मेछुं आज. जलदी सिकारो नाथजी, जेम सुघरे हो सब जैन समाज. सणो सीमंघर. स्वस्ति श्री पुष्कछावती, पुंडरीगिणी हो नगरी शुभ स्थान;
सर्व उपमाने योग्य छो केवळदर्शी हो जो रे केवळज्ञान. सु॰ २
आठ प्रतिहार ज शोभता अतिशय हो मोटा चोत्रीश; (३४)
इंद्रादिक नित्य पूजता जीत्या हो जे रागने रीस. सु॰ ३
तत्र श्री सीमंघर प्रभु, करुणासागर हो मोटा कृपाळ;
अधम उद्धारण साहिबो, जगबंघव हो जग दीनदयाळ. सु॰ ४
मरतक्षेत्रना संघनी, वंदना होजो हो एक हजारने आठ;
तुम कृपा अत्र कृशळ छे, दर्शनथी हो होसे अधिको ठाठ. सु॰ ६
कागळ हुंडी पैठने, परपेठ हो छखी मेछी अनेक;
तेनो उत्तर मळ्यो नहीं, केम कीधी हो! प्रभु ढीछ विशेष. सु॰ ६
ते कारण छखवुं पडयुं, मेझर नामुं हो मने आ वार;
आगळ रीत नहीं छोकमां, देजो हो प्रभु एने सीकार. सु॰ ७
ढाळ १ छीनो तात्पर्य—वीतराग प्रभुने हमेशां वीनती
करवी अने वन्दना करवी.

दुहा.

अनंत कल्याणी संघ छे, संघथी वडो न कोय;
समोसरण विराजतां, नमस्कार करे तोय.
हुं पण संघने नमी करी, कहुं मननी वात;
तोपण कोइ न सांभळे, तुं जाणे जगतात.
ओछो कोठो तुच्छ मति, नहीं समावे नाथ;
कहुं भरतनी वारता, सांभळ कृपाळु नाथ.

सुविहित अधिकार.

्रं ॐ्रं≮र् (ढाळ २ जी)

उपरनी देशी चालु.

केवळ कमळा जिन छहे, गणधर हो थापे तीर्थरूप; चारे प्रकारे संघनो, तुं तो हो ! त्रीभुवननो भूप. भरतक्षेत्रनी वारता, समय समय हो जाणो जगनाथ; तो पण मारा मन तणी, अर्ज करूं हो जोडी बंने हाथ. सु० मुज मन ममरो वसी रह्यो, तुज चरणे हो मुज चित्त छोभाय; विषम वाट पर्वत घणा, आ भवमां हो ! नहीं मुझथी अवाय सु० ३ वीर शासन अति उजळुं, जाणुं हो ! पूनमनो चंद्र; साधु सुघारे आतमा, गुण गाने हो ! सुरलोके इंद्र. अहो तपसी अहो संयमी, अहो ज्ञानी हो! अहो ध्यानी तेह; अहो क्षांति अहो मुत्ती, अहो त्यागी हो ! वैरागी जेह. सु० मेरु जेम अडोल छे, सागर हो जेम होय गंभीर; दिनमणी जेवा दीपता, निर्मळ हो ! गंगानुं नीर. सु० 📢 अप्रतिबंध वायु परे, निरालंबन हो ! जाणो आकारा; अप्रमत्त मारंड परे, कोई करे हो कर्मनो नारा. स० कोधादि रिपुने दमे, पीवे हो ! मुनि उपराम रस; स॰ ८ शत्रु मित्रने सम गणे, व्याप्यो हो ! भूमंडळमां जरा.

इत्यादिक बहु गुणभर्या, भारूया हो प्रथम उपांग; ल्रब्धि अनेके ऊपजी, कोई मण्याहो ! पूर्वने अंग. एवा मुनिजीने नित्य प्रति, पूजे हो ! सुर इंद्र नेरेंद्र; हुं पण मार्थुं नमावीने, नमुं नमुं हो ! प्रमु तेह मुनींद्र. वीर पाट पर शोभता, पंचम गणधर हो ! श्रीसुधर्म स्वाम; पंचम आराना अंतमां, दुपस्सह सूरि हो ! छेरो तेनु नाम सु० ११: परंपरा श्री पासनी, बीजो गच्छ हो ऊपकेश (कमला) कहाय; पोरवाळ श्रीमाळ ने, ओरावाळ हो कोई जैन बनाय. सु० १२ सुविहित आचार्य पाटमां, चाल्या आव्या हो ! रत्नोनी खाण; उपलंदे राजासंप्रति, चंद्रगुप्त हो ! पाळी ! जिनवर चराण. सु० १३ निन्हव नवा नवा नीकळी, वादळ जेम हो ! गया विरलाय; भरतक्षेत्रनी वारता, छखता हो जीवडो गभराय. सु० १४≅ दक्षिण मरत हुंडा सर्पिणी, पंचम आरी हो ! क्रुष्णपक्षी जोय; असंयति पूजा पांचमो, कारण मळ्युं हो कमती नहीं कोय. सु० १६ उदय उदय पूजा नहीं; भस्मग्रह हो ! बेठो वीरनी. राश (राशि) प्रभाव पड़्यो तेहनो, पेहले कीधो हो ! ते प्रेमनो नारा. सु० १६ मान दूत कळिकाळना, छडी रोपी हो ! शासनमां आय; आराधे देवी देवता दिन दिन हो ! शिथिलता थाय. छतें नव वर्षो पछी, मोटो पड्यो हो ! शासनमां भेदः दिगंबर एकांतनें, पक्ष ताणी हो ! करे भेदमां भेद. बोलो केइ उत्थापीआ, केइ हो ! नव दीघा स्थाप; तेनी रामायण छे घणी, केटली लखं हो ! तुम जाणो आप.

छसो चोराशी वर्षे हुआ, गंध हस्ति हो प्रथम टांकाकार; धीमे धीमे हवे साधुनो, शिथिल पड्यो हो ! तप तेज आचार सु०२० काळ दुकाळ पड्या घणा, भारतमां हो ! मचीओ हाहाकार; केई मुनि अणसण करी पहोंच्या हो ! परलोक मोझार. २१

ढाल २ जी नो तात्पर्य—जे मुनियोना गुण बलाण्या छे, तेमां प्रवृत्ति करवी यथायोग्य प्रयत्न करवो अने प्रातिदिन अनुमोदन करवुं.

चैत्यवासी अधिकार.



दुहा.

दुष्ट काळ अति आकरो, न मिछे फासु आहार; निर्वेळ मन मुनि राजजी, छोपे मर्यादा कार. केई गया पर खंडमां राखवा संयमसार; जे पाछळ मुनिवर रह्या, सुणो तेना समाचार.

(ढाल ३ जी)

देशी पूर्ववत्

पासत्था पाछळ रह्या, जेणे कीघो हो ! जिन चैत्य (देश) मां वास; आठसो व्यासी वर्षे, शासन हुओ हो ! जाणे भस्मी रास. (राशि) सु० १

तप संयम दूरे धर्यो, दूरे धर्यो हो ! साधुनो आचार;		
वाडा बांध्या आपणा, तृष्णा हो लागी अपरंपार	मु•	₹:
द्रव्यिंगी द्रव्य राखवा, मांडी हो देवद्रव्य दुकान;		
तेहींज द्रव्यने वापरे, अंघा अंघ हो मच्यो अज्ञान.	सु०	3
वास कर्यों मुनि चैत्यमां, गृहस्थे हो छोडी सार संभाळ;	•	
द्रव्य करे मुनि एकठुं, देवनामे हो, बीछावी जाळ.	मु •	8
धर्मशाळाने उपाशरा नवा चैत्य हो बांध्या अनेक;		
मालिकी राखी आपनी पोते हो करे जेनी देखरेख.	सु॰	٩,
कल्पित किया बनावीने, सावद्य हो करे उपदेश;		
अंजन शलाका प्रतिष्ठा विषे, संयम हो न राख्यो लेश.	मु०	
कान्य बनान्या पूजा तणा, सावध हो न आणे रांक (रां	का;)	,
माया ममतामां पड्या, हाथी हो जाणे पड्यो पंक	सु०	9
मृदंग ताल बजावता, कई खावां हो नित्य सारा माल;		
गादी तकीआ बीछाववा, ओढवा हो शा ल दुशाल.	सु०	<
रोशनी करावे रातमां, मंदिरमां हो नचावे लोक;		
निरंकुरा दया विना, धर्म नामे हो भोगवे मोग.	सु०	९
पहाड तणी रचना करे, गाने हो आवे ने जाय;		
धाम धूम करे घणी, शासन हो दीघो छोपाय.	सु०	१०
संघ साथे करे जातरा, साध्वीयो हो साथे चाले नार;		
धर्भ नामे अधर्मनुं, पासत्था हो मांडयो प्रचार.	सु०	88
तप तेलादि करावीने, उजमाणे हो, लेवे रोकड दाम;		
गौतम पडघो पुरावतो, दुां छखुं हे। जाणो आतमराम.	सु०	12

उपधानना नामथी, नवी नवी हो किया दीघी स्थाप;		
रुपीआ छेवे रोकडा, शासनने हो छगाड्यो पाप.	सु०	१३
साधुना ऊपाशरे, स्थापे हो वीतरागी देव;		
अठाई ओच्छव करावतां, नाटकीया हो पाडी खोटी टेव.	सु•	8 8
इत्यादि संक्षेपथी, विस्तारे हो तुं जाणे नाथ;		
सो वर्ष सुधी चालीयो, मोटो हो चैत्यवासीनो साथ.	सु•	१५
देवगुप्त देवर्द्धि गणी, केई मुनि हो करी शासन सार;		
हरिभद्रसूरि हुआ, केई मुनि हो कर्यो क्रियाउद्धार.	सु०	88
अज्ञान तिमिर हठावीने, तप संयमे हो थया उजमाल;		
पुस्तकारूढ आगम कर्या, जेणे जाण्यो है। कांई पडतो कार	ळ.सु∙	१७
स्वरूप काळ किया रही, चैत्यवासीनो हो वध्यो परिवार;		
तेरसो वर्षो गया, प्रभु पछी, चोरासी गच्छना हो सुणीये	समाच	ार.
	मु ०	१८
गच्छ नाम जुदा पड्या, मांहोमाहे हो घणो धर्म स्नेह;		
पण कळियुगी जागतां तेहना हो समाचार छे एह.	मु०	१९
समाचारी जुदी जुदी, जुदा जुदा हो सहुना ए नाण;		
मंदिर उपारारा जुदा जुदा, जुदाजुदा हो श्रावक पीछाण.	सु॰	30
अंथ रचना जुदी जुदी पाकी बांधी हो पोतानी पाळ;		
केई निंदक कदाप्रही, मांडी बेटा हो ममतानी जाळ.	सु०	31
सिद्धसूरि वल्लमसूरि, जगचंद्र हो वली हेमसूरींद्र;		
पासत्थाने। मद चूरता, भूमंडळ हो वीचरे मुनींद्र.	सु०	33

कुमारपाळ प्रतिबोधीने, जैन धर्मे हो कीधो उद्योत; देश अढारे दया पछे रे, हीरसूरि हो अकबर प्रतिबोध. सु० २३ गच्छतणा अघडा घणा, पक्षा पक्षी हो मांडी दुकान: लींगधारी शिथिल थया, पासत्था हो माच्या मस्तान. सु० २४ विक्रम पंदरसे आठमां, लूंपक छोके हो कीधुं तोफान; पंदरसे एकत्रीसमां, चाली हो लुंपक दुकान. सु० २९ प्रतिमा उत्थापी पापीए, आगम हो मान्या एकत्रीस; बुक जेम बालिकिया करे, दया दया हो पाडे मुख चीस. सु॰ २६ एक बाजू यति शिथिल थया, बीजी तरफ हो लुंपकनो जोर; सत्यविजय सत्य राखवा, लुंपकना हो कील्ला दीधा तोड सु० २७ वीर परंपरा सत्यनी, सत्यविजयथी हो ! संवेगी नाम; लुंपकथी ढुंढक थया, आगळ छखुं हो ! बन्नेनां काम. सु॰ २८ सवंत सत्तर आठमां, लवजी हो ! लुंपकनो साघ (साघु); मोढुं बांधीने नीकल्या, लिंग पलटी हो ! कीघो उन्माद. सु॰ २९ सत्य मार्ग थोडो चालीयो वध्यो हो ! पासत्था प्रचार: प्रवृत्ति छखुं बन्ने तणी, थोडामां हो ! घणा समाचार. ंढाळ ३ जी नो तात्पर्य--जे वैत्यवासीयोनी प्रवृत्ति छखी छे तेमां कांई आश्चर्य न पामवुं. जीव बधा कर्माधीन छे. परंतु सास लक्षमां राखवुं के ते प्रवृत्ति अमारामां न आवी जाय अगर कांई होय तो काढी मुकवानी तुरत प्रयत्न करवी.

आचार्य अधिकार



दुइा

भूषण जिन शासन तणा, पद्घीघर गुणखाण; स्थंम कह्या जिन धर्मना, स्व पर मतना जाण. सारण वारण चोयणा, प्रतिचोयण करे तेह; संघ चलावे आणमां, ते सूरि गुण गेह.

3

(ढाळ ४ थी.)

देशी उपरनी चालु.

आचार्य उपाध्यायजी, प्रवर्तक हो स्थिविर गणी जाण;
गणावच्छेदक गणधरु, सात प्रद्वी हो कही रत्ननी खाण सु॰ १
सात रत्न चक्रवर्तीना, करे हो चतुर्रादिश अंत;
गुण गीरवा पदवीधरा, जेणे तार्या हो ते जीव अनंत. सु॰ २
जे पदवी तारक हती, हमणानां हो सुणीये समाचार;
गुणहीण गर्वे चळा, पड्या हो ममत्व मझार.
स्वमतने जाणे नहीं, केम होये हो परमतना जाण;
जाणे थोडुं ताणे घणुं, खाळी हो मांडी खेंचाताण. सु॰ १
माष्य देखो व्यवहारनो, विस्तारे हो खोळीने नेण (आंख);
अगीतार्थने सेवतां, खोट आवशे हो श्री वीरना वेण (ववन) सु॰ ६

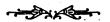
नहीं योग नहीं योग्यता, बनी बेठा हो आचार ज पाट; सुरि छत्रीश गुणे क्यां रह्या, क्यां रही हो गणीसंपदा आठ. सु॰ ६ पाटीदार पटेलीया, कोई हो छीपा माळी जाट: अंगहीना केइ मांजरा, नहीं शोभे हो श्रीवीरने पाट. ऊंचो धर्यो आचारने, किया हो गणे कष्ट समान; आचारज थया अमरिया, नहीं किया हो नहीं रह्युं ज्ञान. सु० ८ मोटी उपाधि धरावतां, बीताबो हो राखे दो चार; नया कोरी क्या चीतरी (शीख), बंने डूबे हो भवनळ मोझार. सु० परस्पर छापां छपावता, स्वश्लाघा हो परनिंदक तेह; पैप्ता खरचे वाणीया, दृष्टिरागी हो नहीं धर्मस्नेह. सु० १० निश्वीय आचारंग मण्या विना, अथवा हे। भणीने जाये भूछ; पद्वी देवी कल्ने नहीं, जुओ हो व्यवहारनो मूछ. स० ११ हाथी तणा बोजा छेइ, नांखे हैं। खर उपर मूल; पदवी देवे अयोग्यने, नहीं जुए हे। जातिने कुछ. पद्वी देवी अयोग्यने, नहीं हो छोडावे संव; दंड तणा भागी होवे, ज़ंबो हो व्यवहारनो रंग. सु १३ **पोतास शिष्य माने नहीं, दुां करशे हो शासननुं काम**; आचारन घर घर तणा, रह्यो हो निक्षेपो नाम. सु० १८८ ज्ञानयोग उपधानना, नाम लेइ हो ! मेलुं करे पाप; लावो लावो करता फरे, भन कलदार ! हो ! बेटा जपे जाप.

मर्या पछी पुस्तक नीकळे, चेला हो ! वहेंचीने खाय; (छेवे) नहीं तो खाये वाणीया, अथवा हो ! कोरटमां जाय. सु॰ १६ चरण स्थपावे तेहना, मूर्ति हो घरे मंदिर बीच. (वचमां) छबीओ चीतरावे बहुमूली स्वश्लाघा हो ! करे ते नीच. सु० १७ तप संयम आतम बळे, केई कीघा हो ! जेणे जैन अनेक; तेहनी खावे रोटीओ, लढावे हो ! मांहो मांही एक. सु० १८ अभिमानी झघडा करे, शुं आशा हो ! नवा करे जैन ! मम लजीआ कह्या नाथनी ! जुओ हो ! आगमना वेण. सु० १९ उत्तम तो ऊंचा छोडे, नीचाने हो ! छेवे आपणी पास; कढवी दवाई गुण करे, शासनप्रेमी हो ! करे अरजी खास. सु० २० लज्जा राखो पदवी तणी, शांतवृति हो ! आपसमां प्रेम; शांसननी सेवा करो, पामो हो ! जलदी शिव केम. सु० २१

ढाळ ४ थी नो तात्पर्य—ज्यां सुधी आचार्यना गुणनी योग्यता न होय त्यां सुधी आचार्य पद्धि नहित्र आपवी अने लेवावाळाने पण पुरो विचार करवी अगर पदवीने योग्यता होय तो पदवी आपवी तथा लेवी अने संबने शान्त मार्गे प्रवृताववो.



गणी अधिकार



दोहा.

गुण गीरवा मणी करे, गच्छतणा झुम काम; जिनागममां दीसे नहीं, पन्यासोना नाम. कहेवाय संवेगी नामना, नहीं संवेगनो रंग; पदवी तणा झगडा करे, छई छई गृहस्थी संग.

(ढाल ५ मीः)

देशी उपर प्रमाणे.

समिति गुप्ति जाणे नहीं, सावद्य निर्वे हो ! निह होये मान; दोष जाणे नहीं आहारना, नहीं हो ! माषानुं ज्ञान. सुं० १ हृष्ट पुष्ट साधु बन्या, माल खाइ हो ! बनीया मस्तान; जूठा योग वहन करे, कळियुगी अहो ! मांडचुं तोफान सु० २ नवतत्त्व नहीं आवडे, नहीं हो ! दशवैकालिक ज्ञान; योग वहें भगवती तणा, भरत मांहे हो ! मची उं अज्ञान. सु० ३ सूत्र कमसर वांचना, उत्कम हो ! कह्यो दंड निश्नीथ; पाप उदय पन्यासनुं, तोडी हो ! जिनशासन रीत. सु० ४ वाडा बांध्या पन्यासनी, बीजा हो ! नहीं करावे योग; माया जाल बेटा मांडीने, शासने हो ! लगाव्या रोग सु० ९

आगमवाचना उंची घरी, पासत्था हो ! किया दीघी स्थाप; पुस्तक धर्या भंडारमां, कोण वांचे हो ! पन्यासनी बाप सु० ६ मेद करे गच्छ मांहे ते, संघमां हो ! करे खेंचाताण; दुकान जमावे आपनी, पदवी पाम्या हो ! नहीं पाम्यो ज्ञान सु० ७ पुण्योद्य साध थया, आधाकर्मी हो ! खोई करे पुण्य नारा; पाप पूरां उद्य आवीया, साधु होने हो ! पछी पन्यास सु० ८ द्यां टखुं मारा साहेबा, देखादेखी हा ! छागे चेपी रोग; एक बीजाथी आगल पड़े, नहीं देखे हो ! कोई योग्यायोग सु० ९ अंदरनं रहस्य हवे सुणा, थइ पन्यास हा ! मांडे उपधान; मालपाणी नाणुं मळे, महिला मळी हो ! करे सन्मान सु० १० ठाणाङ्गः ठाणे आठमे, मूत्र हो ! व्यवहारनो खोल; कहेता गुण गणी तणा, केम चाले हो ! जे पोलमपोल सु० ११ जो संघ निर्णय नहीं करे, थासे हो श्री वीरना चोर; मारी फर्नमें बनावी छे, जुठों हो ! मत करनो सोर सु० १२ ढाल ५ मी जेवी रीते आचार्य पद्धि है है तेवीं न रीते गणी पद्वी समजवी.

योग वहन अधिकार.

दुहा.

सूत्र वांचे तप करे, योगवहन तस नाम; आगममांहे देखीलो, भाखे श्रीमुख इयाम (जिनेश्वरदेव) १ कल्पित छे विधि योगनी, मोला पडीया मर्म; ''धर्म'' आज्ञा वीतरागनी, आज्ञा बहार अधर्म. २

(ढाल ६ वी)

देशी पूर्व प्रमाणे.

महानिशीय अंगच्लिया उत्तराध्ययने हो ! दीसे योगनां नामः सत्यमार्ग गोपा करी, चैत्यवासीए हो ! कर्यु दामनुं काम सु० १ भगवतीनी वांचना सठसठ (६७) दिन हो मूल पाठमां जोय, इमणां योग छमासना, आगम आणा हो ! विराधक होय. सु० २ पन्नवणा पाछळ बनी, पहेलां हो ! नहीं होवे योग: देवड्रोगणी नंदी रची, त्यांसुधी हो ! नहीं हतो आ रोग भागममां ते। इम कहुां, एटला दिन हो ! उद्देशनो काळ; ते विघि ऊंची घरी पासत्था ह्ये ! मांडी मननी जाळ गणधर सूचित विधि एक ज, मांहे हो ! कोण आणे शंक; [शंका] गच्छगच्छनी जुदी जुदी कल्पित हो ! निव होवे निशंक भगवती योग कर्या विना, नहीं देवे हो ! गणी पद आज; आगम विरुद्ध प्ररूपणा, आधाकर्मी हो ! खावे पदवी कार्न सु० ६ निर्माय आचारांग भण्या होवे, सूत्र हो ! व्यवहारनी वात; जातिकुछने योगता देवी करूपे हो ! जेने पदवी सात. बहुल मुनि तीसक मुनि, छ मासे हो ! मणीया अंग अग्यार; पांचमा नवमा अंगमां नवमासे हो ! धन्नो अणगार.

जूडा योग वहन करे, आधाकमीं हो ! सावे पदवी कान;
अगीतार्थ अमिमानीआ, पदवी छेतां हो ! आवे नहीं छान. सु॰ ९
भगवती पहेला शतकमां आधाकमीं हो ! साघु खावे जाण;
रूखे अनंत संसारमां केम काढे हो ! बीजाने ताण सु॰ १०
जोगतणा आहारनी, छखतां हो ! चाले नहीं हाथ
हा ! हा ! मरतमां शु थयुं, मळीयो हो ! स्वारथीयो साथ सु॰ ११
राम सनेही साधुना, भोजन बने हो ! घरघरमां तेम;
कमती नहीं योग वहनमां, वनडो (वर) बेठो हो ! वंदोले
जेम. सु॰ १२

बारा बांधी आवे श्राविका, काले हें ! द्युं आवशे तप ! पाप उदय पन्यासनां, अमुक साधुने हो ! अमुक थाशे खप.

- सु० **१३**

तैयारी करी आवे तेडवा, लाभ देजो हो ! मारा स्वामीनाथ; आधाकमींथी शंके नहीं ! देवे लेवे हो ! डुबे बन्ने साथ सु० १४ पचक्लाण करे आंबीलतणा, दहींतणा हो ! करंबा खाई जाय; भीटुं मरचुं हींगने जीरूं, दशवीस हो ! मोजन बनवाय. सु० १६ नींबी तो जाणे नामनी, कलाकंद हो ! खीरने दूधपाक; तल्युं गळ्यु खपे घणुं, बदाम चिरंजी हो मेवोने द्राख. सु० १६ पचक्लाण करे विगय तणा, विगय खावे हो ! लागे मोटुं पापः महा मोहनीय कर्म बांधतो समवायांगे हो ! माल्यो श्री आप.

काली आदि दश राणीओ, अंतगढमां हो ! आंबिल अधिकार; लेपादि विगय वरनीयां, केवळ पामी है। ! गई मुक्ति मोझार.

स॰ १८

छठ तप आंबिल पारणे, नयमे अंगे हो ! धन्ना अणगार; लूबो आहार वे द्रव्यनो, समाचारीमां हो ! चास्यो अधि-

कार. सु० १२

साधवीओ आवे एकली, हैवे हैं। ! योगवहन नाम; काछ विकाछ गणे नहीं, कोण जाणे हो ! पन्यासोना काम सु० २० साधुना स्थानमां साधवी, वरजी हो ! बृहत्करप मोझार; आलाप संलाप करवा नहीं, नागणपरे हो ! बतावी नार. सु० २१ संत्र चतुर्विध मांहने, सुणना हो ! आवे व्याख्यान; प्रवर्त्तिनी पासे रहे, छेवे देवे हैं। ! आपसमा ज्ञान. नानी दीक्षा दिन सातनी, मध्यम हो ! राखे मास चार; उत्कृष्टी छ मासनी, जुओ हो ! सूत्र व्यवहार. सु० २३ पिंडेषण अध्ययन भणवाता, हमणां हे। ! छजीवणीया सार; ते पण लुप्त करवा भणी, ज्ञानहीना हो केवळ कियाचार सु० २४: नानी दीक्षामां साधु रहे, वर्ष वे वर्ष हो रहे वर्ष चार; आज्ञा नहीं वीतरागनी, पुन्य नास हो ! थावे आज्ञा बहार सु० २६ योग करावे नहीं अन्यने, करावतां हो ! पहेलां करे कोल (शरत); एटलां पुस्तक आदि तणा, रखावे हो ! पहेली रोकड मोल सु० २६

केटलुं लखुं मारा बापजी ! लीला हो ! जेनी अपरं पार; बुद्धि सुधारो नाथजी, मारी अरजी हो ! वारंवार सु• २७

ढाल ५ ठी-जिनागमोनी वाचना आपनी सिद्धान्तो नुं रहस्य शिष्य मंडळीने समजाववुं, परन्तु जे योगने आधाकमीदि आत्माने अहितकारक खोटी प्रवृत्तियो छे तेने तिल्लांजली आपनी.

उपधान-अधिकार.

दोइरा.

गुरु तीर्थ पासे करे, उपधान तप सार;
जैन विधि अनुसारथी, ते पामे भवपार १
धर्म अमूल्य जिनेंद्रनो वेचाय दुकाने मोछ (मूल्य)
धर्म नाम धाडां खुळे, पन्यासोनी पोछ.

(ढाल ७ मी) पूर्वनी देशी.

आंबील प्रमुख तप करे, श्रावक हो भणे गुरुनी पास;
श्राविका गुरुणी कने, हमणां हो ! जुवो पन्यास.
अपधान करावतां पेहलां, पेसा हो ! छेते ज्ञानने नाम;
पेढी जमावी ब्राह्मण परे, कोई काढी हो ! पेदासनों काम. सु० २
समवा विभवा मळे घणी, भाग्ये भाई हो ! मळे दस बार;
किया करावे पन्यासजी, महिला साथे हो ! मांडे प्रचार. सु० ६

नारीना परिचय थकी, यतिये हो ! कीघो घरवास; प्रत्यक्ष देखी केम करे, त्यागी हो ! महिला सहवास आरंम करावे नवा नवा, भोजन कारण हो ! देवे आदेश ! माल उडानी करे मोझने, गांडो मल्यो हो ! गुर्जरनो देश सु० ६ भोजन जमे वाणीया, ओघो छेई हो ! जावे पन्यास; अमुक सारुं न केम कर्युं (त्यारे बोछे) शुं खपे हो ! अने श्रावकना दास. सु० ६ नाम छेवे नीवी तणो, आहार तणुं हो ! जाणो जगभाण; बदाम तणो हलतो बने, त्रारी हो कलाकंद पीछाण **छाडु पेंडा बरफी बने, दूधपाक हो ! नहीं रहे** दूर; देथरां ने पुडला बने, जुदां जुदां शाक हो ! हांडा भरपूर तुपणी भरे भरे पातरां, साधुनी हो ! उडावे माल; भर्म नामे भूत्ते जागीया, पन्यासे हो ! बिछावी जाल. केई गृहस्थी जैनना, नहीं मळे हो ! खावाने धानय; उपधान नामे मुनिराजजी, माल उडावे हो ! मली मस्तान सु० १० अमुक बाईए दश दीया, तुं तो हा ! मोटा घरनी बेन ! सी के बसो आपशो, धीरे धीरे हो! बोले मधुरा वेण. रांडीरांडो ठगवा भणी, मला जाग्या हो ! घोळ दिने चोर; ज्ञान नामे भेळुं करे, पापोदय हो ! पडे चोरोमां मोर तृष्णा अंबर [आकारा] जेवडी, करावे हो ! माळा छीछाम ! वादे वधारे वाणीया, मेळा करे हो ! लोभीडा दाम.

सिद्ध साधक रहे वाणीया, धर्मादीया हो ! मळे दछाछ; कळियुगीया भेगा थया, केम रहे हो ! साहुनो माछ. सु० १४ ओछा जीवित कारणे, संयम खोवे हो ! अज्ञानी बाळ; जरा तो ढरो परमवथ की, माथा उपर हो ! भमे छे काळ. सु १६ विणिक भडकरो वांचीने, पन्यास हो ! कररो कोई कोध; भछामण करूं तेहने, पक्ष छोडी हो ! करो साची शोध सु० १६ साचामां समकीत वसे, मायाथी हो ! आवे मिथ्यात; केवां चित्र हुं चीतरुं, तुं जाणे हो ! मारा त्रिभुवन तात. सु० १७

ढाळ ७ मी—म्गीतार्थाचार्य मुनिमहाराज श्रावकवर्गने योग्यता पूर्वक जैन धर्मना खास तत्व ज्ञान नित्य धर्म कियानुं ज्ञान आपवुं अने बळतो तप कराववो किन्तु जो धामधूम फोगट आडम्बरमां द्वन्य खरचाववा के खावा पीवा तथा पेसाना छोमे के स्त्रीयो साथे के प्रचारनी प्रवृत्ति छे ते योग्य नथी माटे तेने दूर करवी.

दीक्षा अधिकार.

ज्ञान गर्भित वैराग्यथी, दीक्षा छेत्रे जो कोय; दीपांव जैन धर्मने, तरे ते तारण होय. १

(ढाल ८ मी)

देशी पूर्व प्रमाणे.

ठाणांग बृहत् कल्पमां, दीक्षा देवे हो जोइने योग्य; एवी आज्ञा वीतरागनी, प्रवचने हो ! वरने अयोग्य. मु० १ अधिकागुण होय आपथी, अथवा हो ! होवे सम तुल्य; उत्तराध्ययन पांत्रीसमां, जोवे हो ! मुनि जातिने कुछ. सु० आज्ञा नहीं माबापनी, नहीं हो ! निजमां वैराग्य; जेवा तेवाने मुंडतां, पुस्तक वस्त्र हो, छेइ जाय माग. सु० ६ एकनी पासेथी नीकल्यो, पुस्तक वेची हो ! करे रोकड दाम; अत्याचार सेवे तेहथी, वस्त्र पात्र हो ! की दे लीलाम. सु० ४ बीजा पासे ते जइ, दीक्षा हो ! छेतो बीजीवार; गुरुजी निर्णय करे नहीं, चेलानी हो ! लाग्यो लोम अपार. सु० ६ त्रीजीवार त्रीजा कने, एम ठगे हो ! नहीं पूछ कोय ! मातापितानां पोषण करे, पुस्तक वस्त्र हो ! दाम रोकड जोय. सु०६ बनी चुक्या केई दाखला, तो पण हो ! नहीं छोडे बलाय ! श्वासन निंदावा जनमीया, तेथी हो ! शुद्ध श्रद्धा जाय. सु० ७ आज्ञा विना दीक्षा दीये, त्रीना त्रतमां हो ! नलांनली होय ! प्रायश्चित आवे आठमुं, ठाणांग हो ! ठाणे त्रीने जोय. सु० ८ मूल्य तणा चेला करे, देवरावे हो ! ते रोकड दाम; माल खाय मस्तानीआ, अनाचार हो ! सेने ठामी ठाम. सु० ९ बरघोडा काढे विकाल (पराढीया)मां, जैन नामे हो ! करे चोरीनां कामः

-छानांमाना दीक्षा दीये, फोकट हो ! खरचावे दाम. सु**० १०** मातापिता आवी करी, वेष खुंची हो ! घर छइ जाय; अतीति रही नहीं जैननी, लोभीडा है। ! मारग निंदाय, सु० ११ संयम लई समझया नहीं, समिति गुप्ति हो ! साधुनो आचार; संयममां रमीया नहीं, ज्याकरणनो हो ! मांडे प्रचार. सु० १२ पहेलां तो मुके मोकळा, भणो भणो हो ! गणे दोष; करुप क्रिया उंची धरे, आज्ञा निना हो ! नहीं संतोष. सु० १३ न्व्याकरण भणे गृहवासमां, दीक्षा छै हो ! भणे जैनसिद्धांत; हाडे हाडे वैराग्यथी, तरे तारे हो ! करे भवना अंत. सु० १४ ज्ञाता विगेरे सूत्रमां, दीक्षा है है। ! सीले साधु आचार; अंगादिक पाछे भणे, पेहेलां रंगीये हो ! पाळे शुद्धाचार. सु० एक चक्र चाले नहीं, किया साथे हो ! होवे सम्यग् ज्ञान; प्रथम क्रिया व्यवहारमां, निश्चयमां हो ! होये ज्ञान प्रधान. सु० १६ कांतो दुः ली दरिद्रीओ, पेट मरवा हो ! छेवे संयम भार; कांतो प्राववानी लालचे, मोहगर्मी हा ! देखादेखी प्रचार. सु० १७ गुरु पण तेवा मळ्या, वधारवा हो ! पोतानो परिवार; जीवतां भूत बनावी दे, भगावी हो ! छेइ जावे छार. सु० १८ दीक्षाना केस कोरट चढे, जुओ हो ! जैनोनी रीत; गादी बेठा जुओ वीरनी, केम रहे हो ! सूरिनी प्रतीत. सु० १९ गृहस्थीपणे एक घर तणी, मुशकेले हो। चलावे कारभार; साधु थया घर हजारना, छांबां छेखां हो ! नहीं आवे पार. सु० २०

जेम जेम पोप गुरु वधे, तेम तेम हो ! नबळी पडे समाज; गणी गाडरीयो द्वां करे ? सिंह हो ! करे एकलो राज, सु० २१ वकील बेरीस्टर महेनत करी, मुश्केलथी हो ! परीक्षा पास; अधिकार मळे कोरट तणी, दीर्घ दृष्टि हो ! विचारी खास. सु० २२: राजा गादीपर बेसतो, केटली हो ! जोइए गुंजास ? पूजनीक बने राजा तणा, जोइए हो ! केटछो प्रकाश ! सु० २३ पंदर (१५) प्रकृति क्षय हुए, अथवा हो ! होवे उपशांत; चडते वैराग दीक्षा छीए, करे हो ! मन इंद्रिय दांत (दमन)सु०२४ एकांत पक्ष नहीं खेंचवी, रहे ही शुद्ध छोक व्यवहार; ते जैन धर्म दीपावशे, तरे तारे हो ! जाये मोक्ष मोझार. मु० २५ मोटा घरनी स्त्री हुए, दीक्षा छेवे हो ! साधवी पास; पांच दश् हजारना, जमे करावे हो ! नामे ज्ञानने खास. सु० २६ ्दीक्षा लेइ पछी साधवी, मालिकी हो ! राखे पोते आप; हेणुं देवुं करावती, केम छुटे हो ! जो पाप संताप. साधु करतां साधवी तणी, लीला हो ! प्रभु अपरंपारः उद्धार करो आ भरतनो, थारी पलटणना हो ! आ छे समाचार.

ढाळ ८ मी-अयोग्यने दीक्षा न आपनी अने योग्यने पणः दीक्षा छेनानाळानी पाछळ सगा संनन्धीनी आज्ञा होय तोज आपनी

आहार अधिकार-

सिमिति गुप्ति चित्त घरे, छे निर्दोषित आहार; ते गुरुतारे जगतने, बंदुं वारंवार. फासु निर्वद्य जे मळे, तथी करे संतोष; नहीं मळतां तप आचरे, पण नहीं सेवे दोष.

(ढाल ९ मी)

देशी पूर्व प्रमाणे.

आहार पाणी छेवे सूझतो, श्रावक हो ! देवे दातार;
बंने जाय मोक्षमां, द्श्ववैकाछिक हो ! पांचमे अधिकार. सु॰ १
छट्टे उद्देशे शतक आठमां, फासु हो ! देवे मुनिने आहार;
एकांत होवे निर्जरा, भगवती हो ! नहीं पाप छगार. सु० २
फासुक आहारज मोगवे, भावे भावना हो ! धन्य तप करे तेह;
आप तरे पर तारता, मोक्ष जावे हो ! जिन माले एह. सु० ३
आधाकमीं आहार मोगवे, आयु छोडी हो ! बांधे कम सात;
रुछे अनंत संसारमां पंचम अंगे हो ! माली आ वात. सु० ४
वंछी नहीं छ कायने, वळी भागी हो ! ते जिनवर आण !
समवायांगे सबळो कह्यो पिंडनिर्युक्ति हो ! गुणदोष पीछाण.

प्तीकर्म जो भोगवे, सुयगढांगे हो! सेवे वे पक्ष; द्रव्य साधु भावे गृहस्थी, नहीं हो ! जेने आतम छक्ष. कृतगडे कल्पे नहीं, भूले लान्यो हो ! साधुने काज; अणजाणे आवे तो परठवुं, नहीं खावे हो ! मोटा मुनिराज, सु० ७ सामे लाज्यो भागवे, तेड्या जाये हो ! जेम चारण भाट; मुनि मत्तंगन वेगळा, नहीं लागे हो ! सोनाने काट. भक्तिवान श्रावक होवे, नहीं जाणे हो ! मुनिनो आचार; दोषसहित देतो बांघे, अल्प आयु हो ! ठाणांग मोझार सु० ९ त्रीने स्थाने एम कह्यो, पथ्यकारी हो ! देवे फासुक आहार: द्याम दीर्घ आयु बांधतो, पंदर भवे हो ! पामे भवपार. दोषित आहार देतां थकां, आठ जणा हो ! भेळा बांघे पाप; सहाय देवे शीतल करे, केण काढ़े हो! ए पापनुं माप सु० ११ ध्यान ध्यावे रातना, अमुक घेरे हो ! मळे अमुकं माछ; पडिलेहणा पूरी कोण करे ! लै तृपणी हो ! थाँवे उजपाल, सु॰ १२ -स्होक गणे गौतम तणो, वांछित हो ! भरी छावुं मारु ! शुद्धाशुद्ध कोण गणे ? कोण गणे हो ! ने काळ विकाळ. सुठ १६ गृहस्थी सुता होय खाटले, धनकविनय हो ! देवे धर्मलाम; काढे गौतम पातरं, पूर्ण पात्र हो ! तृष्णा जाणी नाम. सु० १३ दश्चेकालिक छड्डे कहा, एक वलत हैं। मोजननं मानः उत्तराध्ययन छत्रीसमां, सुणो हो ! समाचारीनुं ज्ञान. सु० १६ पहेले पहें।रे स्वाध्याय करे, बीजे पहेरि हो ! विचारे ध्यान:

त्रीजे पहोरे भीक्षा करे, चोथे पहोरे हो ! मलो स्वाध्याय ज्ञान. स० १६

पहेले पहोरे चा दूधनी, बीने पहोरे हो ! उडावे माल; त्रीजो पहोर निंद्रा तणो, चोथे पहोरे हो! वळी चोखाने दाल. सु०१७ दश्चैकालिक पांचमेरे, मुनि नाणे हो! क्षेत्रने काळ; काले काले समाचारे, करपमां हो ! भिक्षा एकज काळ. (वखत)सु०१८ दुध दहीं घृत वापरे, तप करतां हो ! जो धुणे शीष; **उत्तराध्ययन** सत्तरमां, पाप श्रमण हो ! कह्या जगदीश सु० १६ मोटुं कारण मुनिने होवे रे, संयम जाये हो! के जावे प्राण; दोष सहित देतां थकारे, अल्प पाप हो ! बहु निर्नरा जाण सु०२० हृष्ट पुष्ट साधु होवे रे, सिंह जेम हो ! वांचे व्याख्यान, विहार करे दश कोसनो, दोषित हो ! केम खाये जाण. सु० २१ दोषित आहार टेतां थकां, आणा मांगी हो ! ने छे मुनिरान; दातार मेगो डुबशेरे, जेणे दीधा हो ! चौरने सान (सहाय) मु॰ २२ विना भण्या जावे गोचरी रे, भण्या हो ! विराजे पाट; बुद्धाञ्चद्ध जाणे नहीं, आयु साथे हे। ! बांधे कर्म आठ. सु० २३ अतिदायवंत जावे गोचरी, आचारांगे हो ! नव बोलनो जाण; उत्साह वधे प्रहस्थी तना, आठ कर्म हो ! तोडे चतुर सुजाण सु॰ २४ दोठाणीओ बेसी रहे, काम करावे हो ! दासीओने पास; रवी दशा साध्वी तणी रे, शुं लखुं हो ! नाणो स्वामी खास सु० २९

इंद्रिय स्वादने छोडवा, घर छोडी हो ! लीघो संयम भार; स्वाद करे जुदा जुदा, भगवती हो ! कह्यो दोष अपार. सु० २६ जीमने स्वाद कारणे, मोटी राखे हो ! पातरांनी जोड; जुदा जुदा गृहस्थो परे, पुद्रलानंदी हो ! नहीं सके छोड. सु० २७ पलंग बीछाना छोडीया, छोडी हो ! सुल शब्या नार: मोटा ओशीका बीछाववा, वरज्या हो ! आवश्यक मोझार सु० २८ विशेष योगना आहारनी, आगळ छखी हो! आ मेझर मांय; आश्चर्य पामे नहीं केवळी, रही हो ! नहीं कमती कांय. सु॰ २९ पाणी जेसी वाणी रहे, अन्न जेवुं हो ! नित्य रहे मन; निभाववा संयम यातरा, फासु भोजन हो ! पोषण करे तन सु० ३० मुकोमलपणुं छोडी दो, दश्चवैकालिक हो ! श्री वीरनुं ज्ञान: मोक्ष किल्लो कायम करो, उठो जागो हो ! थाओ सावधान स० ३१ ने श्रद्धा घर छोडतां, राखो हो ! जीवनपर्येतः यथाशक्ति खप करो, तेथी हो ! थाय संसारनो अंत. सु० ३२

दाळ ९ मी—श्रावकवर्गने जोइये के मुनिने देशिताहार न आपनो अने मुनिने पण परिसह सहन करवा परन्तु देशित आहार नहीं छेनो. निर्देशित आहार छेने ते पण छ कारणमांथी कोई कारण होय तो.

रात्रि भोजन अधिकार-

- AKE

अञ्चन आदि संचे नहीं, अजाणे रहे कोय; तल मात्र नहीं भोगवे, परठे स्थंडील जोय.

ढाल १० मी

(देशी पहेलानी.)

रात्रिमोजन वरजीयो, भांगे चार हो! निश्चीथ मोझार; दश्चवैकाछिक देखीछो, बृहत्करुप हों! नहीं साधु आचार सु० १ धातु खाखने औषि, चुरण हो! मुख साफ कराय; गोळीओनी गणतरी नहीं, पारसछ हो! केई वी. पी. मां आय.सु० २ श्रीष्मरुतु गुछाबना, सीसा हो! छावी दे वे चार; तेछ रहे मर्दन कारणे, मर्दनी या हो! नित्य रहे तैयार. सु० ३ पहेछा पहोरमां वहोरींड, औषध पाणी हो! अथवा कोइ आहार; चोथे पहोरे कछपे नहीं, रात्रि मोजन हो! कह्यो अष्टाचार. सु० ३ राते दबाइ राखतां, अष्ट कह्या हो! छठे अध्ययन; दंड कह्यो निश्चीथमां अनाचारी हो! त्रीजे अध्ययन. सु० ५ बीजी जगे मळे नहीं, मोटुं कारण हो! मुनिवरने होय; अणाहारी वस्तु रातनी, अपवादे हो! राखे अवसर जोय. सु० ६ अनिष्ट वस्तु अलखामणी, खातां हो! अरुची थाय; आगम अक्षर देखीछो, ते वस्तु हो! अणाहारी कहेवाय. सु० ७

बांध्या मळे हा पाटला, गांधीए हो ! जाणे मांडी दुकान; दुं लखुं मारा साहेबा, निर नायक हो ! मच्या मस्तान. सु० ८ मायाचारी केई हुए, नहीं राखे हो ! जे पोते पास; गृहस्थी पासे रखावता, मायाथी हो ! पामे समकीत नादा. सु० ९ ढाळ १० मी—मुनिने रात्रि बाशी कशी पण वस्तु न राखवी जोइए. जावाआवबाना थोडाक प्रमादने लीधे औषधादि वस्तु राखी मेाटा नुकशानमां उतरवुं योग्य नथी.

वस्र पात्र अधिकार-

दुहा

नम्न मुद्रा ने रहे, जिन कल्पी मुनिराय; स्वल्प अल्प मूल्यना, स्थिविर कल्पी कहेवाय. १ जीर्ण गच्छाचारमां, मानोपेत सफेत (श्वेत) दश्चवैकालिक एम कह्यो, लज्जा राखण हेत. २

ढाल ११ मी.

(देशी पूर्वनी)

दूषण टाळे आहारना, तेवा हो ! वस्त्रना जाण; आचारांगे कह्या पांचमे, विस्तारे हो ! निशीथ पीछाण. सु० १ चृहत् करुप दीक्षा समे, पूर्ण हो ! वस्त्र छे तीन;

शीत परिसह सहन करे, संजममां हो ! मुनि रहे लीन. सु० २ बहु मूल्य वस्त्र कांबळी, पोटला हो ! बांघी मुके भंडार; जोडीओ राखे पात्रातणी, परिग्रहधारी हो ! **दश्चवैका** छिक मोझार सु ० ३ मयी कपाटने पेटीओ, पडिलेहण हो ! कोण करे देख; पछी मळरो के नहीं मळे, मूर्छा घणी हो ! पन्नवणाना लेख सु० ४ गृहस्थीने परिप्रह तणी, होवे हा ! स्वरूप मयीद; क्स्न पात्र पुस्तक घणा, लावो लावो हो ! करी रह्या मुनिराज सु० ५ नाम छेवे पुस्तक तणो, ज्ञान नामे हो भरे मंडार; पुठीयां चंदरवा पाटी ठवणी, तृष्णा हो ! लागी अपरंपार सु० ६ सो हनारथी धाने नहीं धाने नहीं, हो ! पांच पचीम: एक ने चार लालना पुस्तक हो! मरीया भंडार सु० ७ अविज रस्ते चालतां. यतियो हो ! थया फजीत: सत्यविजय बधुं छोडीयुं, तो पण हो ! हवे आ चाली रीत. सु० ८ पोते आप वांचे नहीं, नहीं देवे हो ! वांचणकाज: कर्म जोगे चोरी होवे, रोवे बेठा हो ! जुवा काळजे दाझ. सु० ९ अधिकी उपाधि राखतां, प्रायश्चित हो ! निशीथ मोझार: चौद उपकरण भाखीया, सूत्र हो ! प्रश्नव्याकरण सार. सु० १० अधिकी उपाधि राखतां, मज़ुरो हो ! जोइए बे चार; **पारस**छ ने वी. पी. तणा क्यां छगी हो ! छखुं समाचार. सु० ११ हुकम करे गृहस्थी उपरे, एने हो ! देनो नीमाय (नमाडी); आटको रुपिया दो रोकडा दंड चोमासी हो! कह्यो निश्चीथ माय,स०१२

कपडां घोवे रंगे नहीं, आचारांगे हो ! पांचमे अध्ययन; टीकाकार जिन कल्पीने, स्थिविरकल्पी हो! कारणमां छीन. सु • १३ जीव उत्पत्ति कारणे, अथवा हो ? असूची जाण; फासुक पाणीथी घोवतां, अपवादे हो ! रहे जिन आण. सु० १४ कारणथी पीळां कयीं, कारण मटयुं हो ! केम राखे एह ? द्याठ बिलाडी संबंधथी, गाडरीयां हो ! करे वें वें तेह. सु० १५ साबू छेवे। करुपे नहीं, नहीं करुपे हो ! सोडा साजीखारे; शासनथी श्रद्धा ऊतरे, दुर्छभबोधी हो ! अनंत संसार. जीव अनंता निगोदमां, कुण राखे हो ! तेनी दरकार; भागळ साधु टाळता, संघट्टे हो ! नहीं छेता आहार. वसी वसी साबू दीये, कांई जाणे हो ! जानमां जाये साथ; बिषय वासना उपने बहा महा हो ! अनुयोगमां वात. सु. १८ उपदेश देवे गृहस्थी बनी, घृत ज़ेम हो ! वापरनो नीर ! पोते घोबी घाट मांडता, केम पामे हो ! भवजल तीर. सु. १९ गृहस्थनुं मोटुं घर होये, ता साबु हा ! लावे सेर पांच ! मोटा साधु चोमासुं करे ! साबु हो ! लावे मण पांच. राखे राखोडी मांयने, निल्ला फुलल हो ! उपने निगोद; गृहस्थीथी आगळ वध्या, पाटे बेठा हो ! करे प्रमोद. सु. २१ कदाचित कारण पडे, अपवादे हो ! सेवे साजीखार; संचय करी नित्य वापरे, जावे हो ! जन्मारो हार. मु. २२ दुंदक वापरे मातरुं, संवेगी हो ! पड्या साबु लार (पछवाडे) आपसमां निंदा करे ! केनो केवो हो ! शुद्धाचार. सु. २३

विहार करे मुनिराजनी, साथे हो ! घणां पातरां छोट; आन्या वीरना पोठीया, नहीं उंचके हो ! गृहस्थीने देवे पोठ. सु.२४ दिगंबरथी चर्चा करे, जीर्ण वस्त्र हो ! ते नम्न समान ! स्वल्प वस्त्र राखरूां, ते बधुं हो ! पोथीनुं ज्ञान. स्रु. २५ शीणा कपडां मलमल तणां, रंग्या हो ! केसरीये रंग; ओढे तरुणी साधवी, जेनां दीसे हो ! उर्घाडां अंग. .सु. २६ मलाघरनी नारी होवे, राखे हो ! लोकोनी लाज मोक्ष कारण माथुं मुंडीयुं, सुख शीलीयां हो ! बगाडे काज. सु. २७ ओघनिर्युक्तिमां कहुं, वस्त्र पात्रनुं हीं पूरुं प्रमाण; संघ परीक्षा जो लेवे, मला मुंडा हो ! करे पीछाण. सु. २८ सोमां पांच टका नहीं, मळे हो ! जिनाज्ञा धार; आडंबरी मेळा मल्या, आणाखंडे हो ! केम पामे पार. सु. २९ आणा पाळवी दूर रही, थोडा हो ! जाणे आगम वात; उत्सूत्र बोले अज्ञानथी, तेथी हो ! लागे मिथ्यात्व. सु. ३० नेवी वात छे वस्त्रनी तेवी हो ! पातरानी जाण; केटलुं लखुं बापजी ! नहीं छानुं हो ! तमने केवळ ज्ञान. परमाणुं देवाडे पात्रां तणुं, मूल्य हो ! करावे आप: दंडा उतरावे तरपणी, ज्ञानीये हो ! कह्यो वज्र पाप, सु. ३२ जीरण वस्त्र पातरां नाखी हो ! नवां छेवे मोल: वज्र किया पहेलां अंगमां दंड कह्यो हो! निश्चीथ देखो बोल. मु. ३३ एक जोडीने वापरे बीजी हो ! राखे मंडार: तीओं जोडी देवे रंगवा, पेला पेली हो ! कोण करे विचार. सु. ३४ हवे हो हाथ थाकी गयो, नहीं हो ! कोई छीछानो पार; मुनि मंडळ उद्धारजो, खोटो खरो हो ! तमारो परिवार. सु. ३६

ढाल ११ मी—मुनिने वस्त्र तथा पात्र दोषित न छेवा अने निदोषित पण प्रमाणोपेत राखवा अने राखे ते उपर पण ममत्वभाव न राखवो अने संचय पण न करवो, केवल संयमयात्रा निभावशा माटेज राखवा.

सावद्य निर्वद्य अधिकार

दोहरा.

सावद्य ये।ग तजी करी, लीघो संयमभार; जाव जीव नहीं आचरे, वीर वचन अणगार. सावद्य भाषा बोले नहीं, जेहथी लागे पाप; आदेश उपदेश जाण्या विना, करवो नहिं आलाप.

ढाळ १२ मी

निर्वद्यक्रिया आचरे, करे हो ! निर्वद्य उपदेश;
मुनि गणमांहे शोभता, नहीं छागे हो ! जेने पापनो छेश सु० १
गृहस्थ योग सावद्य कह्या, नहीं करुपे हो ! आवो जाओ उठ;
अहीं बेसो अमुको करो, सावद्य बोरुयो हो ! सत्यने कह्यो जुठ.

सुठ २

चीठी तार देई करी, बोलावे हो ! गृहस्थ राखे संगः पांचिकया आगम कही, होवे हो ! संयमना मंग बंदोबस्त पगारनो, खाणुं पीणुं हो ! करे मुनि सार; रोकडीयो रहे वाणीयो, देखादेखी हो ! बध्यो प्रचार रचना करावे पहाडनी, उभा हो ! रहे पोते आप; अमुको छंबो पहोळो करो अज्ञानी हो ! रहे सेवे बहु पाप. सु० ९ बंधावे उपासरा करावे हो ! जीणींद्धारः गृहस्थ जेम उभा रहे, परभवनो हो ! नहीं डर छगार पौषधशाळा उपासरा, निशंक हो ! दीर्थ आदेश; अहीं चोकी आछिउं करें। अहीं वांचरो हो! व्याख्यान हमेरा मु०७ अमुकी बारी मेडो करो, भंडारीयुं हो ! करो पुस्तक काज; ओछा जीवन कारणे, आज्ञा मुकी हो ! नहीं आवे लाज अणु मात्र पृथ्वीकायमां, जळिबंदु ए हो ! कह्या जीव असरूय; त्रस थावर हणावतां, लज्जा छोडी हो ! हुवा निःशंक **छीपे साधु कारणे; छवावे हो ! छ।परां केइ छाण**; आचारांगमां वरजीया, दंड कह्यो हो ! निश्तीय पिछाण. सु० १० मारा गच्छनो उपासरो, नहीं उतरे हो ! बीजो एनी मांह: घर छोडी मठ बांधीया, सूयगडांगे हा ! कह्या गृहस्थ तेह. सु० ११

उपर लगावे पाटीजं, जेमां हो ! पोतानुं नाम; एक देखी बीजो करे, एम बगडयुं हो ! इण भरतनुं काम सु० १२ स्वाध्याय ध्यान धर्यु खुंटीए, उभा भणावे हो ! पूजाना पाठ; सावध निर्विध नहीं गणे, आणा छोपी हो ! करी मनना ठाठ.

ु सु० १३

चैत्यवासी पेहलां कोइ, नहीं भणाइ हो ! कोई पूजा साघ; आगम पाठ दिसे नहीं, पासत्था ए हो ! मुक्की मर्याद. सु० १४ साधु गावे रागथी, जेम जेम वागे हो ! मृदंग ताल; द्रव्य स्तव जेणे सेवीयो, द्रव्यर्शींगी हो ! भावे कह्या बास्ट सु० १६ अमुको करे। अमुको करो, लावो मुको है। ! वळी बोले एम; चैत्यवासी बनी रह्या, स्वाहा ! हो ! साधु बोले केम. मुख आगळ राखी मुहपात्ते, यत्ना पूर्वक हो ! बोले अणगार; उघाडे मोढे बोलतां, सावद्य लागे हो ! भगवती मोझार. सु० १७ मोढुं बांघी ढुंढके, कुल्लिंगी हो ! जाणे आयाढंक; कमरमां राखे पीछीया, उधांडे मोढे हो ! बोछे निशंक. प्रतिष्ठा अविधि करे, अंजन शलाका हो ! करे आरंभ घोर; कल्पित ग्रंथ बनावीने, साहु थोडा हो ! मळ्या बहु चोर सु० १९ छबींओं चीतरांवे आपनी, फोटा पडावे हो ! देवे आदेश; लूंटे प्राण छकायना, गांडा गृहस्थी हो ! नहीं समजे लेश. सु० २० आगळ कागळ मोकले, अमुक दिने हो ! अमुक घडीवार; अमुक रस्ते आवशुं, भेगो करजो हो ! वरघोडो तैयार. सु० २१ कदाचित प्रमाद्थी, कारण पामी हो ! नहीं आवे छोक:

गाम बहार थे नीकळे (अथवा) बहार उतरे हो ! करे घणो शोक. सु० २२

गच्छ श्रावक बोलावीने, कोप करी हो ! बोले ऋषिराय; गच्छनुं सारूं लागे नहीं, महदां जेम हो ! नहीं आवे मुनिराय. सु० २३

शासननी उन्नति हुए, उल्रटो हो ! देवे उपदेश; कोघ करे दंडे रमे (लडे), वर घोडामां हो! धुळ पडे विशेष सु०२४ देशकाळ देखे नहीं, आडंबर हो ! करे देखादेख; गुणहीना गर्ने चडे, मोटा मोटा हो ! लखावे लेख. सु० २५ चरित्र छपावे आपणां, जेमां हो ! नहीं (लखे) अवगुण एक; सोमो टको साचो होवे, पोलमां पोल हो ! छपे अनेक. सु० २६ कदाचित आ भारतमां, आडंबरी हो ! घुतीने खाय; आपथी वात छानी नहीं, परमाधामी हो ! देशे समजाय (जावी)सु. २७ उत्तराध्ययन पांत्रीरामां, नहीं वांछे हे। पूजा सत्कारः आदेश देवे कइ विधि, आचारांग हो ! नहीं साधु आचार, सु०२८ दीवा रखावे उपाशरे, छेवे हा गृहस्थीनुं नाम: उज्जेइमां फरता फरे, मायाचारी हो ! तुं जाणे स्वाम. सु० २९ वडीयाळ राखे टाइमनी, चावी देवे हो ! ते पोते आप: परिग्रहने आरंभ करे, नहीं डरे हो ! कोण गणे पाप. सु० ३० चप्पू राखे बहु मुला, सुई कातर हो ! केइ ओजार; कर्म विटंबणा हां लख़ं, नोटो गिन्नीए हो ! सेवे अत्याचार सु० ३ १ जेवा साधु तेवी साधवी, वदे हो ! वळी विश्वास दोय; शामाटे घर छोडी उं, आश्चर्य होवे हो ! ते बधु जोय. सु० ३२ साधु समाजनी आ दशा, साध्वीओनी हो शुं छखुं नाथ; गुप्त गोटाळा छे घणा, बहुछो हो ! अज्ञानी साथ. सु० ३३ खोटी आचरणा देखीने, केइ जीव हो ! दुर्छभ बोधि थाय; तेनुं कारण साधु साधवी, तेथी हो ! समिकत छोपाय. सु० ३४ श्रावकनी साधु उपरे श्रद्धा, भिक्त हो रहे तो धर्म स्नेह; हाछनी 'आचरणा' देखीने, केवी श्रद्धा हो ! तुं जाणे तेह. सु०३९ बात छानी नहीं आपथी, माहं छखवुं हो ! गांडानुं गीत; उद्धार करो मारा बापजी, बनी रहे हो पुराणी प्रीत. सु० ३६

ढाळ १२ मी — मुनि हमेशां निर्वेद्य भाषा बोले अने उपदेश तथा प्रवृत्ति पण निर्वेद्य राखे, सावद्य बोलवाथी के उपदेश आप-वाथी वीतरागनी आज्ञानो भंग थाय ले माटे आज्ञानो ख्याल हमेशां राखवो तथा पोताना नवदीक्षितोने पण तेवाज आचरणमां प्रेरणा करवी.

विहार अधिकार.



दुहा.

प्रति बंध मुनिने नहीं, करे नव कल्पी विहार; विचरे देशो देशमां, तरे ते तारण हार १

ढाळ १३ मी.

देशी पूर्वनी.

शीत उष्ण एक मासनो, चोमासे, हो ! रहे मास चार; आचारांग बीना क्षेत्रमां, बमणुं तमणुं हो ! रहे काळ बहार. सु० १ भोळा प्रहस्थ समने नहीं, अधिकी विनती हो ! करे करजोड; बने आज्ञा बहार ते, रहे राखे हो ! जिन आज्ञा तोड. सु० २ आचारांगमां वरजीयुं, बृहत् कल्प हो ! नहीं कल्पे एम; दोष कह्यो निज्ञीथमां, जनरदस्ती हो ! कल्प उछंवे केम. सु० 🤏 नाव बेसी नदी उतरे, नहीं रहे हो ! मुनि एकज ठाम; अधिक रहे ममता वधे, मारो हो ! उपाश्रय गाम. सु॰ ४ मारा श्रावक मारी श्राविका, मारुं हो ! पाठशाळे नाम: मारो गच्छ किया करो, एम बगड्युं हो ! साधुनुं काम. मु० ५ पीयरमां नारी रहे, जमाइ हो ! करे सासरे वास: एक स्थाने साधु रहे, होवे हो ! बहु मान नारा. सु॰ ६ भारंडपक्षी उपमा, विचरे हो मुनि देश विदेश; पळे चारित्र निर्मेळुं, श्रावकने हो ! नवो मळे उपदेश. सु० ७ अंगोपांग हीणां थतां अथवा हो ! रोम होवे तन; स्थिविर भूमि पामीया, एक स्थाने हो ! करे स्थिरमन. मु॰ ८ कारण रहावो उपधानने, अठाईओच्छवे हो ! पूजामां रंग. योग करवं शिष्यने, बीजे स्थाने हो ! नहीं पंडित संग.

धर्म आज्ञा वीतरागनी, आज्ञा छोपी हो करे गणी धर्म; आचारांग पहेछा अंगमां, नहीं जाण्यो हो! तेणे धर्मनो मर्म. सु० १० मोटी ममता बाधता, स्त्रीओ साथे हो! करे अधिक स्नेह; संचय परिचय राखे घणो, संयम खोवे हो! नहीं तेमां संदेह.

सु , ११

रस वृद्धि सुलशीलीआ, मठवासी हो ! केम छोडे स्थान; रंडापो मोटा घरतणो शुं छखुं हो ! जाणो भगवान सु० १२ ज्ञान भंडार नामथी, माहे राखे हो ! पात्रांनी जोड; गृहस्थीथी आगळ चडे, ममता लागी हो ! नहीं शके छोड सु० १३ अष्ट कह्या आचारथी द्श्ववैकालिक हो ! छठे अध्ययन; समवायांग सबळो कह्यो दंड ते तो हो न देखे निशीथने नयन सु० १४

चोमासानी विनति, तुर्त हो ! बोले स्वामी एम;
आगेवान कहो कोण छे, बंदोबस्त हो ! खरचनो केम. सु० १५
अमुक गामना श्रावको, कही गया हो ! बे चार हनार;
कांईक अधिकुं तमे करो, पीली पलटणना हो ! आवा समाचार.

स० १६

पदनी देवा पन्यासनी, कराववा हो साधुने योग; लहीया पंडित चार छे, वे त्रण हो ! मज़ुरीया लोक. सु० १७ कोईक पुस्तक मंगाववा लखाववा हो ! सूत्र वे चार; ईष्टम पीष्टम आशरो, खरच हो ! थरो आठ दश हजार. सु० १८

चोमासं करावे भावथी, बीजीवार हो ! नहीं छेवे नाम: श्रद्धा उतारे शासन थकी, थोडा मळे हो! चोमासाना गाम. सु॰ १९ चोमासानी पेदाराने, गृहस्थी पासे हो ! राखे ज्ञानने नाम अथवा राखे बेंकमां, न्यांने हो ! फरे कई दाम सु० 🔏 🥷 महिला मंडण करे वाणीआ, बेंको हो ! देवालुं दे फुंक; आर्त ध्यान मटे नहीं, छानो रोवे हो ! पांडे घणी पोक. सु० २१ छ मास शोक जाये नहीं, आयु बांधे हो ! जे तेणे काळ; सीधा जाये नारकी, परमा धामी हो ! करे सार संभाळ सु० २२ यति परिग्रह धारी थया, त्यागी जाणे हो ! संवेगीनो साथ: लाय लागी जळमांयने कोण जोवे हो ! मारा कृपानाथ. सु० २३ सो पचासने पोणोसो, मळे जीहां हो ! चाहने दृध; देशो देश विचरे तहीं, केम रहे हो ! तेनो संयम शुद्ध. गामडामां करे विनती, उपकार होरो हो विराजो नाथ: जवं पालीताणे जातरा भाई अहीं हो ! आवे अमारे शुं हाथ. मु० २५

गायन मंडळी बोलावरां ओच्छव करहां हो ! जागीशुं रात; खानपान करहां जोईतुं दूघ चाह हो ! मळशे प्रभात सु० २६ केइ गाम एवां पडयां नहीं देख्या हो ! जीवनमां साध; आशातना होवे देरांतणी, केम करे हो ! साधु प्रमाद सु० २७ नरकना दु:ख सांभळी, केवां हो ! कंपे रोम प्रदेश; एक देश आदर नहीं, कमर बांधी हो ! विचरे देश विदेश सु० २८

समाचार तो छे घणा, लखतां हो ! प्रभु थाके हाथ;
जीह्वा थाके बोलता, थोडुं लख्युं हो घणुं जाणो नाथ. सु॰ २९
ढाळ १३ मी-मुनिने अप्रतिबन्ध देशो देशमां विहार करी
मन्यात्माओनो उद्धार करवो परंतु एक देशमां के वारंवार एक
नगरमां जावुं अने ममत्व भाव वधारवो ते चारित्रने गत तुल्य
थई पडे छे माटे द्रत्ये अने भावे लघुभूत विहार करवो.

ज्ञानाभ्यास अधिकार.

दुहा,

वीतराग गुरु जगतना, जगत छो तस पाय; आचारज उपाध्यायजी, जेवा होय मुनिराय. जैन सिवाय गुरु जगतना, मिथ्या पाखंड प्रवीण; अति प्रसंग करतां थकां, समिकत होय मछीन.

ढाळ १४ मी.

देशी पूर्वनी.

विनय मूल धर्म कह्यो, ज्ञाता हो ! पांचमे अध्ययन;
गुरुगमधी भणता छहे, आगमनुं हो ! जे सम्यग् ज्ञान.
स्थानांग ठाणे पांचमे, पांच ठाणे हो ! वांचे सिद्धांत;
आणा आराधे ते मुनि, अनुक्रमे हो ! करे भवनो अंत.

सु० १

सु० ५

योग्यने न दे वाचना, अयोग्यने हो ! देवे सूत्र ज्ञान; गुरुजी मागी होवे दंडना, जुओ हो ! निश्लीय दे ध्यान सु० ३ साध्वीओ भणे ब्राह्मण कने, क्यां रही हो ! जैनशासन रीत; बृहतुक्तरप चिलमीली कहीं, अन्यतीर्थि हो केवी प्रतीत. गणी उपाध्याय पन्यासजी, बेठा हो ! कचेरी मांड: अन्यतीर्थी पासे भणे, निशीय हो ! कह्या चौमासी दंड. पोते प्रमादी थै रह्या, केम करे हो ! शिष्यनी सार: शिष्य अविनीत बनी गया, ब्राह्मण पासे हो ! नहीं विनय विचार. सु० ६ ब्राह्मण पासे भणतां थकां, लघुता हो ! शासननी थाय; द्रव्य खरचाये ज्ञाननुं, गुरुभक्ति हो ! दीघी उठाय. एकथी बीजा गच्छमां, ज्ञान कारण हो ! जावे मुनिराय; बृहत्करूप व्यवहारमां, अन्य तीर्थी हो ! गुरु नहीं कराय. सु॰ ८ देशकाळ देखीने, अपवादे हो ! करेलुं काम; ते हमेशां करवुं नहीं, पंडित राखी हो ! व्यर्थ करे नाम. गरुगमथी भणतां थकां, जाणे हो ! आगमनो रहस्य; गण घणां लखं केटला, शासन शोभा हो ! वधे विशेष. एक साधु भण्यो होये, भणावे हो ! ते पांच पचीस; क्वीस भणावे पांचशो, पांचसो हो ! होवे जग ईश. सु० ११ पण पुरुषार्थ कोण करे, पैसा देवा हो ! श्रावक मजबूत;

पटेकाई पड्या करे, एम बगड्यां हा ! साधुना सूत.

सु० १२

जैन शैली जाणे नहीं, नहीं जाणे हो ! द्रव्यक्षेत्र काळ; बीजाने केम तारशे, पोते हो ! बनी बेठा बाल. सु० १३ किया करे योगनी, पदवी हो ! मळी जाये राज; पछी आगम कोण भणे, अज्ञाने हो ! एम रही समाज. सु० १६ मोटा मोटा पन्यासजी, वहाा हो ! भगवती योग; अर्थ नहीं जाणे आवश्यके, थावे हो ! केम पदवी योग्य. सु० १६ पाना लीघा हाथमां, करावे हो ! मोटा उपधान; आगे सुणजो नाथजी, लखुं हो ! साधुनां व्याख्यान. सु० १६

ढाळ १४ मी-—मुनिए आपणा शिष्यने विनय भक्तिमां प्रद्वात्ति कराववी जैनागमनो सारी पेठे ज्ञानाम्यास कराववो परन्तु पोते प्रमादी थई अन्यतीर्थी पासे भणावी स्वच्छंदी नहि बनाववो.

व्याख्यान अधिकार.

दुहा.

गीतार्थ ने मुनिवरा, आगममां प्रवीण; स्वाध्यायमां नित्य रमे, जिम जळ मांहे मीन. परषदा आवे पासमां, देवे मधुर उपदेश; घर घरमां फरवुं नहीं, जैन सिद्धांतनुं रहस्य.

(ढाल १५ मी.)

देशी पूर्वनी.

नय निक्षेप प्रमाणथी, स्याद्वाद हो ! जाणे सप्त भंग; उत्सर्ग अपवादने ओळखे, चित्ते हो ! वैराग्यनो रंग. सु० १ चचन अपेक्षा झाता हुए, दश बोछ हो! सोळ बोछनो जाण; उप्तातिकी बुद्धि होये, पाटे बेसी हो ! वांचे व्याख्यान. सु० २ गुरुकुळ वासो सेवे नहीं, नहीं छीधुं हो ! गुरुगमथी ज्ञान; एकान्त विद्या ब्राह्मणी, वध्यो हो ! बहुलो अज्ञान. सु० ३ किया प्रतिक्रमणुं शुद्ध नहीं, नहीं हो ! नव तत्वनो जाण; स्याद्वाद नहीं ओळखे, एवा गुरु हो ! केम वांचे व्याख्यान. सु० ४ चे चार चरित्रने, करुप वांचे हो ! ब्राह्मणनी पास; गुरुनी परवा कोण करे, सुंठ गांठीये हो ! बने गांधी खास. सु० ६ निश्चीय आचारांग मण्या विना, नहीं करुपे ही! वीचरे आगेवान; इमणां पदवीधरनी वारता, जाणे हो ! महारो भगवान. सु० ६ मोटा मोटा पदवीघरा, तेना हो ! सुणीए व्याख्यान; उपदेश उजमणा तणा, अमुको अमुको हो ! साधुने दान. सु० ७ पुस्तक छखावो साधुना; उपकरण हो ! देजो अनेक; ज्ञानमंडारमां आपा रुपिया, लावो लावो हो ! करे विशेष. सु० ८ न्तप अठाइ पारणे, गुरु तेडी हो ! केइ देवे दान; फळ बतावे पर्वत जेवो, तृष्णा हो ! लागी जुओ अज्ञान. सु० ९ ब्राह्मण वांचे पुराणने, सर्व छोडो हो ! दो अमने दान;
सीघा जावुं वैकुंठमां, एम बगडचुं हो ! साधुनुं भान. सु० १०
मुनि तेड्या जावे नहीं, नहीं करपे हो ! कीघो मुनिने काज;
मूर्य देई न छखाववुं, एम भारूपुं हो ! श्रीजिनराज. सु० ११
आचारांग वांचे नहीं, दश्वैकाछिक हो ! वांचे केम;
प्रश्न व्याकरण वांचे नहीं, छेद सूत्रनो हो ! न छेवे नाम. सु० १२
कदी कोई वांचतो, जाणे हो ! साधुनो आचार;
उत्सर्ग अपवाद छगावीने, वघारे हो ! अनंत संसार. सु० १३
गुरु जेवा चेछा मळ्या, कोण काढे हो ! आ वातनो तोछ;
साधु आचार बतावतां, खुछी जावे हो ! पोतानी पोछ. सु० १४
महिछा परिचय अति घणो, सघवा विघवा हो ! मळे मस्तान;
सेवा करो स्वामी तणी, स्वामी बेठा हो ! जाणे गोपीमां कान
(कृष्ण) सु० १६

साधुना स्थाने साघवी, वरजी हो ! बृहत् कल्पमां नाथ ! व्याख्यान अथवा वांचना, आवे हो ! संघ चउविघ साथ. मु० १६ अगीतार्थ पासत्था होवे, केम वांचे हो ! साधुनो आचार; आण रही नहीं कोइनी, अंघोअंघ हो ! मचीयो अंघकार. मु० १७ साधु जाणे श्रावक जाणरो, तो कररो हो ! वशे खेंचाताण; श्रावक पण ढीला थया, अंघा उंदर हो ! थोथां घान. सु० १८ हानि होवे छे ज्ञाननी, श्रावक हो ! नहीं पूछे सार;

कान तणा रसीया थया, द्यां करवा हो! सुणे साधु आचार सु० १९ मोटां मोटां भाषण करे, कोरा हो! पोते रहेवे आप; पोथीनां वेंगण थयां, केम पढे हो! बीजापर छाप. सु० २० पाटे बेसी साधवी, पुरुष आगळ हो! वांचे व्याख्यान; दुराचार वध्यो घणो, कल्यियुगना हो! ए छे अनाण. सु० २१ श्रंगार हास्यादि घणा, व्याख्यान हो! आवे नवनव रंग; स्वपर मित बहु जन मले, काम पडचां हो! होवे दीलिनो मंग. सु० २२

जुओ आज्ञा वीतरागनी, दीर्घ दृष्टि हो ! देइने ध्यान; नाक अणी एडी पग तणी, नहीं दीसे हो ! शुणवा व्याख्यान

आचारांगमां साध्वी, व्याख्यान सुणवा हो ! जावे त्रण संग;
चार हाथ पना तणी, चादर थी हो ! ढांके अंग उपांग. सु० २४
दशाश्रुत स्कंधमां ओपमा, नारीनो हो ! जोवो अधिकार;
घरनी झुंपडी बाळीने, बीजानो हो ! केम ठंड निवार. सु० २५
निरयावळीका ज्ञातासूत्रमां, बाईओने हो ! दीघो उपदेश;
एवी विधिए दे साधवी, जाणी हो ! सिद्धांतनुं रहस्य. सु० २६
श्रावक पण समने नहीं, जोई हो ! प्रत्यक्ष दृष्टांत;
फूटी नाव अंघो नाविक, केम पामे हो ! भवजळनो अंत. सु० २७
उपदेश देवे द्रव्यनो, फंड करे हो ! टीप गामोगाम;
संस्था स्थापे नवी नवी, जेमां हो ! पोतानुं नाम. सु० २८

सु० २३

एक संस्था सींचे नहीं, तोंडे हो ! करे आपणुं काम;

क्रावम कुट चकी देखीने, मुंताडी हो ! करे आपनुं नाम. सु॰ २९

किश्वव प्रतिकेशवा, किश्युगी हो ! कागीआ सेतान;

एक बीजानुं खंडन करे, नोटीसो हो ! देवे मस्तान. सु॰ ३०

एकने शिष्यनी छाछसा, बीजाने हो ! हृदयमां मान;
स्वार्थयी शुद्ध रहे नहीं, किम मळे हो ! समाजने ज्ञान. सु० ३१

समय नहीं झघडा तणो, आपसमां हो ! राखो धम स्नेह;

एक बीजाने मदद करो, मार्ग हो ! सुधारानो एह. सु० ३२

शासन उपदेशकों उपरे, छाम हानिना हो ! थाशे जोखमदार;

उठो संमाळो समाजने, रात गई हो ! उग्यो दिनकार. सु० ३३

ढाळ १५ मी—मुनि गुरुकुछवासो सेवन करी स्वसमय पर-समयना सारी पेठे जाणकार थाय, तर्क वितर्क अने समाधान करवाने सारो अम्यास करे अने पोते अन्तःकरणथी वैराग्य दृष्टि, शुद्धाचरण राखे एवा मुनिए व्याख्यान आपी भव्यात्माओनुं अवस्य कल्याण करवुं जोइए परन्तु जेणे जैनसिद्धान्तो न वांच्या होय अने गुरुगमथी ज्ञान न मेळव्युं होय अने अंदरमां स्वार्थनी छाछसा बनी होय तो पछी तेवा व्याख्यान वांची दुनीयानो द्वां उद्धार करनार १ तेओने तो मौन धारण करी गुरुसेवामां—गुरु आज्ञामांज पोतानुं संयम पाळवुं जोइए.

तप अधिकार-



दोहा.

आठमुं छक्षण साधुनुं, तप करी शोषे तन; पूजा सत्कार वांछे नहीं, निर्मेळ राखे मन. बागवाडी वनमां रहे, करे समाधि ध्यान; छाञ्चि अनेके उपने, निर्मेळ केवळ ज्ञान.

(ढाल १६ मी)

देशी पूर्ववत्.

जेम जेम तप मुनि आचरे, तेम तेम हो! वधे अधिकुं तेज; क्षांत्यादिक गुण गण वधे, निकाचित हो! कर्म तोडे सहेज. सु० १ रंगी अभ्यंतर आतमा, जाणो हो! जेने मुक्ति मोझार; बाल कीडा आ भरतनी, एक पक्षी हो! लखुं समाचार. सु० २ मास खमण मुनिवर करे, त्रीश गामे हो! मेले समाचार; अमुक दिने होसे पारणुं, छपावे हो! पत्रोंमें जाहेर. सु० १ टेक्स पडे गृहस्थी उपरे, मेळा थाए हो! घणां गामना लोक; महोत्सव वरघोडा काढता, करे हो! आडंबर फोक (व्यर्थ) सु०४ घर घरमां तैयारी थती, मात पाणीनो! हो स्वामी देजो लाम; भूखे मरी मेगी करी, कमाई हो! उड जाये आम (आकाश.)सु०५ कदाचित गृहस्थ नहीं करे, कोप करी हो! तपसी बोले एम;

मुं अमने जाणो नहीं, मन वधे हो ! तप खोने तेम. सु॰ ६ तपसी नाम धरानीने, पीए हो ! अध नछोइ छास; सुंठादिक केई नापरे, दूध तणो हो ! मीठुं धोनण खास. सु॰ ७ छांना छांना कागळ छखे, ढुंढकजी हो ! किथा मास चार; गुप्त नात खोछे नहीं, अभिमानी हो ! सेने माया चार. सु॰ ८ धर्मीनुं नाम धरानीने, छेने हो ! तपस्यानुं नाम; काम करे अधर्मना, दुं छखुं हो ! जाणो आतमराम. सु॰ ९ कोड वर्ष सुधी तप करे, करे हो ! कोई कोध छगार; मान मायाने छोमथी, नधारे हो ! उछठो संसार. सु॰ १० समवायांग नत्रीशमां, नांची हो ! करे आतम खप; अज्ञात कुछनी गोचरीं, अजाण्यो हो ! मुनि करे तप. सु॰ १९

ढाळ १६ मी—रागद्वेषनुं शान्तपणुं अने मात्र कर्मक्षयः निमित्ते घणुं करी गुप्तपणेज तप करवुं जोईए, किन्तु मानपूजा— सत्कार माटे न करे तेम तप करी कोध पण न करवो जोईए.

स्री परिचय निषेध अधिकार.



दोहरा.

नारी होय चित्रामनी, नहीं रहे मुनिराय; द्शवैकाळिक आठमें, उंदर बीलाडी न्याय.

(५६)

ढाल १७ मी

देशी पूर्ववत्

सर्वे व्रतमां दुष्कर कहुं, उत्तराध्ययनमां हो ! कही नव वाड; दशमो कोट गणो जापतो, मुनि रहे हो! वनवाडी के पहाड. सु० १ श्राविका तो दूर रही, साध्वीनो हो ! केटलो बंदोबस्त; साधु स्थाने साधवी, नहीं आवे हो ! निश्रीथनो मतः स॰ २ अठाई ओछव उपाशरे, ज्यां रहे हो ! श्रीवीरना साध; मृदंग ताल वीणा तणा, हारमोनीयम वाजा हो! नवा नवा साद.सु०३ गायन मंडळी बोलावीने, नचावे हो ! करी नारीनां रुप; करे विषय उदीरणा, तुं जाणे हो ! मारा त्रिमुवन भूप. सु० ४ गरना गाने रातमां, ताली देवे हो ! नारी मळी साय; भाक्ति नामे लोक मोळवा, इंद्रिय पोषे हो ! तुं जाणे नाथ. राते दीवा कल्पे नहीं, जिन मंदिरे हो ! कह्या वीतराग; धर्म नाम अधर्म करे, शासने हो ! लगाव्यो दाग. सु० ६ गौतम स्वामी आगळे, नाटक कर्यो हो ! सूर्याभदेव; वाणिक समजावे कुहेतुथी, पासत्थाए हो ! पाडी खोटी टेव. सु० ७ स्थलिभद्र वेश्या घरे, चित्र शाले हो ! कीधुं चोमास; तो केम उतरा उपाशरे, वीरे वरज्यो हो ! वेक्याना वास. सु० ८ क्यां गौतम क्यां गीदडा(शियाळ), बाळ हृदय हो! शुं जाणे अज्ञान; क्यां नवगजो सिंह केसरी, क्यां खर हो ! कोण करे पीछाण. सु॰ ९

किया करावे केई मुनि, आछोचन हो ! देवे केई साध; प्रतिक्रमण करावतां, नारी साथे हो ! मेळी मर्याद. सु० १० नारीने साधु कागळ छले, वधे परिचय हो ! तुं जाणे नाथ; अग्रुद्ध व्यवहार छोकमां, विहारमां हो ! रहे बाईओ साथ. सु० ११ बांधी दृष्टिरागमां, करे हो ! चोमासां साथ; माछ पाणी मुनिने मळे, आधाकमीं हो ! तुं जाणे नाथ. सु० १२ साधु गौतम सारखा, नारी हो ! चंदनबाळा जो होय; तो पण परिचय खोटो हुवे, प्रत्यक्ष दशा हो ! यतिओनी जोय.सु० १२ आग्नि पासे घृत मुकतां, छींबु नामे हो ! व्यापे मुखे नीर; स्यगढांग चोथे कह्यो, नारी नागण हो ! मुके कामना तीर.सु० १४ नारी संग निवारसे, आतम हो ! इंद्रिय करे दम; नारदनी परे पामशे, रस हो ! आतम उपशाम. सु० १५

ढाळ १७ मी--साध्वी के श्राविका गमे ते होय परन्तु ब्रह्म-चारी पुरुषोने नारी साथे बिलकुल परिचय नहिज करवो.

एकलविहार अधिकार.

दोहा.

कळिकाळमां एकला, नहीं विचरे अणगार; गुरुकुळ वासो सेवतां, तुरत तरे संसार, १

(ढाल १८ मी.)

देशी पूर्व प्रमाणे.

निशीथ आचारांग मण्या नहीं, नहीं भण्या हो ! ते जैन सिद्धात; गुरु कुळवास छोडीने, अभिमानी हो ! विचरे एकांत. सु० १ ढाळ चोपाइ कथा कहाणीयो, रीझावे हो ! अज्ञानी लोक; मन मानी मोझो करे, अनाचारी हो ! सेवे केइ दोंप. सु० २ स्वच्छंदे अंकुरा विना, कोण रोके हो ! कहो केनी काण; रेंछ विहारी मुनि केइ, मला मुंडा हो ! कोण करे पीछाण. सु० ३ श्रावक पण भोळा घणा, नेठे मळ्या हो ! माने गुरुराज; बंने आज्ञा बारणे, जाणे दीघो हो ! चोरोने सहाज, सु० ४ पासत्था कुशीलीया, प्रशंसतां हो ! चोमासी दंड; स्वच्छंदाना गुण कहे, निश्चीथे हो ! कहा। गुरु (भारी) दंड सु० ६ अगीतार्थने एकला, नहीं कल्पे हो ! बृहत्कल्पनो पाठ; कहेवुं किञ्ज एकनुं, नहीं कल्पे हो ! जो मेळा रहे साठ. सु॰ ६ केंद्र ध्यानी मुनि भणे, केंद्र हो ! तपस्या करे पूर; कंठ कळा गायन करे, आज्ञा विना हो ! शासन रहे दूर. सु० ७ ठाणांगठांणे आठमे, आठ गुण हो ! होवे जेने साथ; सिंह जेम विचरे एकलो, आज्ञा दीधी हो ! जेने जगनाथ, सु० ८ उत्तराध्ययने ओगणतीसमें, गच्छ छोडे हो ! जो होवे वीर; तीजे ठाणे भावे भावना, क्यारे विचर्छ हो ! एकाकी घरी धीर मु ० ९ आप थकी अधिका गुण होवे, अथवा हो ! होवे समतुष्ठ; उत्तराध्ययन पांत्रीशमें, शिष्य करे हो ! नोवे नातिकुछ. सु०१ • कदाचित एवे। नहीं मळे, पाप टाळी हो ! विचरे मुनि एक; गीतार्थने आज्ञा दीधी, नहीं छोडे हो ! मुनि धर्मनी टेक. सु० ११ ढाळ १८ मी—आ काळमां एकछो विहार न करवो, तेमां पण अगीतार्थने तो बिछकुछ नज करवो गुरुकुछवासमां के पछीं गुरुनी आज्ञा होय त्यांज रहेवुं जोइए.

गच्छ अधिकार.

दोहरा.

गच्छ नायक गणधर हुए, संघ वहे तस आण; चाहे एक चाहे घणा, सहुनुं करे प्रमाण. १ भगवती शतक प्रथममां, तीजा उद्देश मोझार; तेरा अंतर देख छो, वचनापेक्षा विचार. २

(ढाल १९ मी).

ं देशी उपरनी

सुविहित आचारज हुआ, विचर्या हो ! केइ देशोदेश; झंडा फरकाव्या जैनना, शासन कार्य हो ! कीघा विशेष, सु० १

मोटा मोटा आचारन हुआ, नहीं मेट्या हो ! कोईने गच्छ खद; चीर वचन कोण ठेलहो, चालणी हो ! हो से धर्मना मेद. सु० २ नायक नहीं हमणां भरतमां, स्वच्छंदे हो ! नहीं चाले काम; शासन मर्यादा उंची घरी, आप आपनो हो ! वधारे नाम. सु० 🦜 किया तणा झघडा करे, चेलंजे हो ! देवे नोटीस; मारो सरखो पंडित नहीं, मनमां हो ! घणी रागने रीस. पांच छ कल्याणक तणा, ईरियावही हो ! पर्युषण काळ; श्रद्धा संयम शोधे नहीं, हस्ती नीकळे हो ! अटके पूंछ बाल. सु० ५ ओघामां वळी गांठी तणा, पातरा हो ! काळांने लाल; ्व्याख्यान मांहे मुहुपत्ति तणा, फोगट झघडा हेा ! नहीं तेमां माल. सु० ६ ल्एक बीजाने जूठों कहे, मांहो मांहे हो ! करे लूंटम लूंट; हर कदाग्रही ए जीवडा, उत्तराध्ययने हो ! कही पोली मूट. सु०७ आतम कल्याण भूळी गया, शासन सेवा हो ! गया संयम भूछ; माथाफूट खाळी करे, शासननुं हो ! उखेडे मूळ. ्एक गच्छनो श्रावक होवे, रहे हो ! बीजा गच्छमां जाय; ्छापा छोप झघडा करे, लाखो श्रावक हो ! अन्यमति थाय. सु 🌣 🔇 ेतेनी परवा कोईने नथी, ढोडी छोकरा हो ! नेम जाणो न्याय; साचा पंडित त्यारे होवे, नवा हो ! केई जैन बनाय. आप अहमींद्र थै रह्या, बीजाने हो ! गणे तृण समान; ज्जमम लजीया कह्या नाथजी, मंदे छक्या हो ! प€चा अज्ञान. सु०१**१**

गच्छना झघडा छे घणा, केटला लखुं हो ! तुं जाणे तात; बुद्धि सुधारो नाथजी, सो वातोनी हो ! एक मोटी वात. सु० १२

ढ़ाळ १९ मी—आ वखतमां केवली के कोई अतिशय ज्ञानी नथी के प्रत्यक्ष सत्यासत्यनो निर्णय थई शके आधार तो आगमोनो छे ते बधा गच्छवाळा आगमो माने छे पछी पोतपोतानी अनुकूळ-ताना पाठ आगळ करी झगडां करे ते ठीक नथी. मूळ तत्व बधानो एकन छे माटे पोताने गमे ते गुरुनी पासे धर्मकार्य साधन करे परन्तु नजीवी बाबतमां धर्मने नामे कर्मबन्ध करी अमूख्य मनुष्य जन्म हारी जावानुं नथी माटे शान्त चित्तथी धर्मकार्य साधन करो. जे झगडानी बाबत छे ते पछी आगला भवमां सीमंघर स्वामीने पुछी निर्णय करजो.

ज्योतिष निमित्त अधिकार.

दोहरा

आगम आणा सिर वहें, माखें नहीं निमित; तप संयममां नित्य रमें, सरछ स्वभावी शांत. भाषा समिति राखवा, राखवा संयम शोभ (शोभा) निमित्त न भाखे मुनिवरा, जिन शासनना थोभ.

(ढाळ २० मी.)

देशी पूर्वनी.

न्मानपूजाने कारणे, वांछे हो ! आदर सस्कार; ्पुद्रलानंदी जीवडा, लाली खोवे हो ! नरनो अवतार, सु• १ यंत्र मंत्र तंत्र करे, माखे निमित्त हो ! करे भूति कमी; कामण टुमण दोरा करे, नहीं जाण्यो हो ! ते धर्मनो मर्म. सु॰ २ झाडा झपटा करे घणा, माद्छीयां हो ! भरे मजुर; अंक छीछांमं बतावता, तेजी मंदी हो ! केई साधे सुर. सु० ३ वासक्षेप केंद्र करे, घरे हो ! केंद्र माथे हाथ: केइ मूहुर्त बतावता, तुं जाणे हो ! मारा ऋपानाथ. सु० ४ पुण्य विना सिद्धि नहीं, फोकट हो ! खोवे प्रतीत: उत्तम तो झळके नहीं, जाणो हो ! ए नीचनी रीत. सु॰ ५ अष्ट कह्या आचारथी, दंड कह्यो हो ! निश्चीथ मोझार; विरोधी आज्ञा तणा, भगवतीमां हो ! जुओ अधिकार. सु० ६ सो वार साचुं पड़े, एक वार हो ! कदी पड़े जूठ; प्रताति रहे नहीं जैननी, छोभी विणक हो ! संयम छेवे लूट. सु० ७ आगम विहारी कारणे, सेवे हो ! कोइ अपवाद; ओठुं छेवे तेहनुं, नहीं शक्ति हो ! जुठो हठवाद. सु० ८ कष्ट के रोग आवे थकां, घन कारण हो ! वांछे कोई मान: शांति स्नात्र भणावतां, ओळी आंबिल हो ! सिद्धचक ध्यान. सु०९ मलुं होवे साधु सिद्ध थयो, नहींतर हो ! उठे प्रतीत; तेथी श्रद्धा शिथील थई, हांसी हो ! करे लोकनी रीत. सु० १० पूर्व पाप वाणिये कर्या, उदय आवे हो ! पहोंचे मुनि पास; माला मंत्र बतावी दो, जेम मळे हो ! धननी मोटी रास. सु० ११ झघडो जीतुं राज्यमां; पुत्र हो ! होवे एक बेज: पदवी देवरावुं आपने, जगमां हो ! जस मोटो लेज. सु० १२ गृहस्थी धनना लोमीया, साधुने हो ! पदवीनुं जाण; बंने आणा उंची धरी, ए ले हो ! कलियुगना ए घाण. सु० १३

ढाळ २० मी—छदमस्थ मुनियोने माटे आगममां कहुं छे के मूत मविष्य के वर्तमान काळना निमित्त न बोछवा, तेथी घणी जातना नुकशान थाय छे माटे जिनाज्ञा पाछक मुनिने कदी पण निमित्तादि संसार विधिना कार्यो नज करवा जोइये.

तार टपाल अधिकार.



दोहरा.

घर छोडीने नीसर्या, छोड्यो जगत स्नेह; तार टपाछ चीठी तणा, समाचार सुण एह. १

(48)

(ढाल २१ मी)

देशी उपरनी.

गच्छ नायक गीरुवा होवे, मोटुं कारण हो ! शासननुं जाण; समाचार छखावता, अपवादे हो ! रही जिन आण. सु० १ छोटा होवे साघु साध्वी, पत्र छखे हो ! पोताने नाम; आवे पोताना नामथी, कोण जाणे हो ! शुं करे काम. सु० २ दुकानदार गृहस्थी होवे, चिठी आवे हो ! नित्य बेज चार; एक घर छोडी नीकळ्या, थया हो ! केइ घर हजार, सु० ३ मोटी ओफीसमां सो पचास, नानीमां हो ! आवे दश वीस; तार सुणी तुटी पडे, प्रतिक्रमणे हो ! पांडे बेटां चीस. सु० ४ कवर कार्ड टीकीट घणा, नोटो हो ! राखे मस्तान: पारसल वी. पी: तणा, गणतां हो ! कोण राखे ज्ञान. सु० ६ मीटा मोटा मुनिराजना, मांडे हो ! दफतरमा नाम; मन मानी मोजो करे, सोगणुं हो ! गृहस्थथी काम. सु० ६ पारसलमां कपडा कांबळी, दवा हो ! साबुने तेल; हुकम करे रुपिया तणो, शुं छुलुं हो ! आ भरतना खेळ. सु० ७ गांडा गृहस्थी पूछे नहीं, देवे हो ! ते रोकड दाम; मनीओरडर माकरावता, वळी आवे हो ! श्रावकने नाम. सु० ८ साधु स्त्रीओने कागळ छखे, साध्वी छखे हो ! पुरुषने नाम: अञ्चाद्ध व्यवहार छोकमां, कोण जाणे हो ! अंतरनां काम. सु० ६ धर्म लामना नामथी, लखे हो ! कर्मनी वात: क्यां सुधी छखुं बापजी, पालंड माडचुं हो ! घोळे दिने रात.सु०१० गरज नहीं ग्रहस्थ तणी, स्वतंत्र हो ! मह्युं जाणे राज; शंका रही नहीं कोइनी, एम बगडयुं हो ! भरतनुं काज. सु० ११ पर्युषणनी क्षमापना, नहीं मळे हो ! भोजननो टाइम; नहीं जोये नहीं देखतां, क्षमापने हो ! छखे कुराळ क्षेम. सु० १२ मोटा मुनि चोमासुं करे, सो पचास हो ! जोइए टपाल; आचारज पन्यासनुं, दुं कहेर्नुं हो ! ए तो मोतीनी माळ. सु० १३ टपालना पैसा तणुं, थातो हशे हो ! केवो उपयोग; विचार करे कोण तेहनो, सरखा सरखो हो ! मळ्यों संयोग. सु०१४ कमती नहीं कोइ ढुंढका, तेरा पंथीनी हो ! वळी अधिकी वात: गुप्त गोटाळा छे घणा, नहीं छाना हो ! तुं जाणे तात. सु० १६ . पार नहीं केटलुं लख़ं, जाणो हो ! तमे जगदाधार; करुणानिधि कृपा करो, भरतनो हो ! करो जलदी उद्धार. सु० १६ 🦟 ढाळ २१ मी--संजोगा विषयुक्तस्स, आ व्याख्याने हमेशां स्मरणमां राखवुं अने कागळ पत्र ना लिखवाथी गृहस्य साथे घणा प्रकारनो परिचय वधी पडे छे ते पण रागद्वेषनुं मूळ छे आर्तध्याननुं वृक्ष छे तथी बने तेटेलुं दूर रहेवुं जोइये.

प्रतिक्रमण अधिकार.



दोइरा.

निरतिचार वत पाळतां, कदाच लागे देख; द्युद्ध उपयोग आलोचनां, करतां होय निर्दोष. १

(ढाल २२ मी)

देशी उपरनी.

छ आवश्यक उपयोगथी, करतां हो! जीव थाय विशुद्धः जेम जेम अधिकी किया भरी, तेम तेम हो! उपयोग अशुद्धः सु॰ १ छ आवश्यक सहुना एक छे, अधिकी किया हो! यतां छेद मेदः तीन चार शुद्धः तणां, चैत्यवंदन हो! काउसगना मेदः सु॰ २ यावार्थ जाणे नहीं, किया करे हो! ते काळोकाळः द्वय आवश्यक अण उपयोगमां, ज्ञानी हो! कहे तेहने बालः सु॰ ३ प्रतिक्रमणना अंतमां, मोठे शब्दे हो! बोलावे शांतः गांडरी प्रवाह जीवडा, कोण जाणे हो! कहे तेहनो तंत. सु॰ ४ मोटी शांत मुनिवर कहे, पक्ली चोमासी हो! कर्यो प्रतिबंधः संतिकरं शरु थयुं, भविष्यमां हो! थाशे निबंधः सु॰ ६ मोटा उपसर्ग कारणे, बनावी हो! जाणी ते काळः सु॰ ६ मोटा उपसर्ग नहीं, देवी कोपे हो! समजे नहीं बाळः सु॰ ६

विनष्टित्त निर्वाण पाठमां, देवी पासे हो ! मागे निर्वाण; भरत क्षेत्रना छोकनी, दशा बगडी हो ! नहीं रह्यो ज्ञान. सु॰ 🤒 देव बीतराग जैनना, नहीं पूजे हो ! सरागी देव; ते मार्ग लूप्त करे, सरागी हो ! पूजे वितय मेत्र. सु॰ ८ कयवली कम्मा पाउनो, कुछदेवी पूजी हो ! कहे ढुंडक एम; श्रावक सरागी पूजे नहीं, उत्तर आपे हो ! गीतार्थ तेम. सु० ९ सम्यग् दृष्टि जो सुर होवे, गुण कर्चा हो ! सुलभ बोधि जाण; अवगुण बोले उल्हुं थतां, पूजनीय हो ! वीतराग पीछाण. सु० 🕻 🖜 माटा उपद्रव संघमां थतां, स्मरण करे हो ! सम्यग् दृष्टि देव; अतिक्रमण करतां थकां, उपद्रव हो। नहीं होवे सदैव. सु० ११ कामदेव चुलणी पिता, अरण कहो ! श्रावक पीछाण; उपसर्ग सहा। माटका, सरागी हो ! पूज्या नहीं जाण. सुठ १२ असाहिजा, श्रावक थया, तुंगीया तणो है। ! जुओ अधिकार; मोक्ष कारण माथुं मुंडीयुं, नहीं वांछे हो ! कोइ सहाय लगार सु 🧸 🕻 नहीं कहे तो उपद्रव करे, यतिओ हो ! एम घारे मर्म; नहीं कहेवा वाळा संघमां घणा, अमे पड्या हो! समजो तमे ्ममे. सञ् १४ 📑

अजितशांतिना अंतमां, गाथा हो ! मिलावी साथ; उदेपुरमां लघुशांतिने, शरु करी हो ! नहीं छानुं नाथ. सु॰ १६ नानुं प्रतिक्रमणुं गुपचुप्र करे, मोटुं हो ! करे परखदा वीच; अप्त रुषां छूपे नहीं, मायाचारी हो ! ज्ञानी कहे नीच. सु० १६

वांदेतु सूत्र सिद्ध दंडके, जयवीयराय हो ! गाथा दीधी भेल; न्यूनाधिक भिथ्यात्व छे, शुं लखुं हो ! आ भरतना खेल. सु० १ 🤏 मोटा माटा आचार्य तणां, नाम छेई हो ! मांडी बेटा दुकान; ते कारण जाणे नहीं, आगमनुं हो ! उत्थापे ज्ञान. तीर्थंकर गणधर होवे, होवे हो ! चउद पूर्वधार; अभिन्न द्रा पूर्व हुए, सम्यक् सूत्र हो ! सूत्र नंदी मोझार सु० १९ दश पूर्व उणा होवे, तेनां वचन हो ! नहीं आगम तुल्य; सत्य कदा असत्य होने, समवायांग हो ! सूत्र अमूल्य. सु० २० निर्युक्ति टीका चूरणी, भाष्य दृत्ति हो ! अवचूरी जाण; पाठ काढे अपवादना, नहीं पाम्या हो ! ते सम्यग् ज्ञान. सु॰ २१ उत्सर्ग पाठ आगम तणा, लोपे हो ! करे आपणुं थाप; कारण विण अपवाद्ने, थापे तो हो ! छागे मोटुं पाप. कमळ प्रभा सूरि तणो, उत्सर्गे हो ! थाप्यो अपवाद; अनंत संसारी आतमा, महानिज्ञीथे हो ! जुओ सत्यवाद, सु० २३ चैत्यवासी थी चाळु थयुं, सरल मावे हो ! कीघुं अनुकरणः ते प्रवाह यंथे छल्यो, काम पडे हो ! तेनो छेवे सरण. मन कल्पित आचरण करी, छखी हो ! पोताने हाथ: ते आगम तुल्य केम होवे, कोने कहेवुं हो ! मारा क्रपानाथ सु०२५: प्रत्यक्ष पाउ सिद्धांतमां, ते छोपी हो ! माने कल्पितः नंग मचावे जैनमां, छोडी हो ! जैन शासननी रीत.

निषेध नहीं आगम विषे, नहीं हो ! करे अंगीकार;
अशाठ आचरण आचरे, देशकाळ हो ! जोवे शुद्धाचार. सु० २७
एक आचोर्य आदर्यों, बीजो हो ! करे निषेध;
सर्व मान्य होने नहीं, तेथी हो ! पड्या गच्छना मेद. सु० २८
जिन वचनथी डरे नहीं, थापे हो ! आप आपनी वात;
न्यूनाधिक प्ररुपतां, छागे हो ! मोटुं मिध्यात. सु० २९
तेथी बचावो बापजी, थरथर हो ! ध्रुने छखतां हाथ;
हवे तो हद आवी गई, सामुं जुओ हो ! मारा शासन नाथ सु०३०

ढाळ २२ मी—धर्म छे ते वीतरागनी आज्ञामां छे अने आज्ञायी न्युनाधिक करवुं ते तो अधर्मज छे माटे कालोकाल प्रतिक्तमण (षडावश्यक) उपयोगथी करवुं अने बीजा टाईममां स्वाध्याय ध्यान मौनके तत्व विचार करवुं, "तीन्नाणं तारियाणं" एक वीतराग देवज होय छे अने अनन्ता जीव मोक्षमां गया जाय छे अने जाशे ते सर्व वीतरागने वन्दी पूजीनेज सिद्ध थाशे (नहीं के सरागी देवथी) ते खास विचारवानुं छे. एटलुंज नहीं परन्तु आस्थाने पचीश २५ प्रकारना मिथ्यात्वने पण ओळखवानी घणी जहर छे.

तीर्थ यात्रा अधिकारः

दोहरा.

तीर्थ तीर्थपति तणुं, तीर्थ उतारे पार; तीर्थ सेवा जे करे, धन्य तेनो अवतार. तीर्थ यात्रा करवी कही, आचारांगनो छेख; सम्यक्त्व शुद्ध निर्मेळ हुए, बहुळां आगम पेख.

हाळ २३

देशी पूर्वनी

आगम जलिशि भर्यो, मुनि हंसा हो ! करे नित्य कलोल; तप संयमनी यात्रा, जुओ हो ! भगवती खोल.
मु॰ १ माम गाम जई विचरे, कांई करे हो ! स्वपरनो उद्धार; विहार करतां तीथों नमे, करे हो ! ते भवनो पार सु॰ २ न्याय उपार्जित द्रव्यथी, पोते हो ! शुभ राखे भाव; पुद्रलनी इच्छा नहीं, श्रावक हो ! नाणे चोकनो दाव.
सु॰ ३ लिय उद्धार करावतां, सार्यो हो ! केई आतम काज.
जीव तणी जतना करे, नहीं बोले हो ! कदी मृषावाद;
पर धनने वांले नहीं, नहीं सेवे हो ! विषय आस्वाद.

रात्री प्रयाण करे नहीं, नहीं नाये हो ! चोमासे बहार;
खाण रत्ननी संघ होवे, हालना हो ! सुणीए समाचार. सु॰ 🕻
भूछ उठावे ढुंढीया, पासत्था हो ! करे अधिकुं थाप;
ओं छुं अधिकुं बोलतां, लागे हो । मिध्यात्वनो पाप. सु० ७
नहीं करतां गुरु कहुं, अविधि हो ! लघु प्रायश्चित जाण;
निषि करतां भवज्ञ तरे, एवी हो ! श्रीजिनवरनी आण. सु॰ ८
मर्यादा मुनिवर तजी, संघ तणी हो ! करे कोशीश;
उंचे। धर्यो आचारने, शुं लखं हो ! जाणो जगदीश. सु॰ ९
नाम छेवे यात्रा तणो, साथे राखे हो ! गाडीने माछ;
दाल बाटीने चूरमां, अहींथी हो ! लाग्यो मझानो ताल. सु० १०
साधवीओ साथे रहे, विधवा हो ! रहे दश वीस;
भाग्ये माई मळे कोई, दुां छखुं हो ! नाणो नगर्दश. सु० ११
स्त्रीओ साथे साधुने, वरने हो ! आचारांगे एम;
उत्तराध्ययने सोळमें, वाड भांगे हो ! शीयळनी तेम. सु० १२
साधु कारण तंबु रहे, तंबु कारण हो ! गाडीने उंट;
जीव हणाय छ कायना, पूछेथी हो ! वळी बोछे जूठ. सु० १६
आज्ञाःचोरी वीतरागनी, महिछा साथे हो ! मांगे शीलनी वाड;
ममता तो खुछी दीसे, पांचमुं त्रत हो ! एम दीधुं ताड
(नाश) सु॰ १४
उठे पाछली रातना, संब चाले हो ! फरे गामो गाम;
साधु साध्वी राते चालतां, निंदा हो ! होने ठामो ठाम. सु॰ १६

उनुं पाणी करे रातना, घडा भरी हो ! बाईयो रहे छार; तेहज पाणी वापरे, यात्रा नामे हो ! संयम जाने हार. सु० १६ नीलण फूलण कोण गणे, कोण करे हो ! जीवोनी सार; निरनुकंपा अनुयोगमां, भक्ति नामे हो ! करे अत्याचार. सु० १७ सो जणा संघमां होवे, उना पाणी हो ! पीवे दश वीसः आधाकर्मी ए आरोगतां, साधु साध्वी हो ! भेगां पचवीस. सु० १८ सो पचास के बसो रहे, माल मळे हो! सुणो तीर्थ नाथ: मार्गमां मुक्ति नहीं, हाथ पकडी हो ! है आवे साथ. देवसूरिजीने तेडीआ, कुमारपाळे हो ! कढाव्या संघ; स्त्रीओ साथे करपे नहीं, उत्तर दीघो हो ! आगमनो रंग. सु० २० गुरु गौतम करी जातरा, अष्टापद हो ! एकञ्च आप; ते वसते संघ नहीं कहा, पासत्थाए हो ! पाछळ दीघुं स्थाप.सु०२१ यात्रा कीघी पांडवे, जाली आदि हो ! घणा मुनिराज; पांचमां आठवा अंगवां, मुक्ति गया हो ! साधी आतम काज. चोमासे गामांतरे, श्रावक हो ! जावे नहीं बीने गाम; संघ कढावे, जावे वंदवा, करे हो ! पोतानुं काम. केई तो धनना छोमीया, केई हो ! जुओ पुत्रने काज; केई रोगादिक काढवा, यात्रा करवा हो ! मळे समान. विणिक ठगे बधा जगतने, नहीं मुके हो ! वीतराग देव; तेमे पण ठगवा भणी, नहीं छोडे हो ! अनादिनी टेव.

भाग घाले दुकानमां, मीलोमां हो ! राखे कोइ माग; भाग राखी सहा करे, उजवळने हो! लगावे दाघ. सु॰ ९६ छोकोत्तर पक्ष किया करे, वांछे हा ! छौकिकनां सुख; 🧭 विष किया मिध्यात्वनी, एम भारुयो हो ! आपे श्री मुख. सु० २७ धर्मशाळामां उतरे, पत्ते चोवट हो ! रमे कहेवा संघ; राजा राणीने मारता, जुओ है। जातरानी रंग. सु० २८ अनार्य भाषा बोलता, गाली गुप्ता हो ! करे कलेश, केइ धर्मादु चोरतां, गीदु हा ! पहेरे वाघना वेप. सु० २९ केइ तीर्थ पण एवां थयां, मांडी बेटा हो ! दुकानाना काम; मुनीम रोकडीया मळ्या, मेला करे हा ! फरीने दाम. स० ३० पछी एकठुं नाणुं थतां, रोर छेवे हो ! मीछोनुं पाप; के जमा राखे बेंकमां, वणिक छीछानुं हो ! केम थाये माप सु॰ ३१ जीणींद्धार करावे नहीं, नहीं देवे हो ! बीजे तीर्थे दाम; टुस्टी जाणे मारा बापनुं, मोटा मळ्या हो ! थोडुं करे काम सु० ३२ जैन संघ कढावता, ढुंढक हो ! जावे वंदन काज; तेरा पंथी जावे पूजकने, आडंबरथी हो ! एम बगडी समाज सु० ३३ धमाधमीमां धर्म नहीं, धर्म रह्यों ! निज आतम मांह; ते तो वीरला ओळखे, देखादेखी हो ! वाजांबचे वजाह. सु० ३४ यात्रा कारण जन मळे, नहीं हो ! जैन धर्मनो रंग; जो यात्रा तारक कही, दूरे मुकयो हो ! संवेगनो संग. सु॰ ३६ रामायण तो छे घणी, छीछा हो ! जेनी अपरंपार;
मेझरनामुं वांचीने, भरतनो हो ! करो जलदी उद्धार. सु० ३६ हाळ २३ मी—तीर्थयात्रा मोक्षनुं कारण छे. परन्तु धामधुम मोक्षनो कारण नथी माटे पौद्गलीक इच्छा छोडी यतनपूर्वक जिनाज्ञा सहित यात्रा करवी जोइये.

मंदिर उपाश्रय अधिकार.



दोहरा.

मंदिर श्री वीतरागनां, करे जो तेहनी सार; जीणींद्धार करावतां, पामे भवनो पार. १ कालेकाळमां मोटको, भविजनने आधार; जिन प्रतिमा जिन सारिखी, कही ते सूत्र मोझार. ३ श्रावक मळी पोसह करे, पौषध शाळा नाम; चाहे कहो उपासरो, उपासकनो काम. ३

(ढाल २४ मी).

देशी पूर्वनी.

अष्टापदनी उपरे, आदिश्वर हो ! पहोंच्या निर्वाण;

ए अधिकार आगम तणो, जंबुद्वीप हो ! पश्चित जाण; ते परंपरा आज छे, द्वाद्ध श्रद्धा हो ! राखे चतुर सुजाण. सुठ ्र राजा राणी शेठीया, भक्ति भावे हो ! दणो धर्भनो रागः चैत्य बनावे नवा नवा, बिंब थाप्या हो ! लीघो स्वर्गनो मार्ग.सु० ६ देहरानो खरयो नहीं, पोते हो ! करता जीणींद्धार; ताला कुंची रहेता नहीं, नहीं हो ! गोठी मजुर प्रचार, सु॰ ४ श्रावक पोते पूजता, करता हो ! ते सार संभाळ; पडतो काल आरो पांचमो, पड्या हो ! केइ काळ दुकाळ. सु॰ ५ चैत्यवास साधुए कर्यो, श्रावके हो ! छोडी संभाळ; जरुर पड़ी मोटा द्रव्यनी, श्रावके मुळी हो कर्यो एकठो माळ. सु०६ तेनुं नामन पाडीयुं, देव द्रव्य हो ! प्रंथे कर्या छेल: मंडार बनाव्या जुजुआ, करे हो । एक बीजाने देख. सुं १ ७ नेम जेम द्रव्य वधतो गयो, तेम तेम हो ! वधे अधिक हेरा: घरेणां दागीना प्रभुने वध्यां, तृष्णा हो ! वाघे हमेशा, सु० ८ पडतो काळ थाये चोरीओ, लडे झगडे हो ! माया मस्तान; ताळा कुंची वीतरागने, चलावी हो ! वाणिके दुकान. सु० ९ मंदीरने उपाचरा, मोक्ष कारण हो ! माख्या वीतरागः ते कारण कर्यो अन्यथा, शासनने हो ! लगाव्या दाग. सु० १० एक मंदिरनी आशातना, बीजे मंदिरे हो ! द्रव्य रहे अनेकः एक बीजाने आपे नहीं, कोई देवे हो ! उपर लखावी लेख मुं० ११ ध्याज होने आकरं, पाछा हो ! आप आदले काळ;

मुदत उपर नहीं मळे, तेना हो ! प्रभु सुणो हेवाल.	मु॰	15
त्रष्टीओ कोरट चटे, देव नामे हो ! मांडे फरीयाद;		
दिगंबर श्वेतांबरा, मांहो मांहे हो ! मुकी मर्याद.	सु०	१३
सम्बातो घरना होवे, नाखे हो ! मंदिरमां आप;		
देव द्रव्यने वापरे, कोरटे चंडे हो ! करे मेाटुं पाप	सु॰	88
ममत्वनां मंदिर बन्या, अवंदनीक हो ! कहे आगम आप;		•
अवंदनीकने वांदतां, आज्ञा भांगे हो ! छागे मेाटुं पाप.	मु॰	19
देव द्रव्यनी वात्ती, सुणी हो ! प्रभु वणिकनां काम;	•	. ,
दोर छेवे मीछो तणा, व्याजे धरे हो ! बेंकोंमां दाम.	सु•	१६
मोटा आरंभ मीलो तणा, श्रात्रकने हो ! कह्यो कर्मादान;		
भाग घाळे वीतरागनो, ए छे हो ! कळियुगना नाण.	मु •	१७
दुकान मकान बंधावीने, माडे देवे हो ! करे वेपार;		
हुं भगवान भुखे मरे, के पाळवो हो ! तेने परिवार;	मु॰	26
जीणींद्धारनी टीपणी, मंडावे हो ! फरे गामो गाम;		e :
सरच आवक केटली थई, हीसाब हो ! जाणे आतम राम	. सु॰	१९
टेक्स पडे गृहस्थ उपरे, घर्म छोडी हो ! अन्य धर्मे जाय	ī;	
निधेनता अज्ञानता, विना खर्चे हो ! धर्मे पेसी आय.	मु •	२०
ेंपेढी चळावे देवनी, व्याज वटो हो ! राख्या मुनिम,		i
केई बेंको वाणीया, खाई गया हो ! जेनी नही सीम.	मु•	3 \$
जीणींद्धार करे नहीं, नवा मंदिर हो ! करे पोताने नाम;		
मोटा आरंभ अन्यायनं, नहीं खपे हो ! देवद्रव्यमां दाम.	सु०	33

ज्ञान द्रव्य वधारवा, ज्ञानोपकरण हो ! स्वपरनां सुणे स्वाम; गरु गौतमथी नहीं टळे, करी देवे हो ! बधानुं छीछाम. सु० २३ माळा पहेरावे पैसा लुंटवा, अधिक हो ! एक एकनुं मान; जीव बापडा शुं करे, जेवा गुरु हो ! तेवा जमान. स॰ २४ पहेलां पर्व आराधता, हमणां हा ! करे वेपार; ते द्रव्यनु शुं होवे, सुणजो हो ! तेना समाचार. अवडा तो आखा वर्षना, काढे हो ! पर्युषण काल: पर्व व्याख्या क्यां रही, मांहो मांहे हो ! आवे गालमगाल सु० २६ नाम कीर्त्त अभिमानथी, बोली बोले हो ! बीजो लेवे तोड; वाजां वागे रण तुरना, ईनत राखे हो ! नहीं शके छोड. सु० २७-ज्यारे पैसा देवा पडे, वांधा काढे हो ! वळी अमुका एम; कोरट चडे घरणा देवे, फजेती हो ! वळी करे तेम. देव ज्ञान द्रव्य तणा, पोतुं राखे हो ! केई गृहस्थी पास; पोते पैसा वापरे, काम काचो हो ! होवे देवद्रव्य नाराः प्रवृत्ति वैत्यवासी तणी, सत्यविजये हो ! बधी दीधी छोड; यतिये मळी सरु करी, हजी सुधी हो ! नहीं सके तोड. सु॰ ३० निषेध नहीं विधि तणो, अविधिए हो ! लागे मोटुं पाप; केटलुं लखुं मारा बापजी, नहीं छानुं हो ! बर्युं जाणी आप. सु०३१ ढाळ २४ मी---मगवानना देरासर खरेखर मोक्षना दातार छे अने तीर्थ के देरासरनो रक्षण करे छे ते शासनना रक्षण करवा जेवुँ छे, कञ्चीकाळमां देरासरी कल्पवृक्ष तुल्य इच्छित सुखना देवावाळा छे परन्तु ने मन्दिरोने नामे लडवु, जगडवुं, के ममत्व भावयी अपणायत करवुं, ए दुःखदाई थई पडे छे, माटे तेने त्याग करवुं.

दुंढक अधिकार.

दोहा.

हवे ढुंढकनी वारता, छखतां न चाले हाथ; मुलन कापे वृक्षनुं, तुं जाणे जगनाथ. १ जिन आगम जिन प्रतिमा, कलियुगमां आघार; जे उत्थापी लुंपके, सुण तेना समाचार. २

ढाल २५ मी उपरनी.

अमदावाद गुजरातमां, लुंपक लहियो हो ! लखे जैन सिद्धांत; पापाचारी जाणी करी, काढी मुकयो हो ! संघ मळी एकांत सु॰ १ विरुद्ध उपदेश सुणावतां, हिंसा हिंसा हो ! पूजा जातरा स्थान; उदय कर्मना योगथी, ने त्रण हो ! मळीया अज्ञान. सु॰ १ बकरीने गया काढवा, घरमां पेठो हो ! मोटो सिंह; खंडन तो हिंसा तणुं, आगम हो ! लोप्या अविघ. सु॰ १ किंग तो राख्युं जैननुं, श्रद्धा हो ! थइ विपरीत; लवनीथी ढुंढक थया, तोडी हो ! लुंपकनी रीत. सु० 8

अंघश्रद्धाल अज्ञानथी, गडबंड हो ! चाले लेटमलेट; जिन प्रतिमा जिन सारिखी, उत्थापे हो ! सिद्धश्रीमां खोट सु॰ 🗣 वंध्या पुत्र जेम बापडा, बाह्यिकया हो ! करे बक जेम बाळ: सूत्र सुयगडांगमां कहुं, आज्ञा बहार हो ! बधुं आळ पंपाळ.सु० ६ आहार वस्त्र पात्र तणा, स्थानक तणा हो ! सेवे दोष अपार; कमती नहीं कांई वातनी, उपर छख्या हो ! बचा समाचार. सु॰ ७. प्रतिमा पूजा कारण मोक्षनुं, भारन्युं हो ! बीजे उपांग; अत्यक्ष पाठ मरोडता, छाखो हो कुगुरुनो रंग. स॰ 🗸 अनेक श्रावक श्रावीका, द्रव्य भावे हो ! पूज्या जिनराज; ख़ुला पाठ आगम विषे, उत्थापे हो ! नहीं आवे लाज. सु॰ ९ सर्वे अरगम उत्थापीने, बत्रीस हो । राख्या प्रमाण; ते पण माने मूळने, काम पंडे हो ! तेमां खेंचाताण, 🧼 सुं० १० नंदी सूत्र बत्रीरामां, आगम हो ! तोंतेर (७३) नाम: चौद हजार प्रकरण कह्या, मूळ पाठे हो! नहीं माने स्याम. सु० ११ पंचांगी कही मानवीं, समवायांगे हो ! भगवती मोझार। भोळा पड़्या ते भर्ममां, तेथी वधे हो ! अनंत संसार, सु० १९ दिन भर मोढुं बांधवुं, कुलिंग हो ! छागे मिथ्यात्व; भक्षा मक्ष टाळे नहीं, नहीं टाळे हो ! कोइ कुळने जात. सु० १३ वासी पाणी सचित होवे, लावे हो ! भरी मरी छोट: उपाधि राखे घणी, देवे हो ! गृहस्थ शीर पोट. साघु नामे स्थानक बंधावतां, ताळां कुंची हो ! करे सार संमाळ;

आहार पाणी साधवी तणा, भोगवे हो ! अज्ञानी बाळ. सु० १६ पडिकु ठकुछ वरनीओ, दश वैकालिक हो ! पांचमे अध्ययन; दंड कहाँ निशीथमां, सर्व मक्षी हो ! नहीं छेन अछेन. सु० १६ सुवो सुतक गणे नहीं, नहीं गणे हो ! नारी रुत धर्म: छोक विरुद्ध आचरण करे, केइक करे हो ! छाना कुकर्म. सु० १७ चेळा छेवे मूल्यना, नानी उमरे हो ! पोते करे संभाळ; टोळे टोळे निंदा करे, छडे झघडे हो ! केइ विकराळ. सु० १८ जीव अजीव पंथीतणा, आठ छ कोटी हो ! केइ पंथापंथ; केइ कपडां काळां करे, बुगला हो ! केइ वाजे संत. सु० १९ किया कल्प पुस्तक बांधीने, घर्यी हो ! भंडार मोझार; शील धर्म छे पेटीमां, ज्यां त्यां हो ! करे भ्रष्टाचार. मु० २० देशीमांथी नीकळ्या, उत्कृष्ट हो । परदेशी नाम: माया अधिकी केळवे, हूं जाणुं हो ! सौ तेहनां काम. सु० २१ स्थानक छोडी नीकळ्या, भाडे हो ! छेवडावे मकान: के ग्रहस्थी रहेवासनुं, खाली करे हो ! फोकट तोफान. अथवा गृहस्थी भेगा उतरे, महिला परिचय हो ! रहे हरदम; पुत्र तो छेवाने गइ, स्रोइ बेठी हो ! पोतानो स्तसम (पति) सु०२३ तपसी नाम धरावीने, पीने हो ! अडघी वलोई छारा; मोटा मोटा कागळ लखे, स्वामीए हो! कीघा छे मास छमास.सु०२४ भोवण पीए दूधनुं, घणी धोई हो ! साकर रहे साथ; साटुं मीठुं अथवा राखनुं, शुं छखुं हो ! जाणे जगनाथ. सु० २५

बेले बेले एकांतरे, पारणे हो ! नहीं संतोष; विगय माटे भमता फरे, छावुं खावुं हो ! असमाधि दोष. सु० २६ खट पट घणी छानी करे, गृहस्थी हो ! रहे आधिन: पुस्तक चेला हेवे मूल्यना, सिद्ध साधक हो ! भरुया प्रवीण,सु॰ २७ माटा दोष साधु सेवतां, गुपचुप हो ! घरमां दे ढांक; लेण देण समाचारनी, गृहस्थ नामे हो ! चलावे डाक. सु० २८ पूज पुंजने पग घरे, गाममांहे हो ! नीची राखे दृष्टि; विहार करे दश कोशनो, मायाचारी हो ! ज्ञानी कह्यो अष्ट.सु० २९ व्याकरण व्याधिकरण मानता, संस्कृतनो हो ! उन्नटो करे अर्थ; सूत्र उत्सूत्र जाणे नहीं, छोपे हो ! केई ग्रंथाग्रंथ. टोले टोले श्रद्धा जुदी, जुदा जुदा हो ! सहुना ए घाण; एक बीजाने उत्थापता, निंदा करे हो ! मांडी खेंचाताण सु० ३१ म्लेच्छपणुं राखे घणुं, मलमूत्रनी हो ! नहीं राखे शुद्ध; शासनने निंदावता, विपरीत हो ! आचरण बुद्ध. सु० ३३ केटलुं लखुं बापजी, लीला हो ! तेनी अपरंपार; केटलेक अंशे मुझने, एना हो ! मोटो उपकार. ते कारण छलवुं पडयुं, ढुंढकनो हो ! प्रभु करो उद्घार; जिनागम जिन प्रतिमा, वांदी पूजीने हो ! तरे संसार सु० ३ 🕏

ढाळ २५ मी—केस (बाल) ने बदले माथे (शीर) काटबुं ए केवल मूर्बाई जेवुं छे अथवा अविधिधी हिंसा थाती जोईनेज तेओ पाकार करता होय तो तेओने विधि पूर्वक प्रभुनी मक्ति करे तो कोण रोके छे परंतु आ समे राग द्वेष करवा के जिनागमें ने कोपवा एते। मोटुं पाप बंधननुं कारण छे मोटे तेओने दीर्घ दिष्ट थी विचारवुं नोइए.

तेरापंथी अधिकार.



दोहरा.

प्रतिमा उत्थापी ढुंढके, माने दया और दान; अढारे पंदरोतरे, भीलम उदय अज्ञान. प्रतिमाने पत्थर कहे, बीर प्रभु गया चुक; पाप कहे दया दानमां, अज्ञानी बेवकुफ.

(ढाल २६ मी)

देशी उपरनी.

तेरापंथीनी वारता, छसतां हो ! दुःख आवे अथागः; शासन चंद्र जेम उजळुं, पंथीडे हो ! लगाव्यो दाग. सु० १ द्या दान जड जैननी, जेमां हो ! बतावे पापः; आवक बटको (टुकडो) झेहरनो, आज्ञा बहार हो ! धर्म दीधो थाप. सु० २

बळतो जीव बचावतां, वध्यो केवे हो ! अनंत संसार; जीवमार्या पाप एक छे, बचावतां हो ! कहे छागे अदार. सु० ३

धर्मरुवी करुणा करी, बचायो हो ! पारेवो शांतिनाय; नेमजी जीव बचावीया, नाग बचाव्यो हो ! श्रीपार्श्वनाथ. पंथी साधुने फांसी देवे, पंथणीयोंथी हो ! सेवे अत्याचार; बळती गायो ए त्रणने, बचावता हो ! कहे पाप अपार. स० ५ सर्व जीवोनी रक्षा कर बीजे अंगे हो ! भारुयं भगवान: पहले रातक रातक आठमे, भगवती हो ! देखीलो प्रमाण. सु॰ इ पंथी साधु छोडीने, कोई देवे हो ! बीजाने दान; बुब्यो कहे संसारमां, जुओ हो ! दृष्टोनुं अज्ञान. स० ७ वरषीदान निनवर देवे, ते वखते हो ! नहीं पंथी साधुः पकड्युं पूंछ गद्धा तणुं, छातो खावे हो ! करे हठबाद. अमंग द्वार गृहस्थी तणा श्रावक हो ! होवे चित्त उदर: विषुख कोई जाये नहीं स्थानांगे हो ! बाघे पुण्य अपार. बीजा दशमां अंगमां, निषेध हो ! कोई सावध दान: चोरी छागे वीतरागनी, निन्हव हो ! नहीं छोडेमान सु० १० भगवती पाठ बतावता, उपासकतुं हो ! हेवे जुडुं नाम; अन्य तीर्थने गुरु जाणीने, देतां हो ! छागे पापनुं ठाम. सु० ११ अंबड अवक सो घरे, पारणुं हो ! करे वीरनां वेण, दान दइ श्रावक तरे, नहीं देखे हो ! जेनां फुटचा नेण. सु० १२ प्रदेशी राजा थयो, केशी श्रमणे हो ! दीघो प्रतिबोध: दानशाळा चोथा मागनी, धर्म धारी हो ! करे घणी शोध सु० १३ सितयो छावे गोचरी, जमाडे हो ! गृहस्थी पेरे साधुः मक्षा भक्ष गणे नहीं, पुदगलानंदी हो ! पड्या जीमने स्वाद. सु० १ ४

पडदे बेठा पूजजी, साध्वीओ हो ! रहे पडदा बीच; भोजन नव नवी जातनाः अंघारे हो करे आंखो मीच. सु० १९ द्युं छें कुम विडंबना, दुां छख़ं हो ! पंथणीओना काम: दुराचार वध्यो घणो; नहीं छानुं हो ! जाणे आतमराम सु० १६ पूछे साधुने शुं खाशो, दूघ दहीं हो ! घी मीठाइ माल, ब्रहस्थी आगळ कहे पूजनी, मारा साधु हो ! त्यांगी उजमाल सु० १७ आधा कर्मीनी भावना, भरी छावे हो ! जेम पातरां पूर; कानुं पाणी राखोडी तणुं, माल खाइ हो अष्ट होने कूर सु० १८ खोटी करे प्ररुपणा, निन्हव कह्या हो ! आगमवाद, हिंग पण जुदो जैनथी, नहीं प्रहस्थी हो ! नहीं होने साधु सु० १९ तेरापंथी नाटक वांचजो, जेमां हो ! नहीं होय बाकी कोय: मोला पड़्या छे अममां, पंथी उपर हो ! अनुकुंपा जीय. सु० २० शीक्षा देदे पुत्रने, नहीं करे हो ! प्रकाशीत पाप; होकयुक्ति न्यायथी, एटलुं लखं हो ! आगळ जाणो आप. सु० २१ ढाळ २६ मी--बंधुओ! तमारा माटे मने घणीज अनुकंपा आवे छे कारण तमे जैन नाम घरावो छो अने जिनाज्ञाथी विरुद्धा-चरण करो एटलुंन नथी परंतु अन्य लोकोमां जैननी द्या अने उदारतानी मोटी छाप पडे छे छतां तमे दया दाननो निषेध करो छो ए केटली मुल भरेली छे परंतु ज्यारे निर्णय बुद्धिथी विचार करशो ते तमने सत्य मार्गनी प्राप्ती थासे माटे पक्ष छोडी न्यायनी रस्तो हेवो जोइए.

उत्मर्ग अपवाद अधिकार.

दोहरा.

उत्सर्ग मार्ग ओळले; नाणे द्रव्यादि काळ; एकांत लेंचे तेहने, ज्ञानी कहे छे बाळ १ त्रणे फीरका एम कहे, हमणां पांचमो काळ; अपवाद मार्ग चालशुं, उत्सर्ग शके न पाळ. २

(ढाल २७ मी).

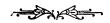
देशी उपरनी

उत्सर्ग मार्ग राखवा, कारण पामी हो सेवे अपवाद;
ते कारण मट्या पछी, नहीं सेवे हो ! श्री वीरना साधु. सु० १
नाम छेवे अपवादनो, मंद संघयण हो ! पंचम आरो तेम;
ते कारण पळे नहीं, छेख्युं हो ! आगममां जेम. सु० २
हंद्रिय पोषण कारणे, छेवे हो ! अपवादनुं नाम;
छती शक्ति खप करे नहि, सुख शीछीया हो ! करे एशआराम सु० ३
जैन कहे आरो पांचमो, अन्य छोकोने हो ! केम चोथो कहाय;
शीतोष्ण वनवासमां, नहीं वस्त्र हो मळे तो रहेवाय. सु० ४
रेहवुं तो रंग महेछमां, खावाने मीछे हो चंगा (पृष्ट) माछ;
गप्पां सुणवा श्रहस्थी मळे, वस्त्र हो ! मळे सुकुमाळ. सु० ५

जंगलमां लेता आतापना, तपस्या हो करता छ मास; पडिमां अभिग्रह घारता, अपवादे हे। ! करे उपवास. सु॰ ६ घर घणां गोचरी तणां, नित्य पिंड हे। देविले लाय; नव कल्प विहार करे नहीं, उपाधि हो ! मोटी पोठ बंधाय. सु० ७ विहार करे वेळा उठीने, पोटळीया हो ! राखे मजुर; पगचंपी करावता, मर्यादा हो ! जे मुकी दूर, सु॰ ८ शतक आठ उदेशो छठो, कारण विना हो ! सेवे अपवाद; सहाय देवे कोई तेहने, बंने चोर हो ! मेाटी पडे खाद, सु० ९ ग्रहस्थ करतां ते। भला एमे, बोले हो ! पास त्या एम; नाम साहुकार करे चोरीओ, अधिक हो चोरोथी तेम. सु० १० पगे पहेरे मोजा मोजडी, शक्त असक्त हो ! नहीं विचार; घडा उपांडे ग्रहस्थीओ, द्वा वैकालिके हो! लागे अनाचार. सु०११ ब्रहत्करपे दिशा समे, प्रश्न व्याकरण है। दसमे अध्ययनः चौद उपकरण साधुने, वंधता जावे हो ! दिनने रेन (रात) सु०१२ जबरजस्ती दिक्षा नहीं, कोण देवे हो ! जबरीथी आप; जो पे ते आदरो, नहीं तो पालो हो श्रावक वत जाण. सु० १३ आराधक श्रावक होवे, पनर (देशविराति हो) भवे हो पामे निर्वाण; विराधक साधु होवे, केटला भव हो नहीं परिमाण. सु० १४ नाम लड् अपवादनुं, वेष मांहे ! सेवे अनाचार; शासन कलंक लगावतां, दुर्लभ बोधि हो ! अनंत संसार. सु० १९ उत्सर्गमां अपवादनी, कमल प्रम हो ! सूरिए कीघी थाप; महानिशीय पांचमे, अनंत संसारी हो भारुनो श्री आप े सु० १६ संयम पूरो न पळे, नहीं पळे हो श्रावक वृत बार; शासननी सेवा करो, पामे हो ते भवनो पार. सु० १७

ढाळ २७ मी—मात्र पांचमो आरो मंद संहनन अने देश-कालनुं नाम लइ छुटवानो नथी पण यथा शक्ति खप करी अमूल्य मनुष्य जन्मने सफळ करवानुं छे.

पासत्था अधिकार.



दोहरो.

पास तथा कुदर्शनी, कुलिगी भ्रष्टाचार, गुरु जाणी वंदन करे, रुले अनंत संसार, १

(ढाल २८ मी)

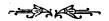
देशी उपरनी.

पासत्थाने वांदतां, कर्म बांधे हो ! कह्यो आगमसार; आहार पाणी साधु देवे, दंड कह्यो हो ! निश्चीथ मेशझार. सु० १ पासत्थानी प्रशंसा करे, परिचय करी हो ! देवे आदरमान; वस्त्र पात्र देवे वांचना, दंड कह्यो हो ! श्री वीरनुं ज्ञान. सु० २ पासत्थाने कुशीलीया, उसन्ना हो ! नित्य पिंडिया होय; गामनगर पंडोलीया, संसकता हो ! वत खंडीया नोय. सु० ३ पासणीयाने कथा गा, ममईया हो ! निन्हव जोय; आमोगीया किलवेषीया, बहु रुपीआ हो ! निमीतिया होय. सु० ४ कुतुहला काम कीडीया, चारण जेम हो ! जस बोले कोय; केइ दास ग्रहस्थी तणा, एटला हो ! अवंदनीक होय. सु० ५ सर्प अग्नि विष, सेवतां, रास्त्रथी हो ! मरे एक जवार; कुगुरु तथी अधिको कह्या, भमाडे हो ! अनंती वार. सु० ६ पांच छ सात आठ नव, नवनवो हो ! दुर्गति जावे अंक; आचारजने चौ संघनां, महानिशीय हो ! तुमे वांचो निःशंक.सु०७ संजम पुरोनवी पळे, रुडो कह्यो हो ! प्रभुए अहस्थावास; उभय भ्रष्ट महापापीआ, करे हो दुर्गतिमें वास. सु० ८ यतिपरिग्रह धारी हुआ, तो पण हो ! रही करामात; जोतिष वैदिक निभीतथी, शासन कार्य हो ! केइ कीयां हाथ सु० ९ साचा रह्या लंगोटनां, काम पडे हो ! बताव्या हाथ; सूत्र सिद्धांत लख्या घणा, हुआ हो राजा राणीना नाथ (पूजय)सु०१० पासत्थानी प्रशंसा नहीं, गुण लीघा हो जे जाणी संबंध; हमणांना साधुनी वारता, तेहनो हो ! प्रभु सुगो प्रबंध. सु० ११ पेट दुःखे पोता तणुं, डाक्टर हो ! आवे हकीम; रुपिया देवे फी भरे, विद्वानोनी हो ! आवी छे सीम सु० १२ दीक्षा देवी शिष्यने, ब्राह्मण हो ! बोलावे मुहुर्तकाज; च्युता लागे लोकमां एवा गुरुथी हो ! केम सुधारे समाज, सु० १३ आगम छखवुं जाणे नहीं, जे जाणे हो ! ते करे प्रमाद; रूपिया देवे वाणीया, कोण करे हो ! पुरुषार्थ साधु. सु० १४

यातिने पासत्था जाणीने नहि करी हो! संघे सार संभाळ;
एवी रीते हवे पासत्था तणी, करतां हो केवाथासे हाल. सु॰ १९
पुरुषार्थ रह्यो नहीं, नहीं रही हो! कोई करामात;
रोटी मळवी मुश्केल थशे, नहीं छानुं हो! तुं जाणे तात. सु॰ १६
थोढुं लख्युं घणुं जाणजी, मारा साहेब हो! तमे चतुर सुजाण;
कोप करशे मेझर वांचतां, पासत्था हो! ते लेजी पीछान. सु० १७
पक्ष करी पासत्था तणो, सुमतिनागीलनो हो! जुओ अधिकार,
महानिश्चांथ चोथे कह्यो, रुख्या हो! अनंत संसार. सु॰ १८
पक्ष छोडी पासत्था तणो, पुरी हो! करशे पीछान;
ते तुज चरणे आवशे, देजो हो! प्रभु केवळ ज्ञान. सु० १९

ढाळ २८ मी—पासत्थाओनी प्रशंसाके अछाप सछाप कर-वानी प्रभुए ना पाडी छे तेनुं कारण—जेमके सुशीछ बेहन जो कदी वैश्यादिना गुणगान करे के तेने साथे परिचय राखे तो छोकोमां ते सुशीछा पण निंदानो पात्र थई पडे तेम यछाचार वाळा मुनिके श्रावक वर्ग पासत्थाओनां परिचयथी पोते निंदाना पात्र थाय छे अने पासस्थाने बहु मान मछवाथी उचिरिने पोषण थाय छे एटछा माटे पासत्था थावाज न देवा जोईए कदाच कर्म योगे थाय तो पछी संघ तेने आदर न करे तेज शासनने हितकारी थाय.

श्रावक अधिकार.



दोहरा.

जिन शासन भूषण समा, दीपावे जैन धर्म; जीवादिक नव तत्वना, साची समजे मर्म. द्यादान उदारता, हृद्य स्फाटिक समान; जिनवर पूजे भावथी, श्रावक गुणनी खाण. रसीया जैन सिद्धांतना, नवी नवी घारे वात: एक तरफ साधु उपासका, एक तरफ जनकने मात. आलंभिक तुंगीया तणा, शंख पोख्खली सार; आनंदादिक मोटका, एक छख गुण सठ हजार. श्रीमुख वीरे वखाणीया, मंडुकने कामदेव: दृढ श्रद्धा वीतरागनी, सदा करे गुरु सेव. मात पीता सर**खा कह्या, ठाणांगे** उजमालः भगवती शतक सोळमे, कह्या रत्नोनो माल. नेवा साधु तेम श्रावको, शासन तुन जयवंत; वर्त्तमान वीतक छख़े, सांमळ महिमावंत.

(ढाळ २९ मी.)

देशी उपरनी.

श्रद्धालु श्रावक घणा, राखे हो ! शासनथी प्रेम;

जाणी अभ्यंतर आतमा, रुडां पाळे हो ! छीघां व्रतने नेम. सु० १ बहु रत्ना वसुंधरा, नहीं करे हो ! खाळी डंफाण: हमणां श्रावकनी वारता, सुणीये हो ! प्रभु दै ध्यान. जेवी दशा साधु तणी, तेवी हो ! श्रावकनी जाण, मेलां हृदय मायाघणी, संघमां हो ! मांडी खेंचा ताण. सु० श्रद्धा छोडी देवनी, सरागी हो ! पूने देवी देव: मिच्छामि दुककडं कुंभारनुं, पाली चोमासी हो ! देवे नित्य नित्य मेव. सु० ४: देव द्रव्य गणे सुखडी, ज्ञान द्रव्य हो ! गांठे करी जाय, हिसान कितान जाणे रामजी लामी हो ! जळमांहे लाय. भक्षाभक्ष आरोगतां, होटलमां हो ! पीवे चाहने दुघ; आचार डुब्यो जैननो, मोह छाक्या हो ! नहीं रहे शुद्ध सु० ६ स्वगच्छनो पासत्थो हुवे, वंदे पूने हो ! करे बहुमान, परगच्छनो गीतार्थ होवे, किया पात्रना हो ! करे अपमान सु० ७० ध्वजा पताका सम बनी, पवन जेम हो ! फरी जाये आप, मोढुं देखी टीलुं करे, जुठी साची हो ! करे आपणी स्थाप. पक्ष करे पासत्था तणो, देवे हो ! शीथिळने सहाज, अवगुण गुण जाणे नहीं, एम बगडी हो ! आ जैनसमाज. स० ९

अर्मी नाम धरावता, केइ हो ! करे अत्याचार: ैंजैन निंदावाने जनमीया, मळ्यो हो ! बहुलो परिवार. सु० १० स्वामी वात्सल्य नामथी, माछ पाणी हो ! उडावे खुन; स्नान करे भांगो पीवे, चोथुं व्रत हो ! भांगे बेवकुफ. सु० ११ स्वामी वात्सल्य कर्यो पोखळी, पोषध शाळाए हो ! करे धर्मने पुष्ट; माल खाई धर्म नहीं करे, कृतन्नी हो! वळी कह्या दुष्ट. सु० १२ रुद्धट्टा कह्या, गुरुगमधी हो ! जाणे आगम रहस्य; प्रश्न पूछी निर्णय करे, जाण पर्णुं हो ! करे विशेष. सु० १३ ं पोते पंडित बनी रह्या, स्वच्छंदे हो ! वांचे ग्रंथाग्रंथ, आज्ञा नहीं वीतरागनी, अर्थ तणो हो ! करे अनर्थ. सु० १४ पोते पड्या प्रमादमां, गोठी पासे हो ! पूजावे देव; भक्ति आशातना कोण गणे, पैसा खातर हो ! करे नित्य सेव सु॰ १९ प्रभु पूजा करे नहीं, करे तो हो ! न जाणे विधि; उपदेश सुणे नहीं कानमां, पोते हो ! बनी बेठा सिद्धः सु० १६ स्नान करे मंदिर मांहे, वापरे हो ! अणगळ्यो नीर; नीलण फूलण कोण गणे, कोण गणे हो ! त्रत जीवोनी पीड.सु०१७ पोते तन पोषण करे, लगावे हो! साबु भेठ ने तेल; कपडां धोवे मोझो करे, जुं छखुं हो ! भरतना खेल. सु॰ १८ दाढी मुंछ जमावता, तिलक करतां हो ! लागे घडी एक; प्रभु पूजा करतां थकां, पांच मिनिट हो ! लागे विशेष. सु॰ १९ द्शित्रक कोण सानवे, अभिगमनी हो ! क्यां रही वात;

चोराशी आशातना कोण गणे, काम पडे हो! आवे बाथम बाथ. सु० २०

फेंटा टोपी सुंथण पेहरीने, जुतां छतरी हो ! छकडी छेइ जाय; कोघ करे गाछी देने, पूजा करता हो ! रागद्वेष कराय सु० २१ रोशनी करे रातना, मंदिरमां हो ! छेने मक्तिनुं नाम; अणगणता त्रस जीवना, प्राण जाये हो ! जुओ विणकनां काम.सु०२२ आणा नहीं आगम तणी, चैत्यवासी हो ! नचाव्या नाच; इंद्रिय पोषण कारणे, नहीं करे हो ! गाडरीयां जाच (शोध);

गाममां गुरु वंदे नहीं, दृष्टिरागी हो ! जाये सो कोश;
चोमासामां फरता फरे, आज्ञा मांगे हो ! नहीं गणे दोष. सु० २४
मोटा मेटा आरंम करे, करे हो ! विश्वासनो चात;
अधर्मना द्रव्य खर्चीने, निकाले हो ! मोटा संघनो साथ. सु० २९
अन्याय द्रव्य मोजन करे, पीवे खावे हो ! चउिध संघ;
हृद्य न्याय रहे नहीं, श्रावक साधुनो हो ! जाणो एक ढंग.सु०२६
द्यावंत श्रावक रहेवे, चोमासे हो रहे एक जा ठाम;
जस कीर्तिना बानेथी, संघ काढी हो फरे गामोगाम. सु० २७
वहेलां उठे रातना, होवे हो त्रस जीवोनो नाश;
वीर आज्ञा उंची धरी, दील मांहे हो नहि द्यानी वास. सु० २८
साधु मरे करे टीपणी, नवकारशीए हो करे नवा नवा माल;
जाणे आव्या मसाणीआ, चेला चेली हो जमे बाळगोपाल. सु० २९

अठाई महोत्सव मंडावीने, पादुका हो ! स्थपावे विंब; रीत करे कल्याणनी, क्यां अमृत है।! क्यां रह्यो लींब (लींबडो). स० ३० मंदिरमां भगवाननी, मूर्तिओ हो ! मळे पांच साथ; साधुतणी स्थापना, केटली मळे हो दुां लखुं नाथ. सु० ३१ मार्गानुसारपणुं किहां, किहां हो सम्यकत्व आचार; क्यां शासन प्रेमी पणुं, दीर्घ दृष्टि हो क्यां रह्यो विचार. सु० ३२ रात्रि भोजन वरजीयुं, आगममां हो ! कह्युं मोटुं पाप; सो मांहे एंसी टका, मळे तो हो ! रात्रे खाय घाप (घापीने)सु० ३६ मीलो जीन चरचा तणा, मोटा आरंमे हो ! करे अत्याचार: विश्वासघात कुडी साखमां, टांचे। छेवे हो ! नहीं श्वरम लगार सु० ३ ४ कन्या वेचे आपकी, दमडालोभी हो ! देवे परणाय, साठ वरसनो डोसलो, लाडी-लावतां हो ! नहीं शरमाय सु॰ ३६ वाडा बांध्या गच्छ तणा, तडा हो ! गामे गाम देखाय; एक बीजाने जुठो कहे, काम पडे हो ! कोरटमां जाय. सु० ३६ वेश्या बोलावे लग्नमां, वरघोडा हो ! काढे वादावाद; हारमोनीयम वाजातणा, सुणे हो ! विषयना नाद. स० ३७ पैसा जाये निजतणा, घणा जीवो हो ! बांधे कर्म: जाण्यो नहीं जिन धर्मने, भोळा हो ! जीव पड्या भर्म. सु० ३८ एक दिनना नाममां, खर्चे हो दशवीस हजार; स्वधर्मी भूखे जो मरे, कोण राखे हो ! तेनी दरकार. म० ३९

जान जमाडे आवे प्राहुणा, राते रांघे हो ! पडे जीव असंख्य; क्षुं केवुं संसारनुं, स्वामीवात्सच्य हो ! जमे निःशंक. बाल नाना परणावतां, जाणे हो ! ढींगलानो खेल: बालविधवा संख्या घणी, वध्यो हो ! अनाचारनुं मेल. वासी आहार राखे रातना, बीने दिन हो ! उनो करी खाय; शुद्ध बुद्धि रहे केणी रीते, ढुंढकने हो ! केम आवे दाय. सु० ४२ अकबार अरडाटा करे, माषणे हो ! केई करे पोकार. **ज़ैन कोम कमती तणा, मोटा में।टा हो ! छखे समाचार.** सु० ४३ पाठशाळा गाम गाममां, स्कुलो है। ! स्थापे अनेक; केळवणी कुकवा करे, नहीं कम हो ! करे देखादेख. व्यवहारिक विद्याभणी, भणे हो ! इंग्लीशनुं ज्ञानः भूगोळ खगोळ मणावतां, फेस्यु हो ! बहुलुं अज्ञान. स० ४९ पांच कलाक अंग्रेनीमां, धर्ममा हो ! मळे अर्थो कलाक; धर्म असर ते केम पड़े, श्रद्धा हो ! छेवट जावे थाक. मंदिरने उपादारा, आगम हो ! गणे गप्पां समान; मुहने गणे रमतीओ, हम तुम हो ! देव गुरु धर्म. सु० ४७ मात पिताने नहीं गणे, नहीं गणे हो ! केर तीफान. अत्यक्ष प्रमाणज मानता, नास्तिक हो ! केई पड्या भ्रम. सु० ४८ पास थयाने पूछतां, सोमां हो ! नीकळे दशवीशः; ्षंती टका अलगा पड्या, नहीं छाना हो ! जाणे जगदीश. सु० ४९ स्थिर सूर्य पृथ्वी चले, जीवाजीव हो ! पुण्य पापमां फेर; पहेंचां असर खोटी जमे, बंने उद्धत हो नहीं लागे देर. सु० ६०

अन्य कोम वधती रहे, जैन कोम हो ! घटती रहे नाथ; तेना कारण छे घणां, उपर रुख्या हो ! आ मेझर साथ- सु॰ ५१ ज्ञान सिवाय उन्नति नहीं, होवुं जोईए हो ! ते कमसर ज्ञान; क्रमसर भणावतां, शासनमां हो ! पामे बहुमान सु० ५२ पहेळां अक्षर भणाववा, पछी हो ! संख्यानुमान; पछी धर्म भणावतां, पामे हो ! ते सम्यग् ज्ञान. धर्म तणी क्रिया करे, जाणी हो ! ते पुण्यने पाप; देव गुरुने ओळखे, काम वडे हो ! मंडन करे आप. द्रढ अक्षर जाम्मा पछी, मले भणे हो ! इंग्रेजी ज्ञान; राजभाषा पण शीखवी, जेथी हो ! मळे धर्मने मान. पहेलां श्रद्धा पाकी होवे, भले सीखे हो ! मिथ्यात्वी ज्ञान: नंदी सूत्रमां एम कह्य, सम्यग्दृष्टि हो ! होवे सम्यगज्ञान, सु० ५६ एक उपाय उन्नति तणो, बीजो छखुं हो ! आ मझर साथ; साधु वर्ग सुधारवो, आ काम छे हो ! श्रावकने हाथ. मुनि वर्गनी उपरे, रह्यो हो ! शासननो भार; ज्यां सुधी ते सुधरे नहीं, त्यां सुधी हो ! नहीं थाय उद्घार सु०५८ ममता छोडे गच्छनी, छोडे हो ! स्थानक धर्मशाळ; शिष्य तणी छोडे लोमता, चाहा दूघ हो ! छोडे भातदाळ.सु० ५९ अधिक उपाधि पोटला, छोडे हो ! पुस्तक भंडार; विचरे देशो देशमां, किया हो ! करे शास्त्रानुसार गृहस्थनो परिचय तजे, नहीं हो ! कोई राखे पक्षापक्ष; सत्य मार्ग निःशंकथी, वैराग्ये हो ! पोते आत्म लक्ष. सु॰ ६१

संघनेता मळी एकडा सुविहित हो मळे साधु समाज; समयानुकुळ चालवुं नहीं देवो पासत्थाने साज. सु० ६२ मुनि उपदेश श्रावकने करे, श्रावक हो छावे मुनिने ठाम; बगड्याने सुधारतां बांधे हो तीर्थेकर नाम. सु० ६३ छती राक्ति खप करो, कांई करो हो शासन उद्धार, मनुष्य जन्म सफल करो, वारंबार हो नहीं अवतार. सु० ६४ सात क्षेत्र आगममां कह्या, ज्ञान हो कह्यं सर्वनुं मूल; उत्तेजन दई तेहने मोक्ष जाये हो काढी कर्मशूल. स॰ १९ धैर्य गुण धारण करो, मेझर वांची हो मनमां करी विचार; ठीक छागे तो आचरो, दुःखथी हो में कर्यो पोकार ढाळ २९ मी.—शासननी अंदर श्रावक पण उच्च कोटीमां गणाय छे. कारण के छ क्षेत्रने पोषण करवा ते श्रावकथीज बनी शके छे माटे श्रावक वर्गने पोतानो शील, (आचार) न्यायपणु, सत्यता परोपकारता, सर्वजन मैत्रीक भावना अने आत्मद्शामां प्रयत्न करी शासन सेवा बनाववा तत्पर थवुं जोइए. जे अज्ञानवश कोइ स्थले कोइ व्यक्तिमां दुर्गुण जोवामां आवे तो मधुर वचनथी हित शिक्षा आपी गुण वधारवा जोइए परंतु अंध श्रद्धाथी एक तारे बीजाने डुबी मरवुं के कलेश कदाग्रह करवो ते वीर पुत्रोने छाजतो नथा, माटे यथा नाम तथा गुण प्राप्त करवो.

(%)

आराधिक विराधिक अधिकार.



जिन आणा विराधतां रुछे अनंत संसार; आणा आराधी जे हुआ, शिवरमणी भरतार. काळ अनंतो हुं भम्यो, भवमंडलना बीच (वचे) मुज सरखो पापी नही, नीच नीचथी नीच.

(ढाल ३० मी)

देशी उपरनी.

सूक्ष्म निगोदमां हुं वस्यो, वादरमां हो वळी काळ अनंत; काळ असंख्य सत्व घरे, वनस्पित हो नहीं भवनो अंत. सु० १ विकलेंद्रीने भगतां थकां, असंज्ञी हो पंचेंद्री मोझार; संज्ञी पंचेंद्रीने घरे, भव कीधा हो गणतरी बहार. सु० २ नर्क तणां दुःख में सद्यां, आगमथी हो जाणीये वात; तीर्यंच पांच प्रकारना, योग नियोग हो जुदी जुदी जात. सु० ३ आर्य अनार्य मनुष्यमां बाल तपथी हो सुरनो अवतार; व्यंतर आसुरी कायमां, चउगित हो ! मन्यो वारंवार सु० ४ ने संबंधी मुझ तणा, गया हो ! प्रभु मोक्ष मोझार; हुं अधन्य अभागीओ, तुं जाणे हो ! भव्यामव्य विचार. सु० ९

मनुष्य पणुं हवे पामीओ, आयंक्षेत्र हो ! उत्तम कुछ जात	;	
चाळ अनादिनी मुझ तणी, छखुं हो ! संक्षेपे वात.	सु॰	Ę
बाळपणुं खोयुं खेळीने, तरुणवये हो ! घणा विषय कषाय;		
द्युं लर्ख़ कर्म विटंबना, जुठी हो ! कोइ नाळ रचाय	सु	9
जीवहिंसा जुटुं बोछवुं, चोरीथी हो ! छीघो परमाछ;		,
रमणीरूपे मोहीयो, परिग्रहे हो ! लेवा उजमाल.	सु०	(
कोाधादिक मिथ्यात्वना, सेन्या हो ! अढारे पाप;	an e e	
कमीदान न छोडीयां बनी बेठो हुं पापनो बाप.	सु	8
दुःख गर्भित वैराग्यथी, घर छोडयुं हो ! नहीं छोड्या काम	Ŧ;	
स्थानकवासीमें दीक्षा छीघी, पूज्य हो ! श्रीठाछनी नाम.	सु०	१०
दीक्षा छेई पूज्यथी, केइ वांच्या हो ! अंगोपांग;		
विरूद्ध रस्तो जाणीने, छोड्यो हो ! ढुंढक संग.	सु०	8.8
कारण निर्मात्त भलुं थयुं, मानुं हो ! पूज्यनो उपकार;		
कदाचित बुरो होवे, उपादान हो कारण विचार.	सु॰	१२
नगर ओशीए भेटीया, वीर प्रभु हो ! गुरूरत्नना पाय;		
समाचारी जुदी जुदी, वांचीने हो जीव अकळाय.	सु०	१३
कांइक छीछा सांमळी कांइक हो ! नजरे छीधी देख;		
उत्पत्ति नोइ आपणी, वांच्या हो ! प्राचीन लेख.	मु॰	१४
पार्श्वनाथ तेवीसमा, ग्रुभदत्त हे। थया तेनी पाट;	*	
हरिदत्त आर्यसमुद्रजी, केशीश्रमण हो ! थया चोथे पाट.	सु०	१५
स्वयं प्रभ पाट पांचमे, श्रीमाल कीया हो ! पोरवाळ जैन;		
इटे पाठ रत्नम मसूरि उएस पटण हो ! आव्या पंचसे छेन	। सु०	१६

उपलदे राज आदि करी, तीन लाल हो ! चौरासी हजार: पंचार राजाना वंदामां, हूं पण जन्म्यो हो ! आ वार, सु० ते उपकार जाणी करी, ते गच्छमां है। कर्यो कियाउद्धार: जाणो छो मुज साहेबा आगळ हो ! आराधक विचार चोथे आरो वीर विराजता, तोपण हो ! नहीं पाम्यो धर्भ; मलो आरे मारे पांचमो, संक्षेपे हो ! जाण्यो धर्मनो मर्म. सु० १९ मुळ उत्तर गुण तणो, देस सर्व ! विराधक हे।य; दश प्रकारे आलोचना, लेता हो ! आराधक जोय. व्यवहारसूत्र एम कह्यो, साधुने हो ! केइ लागे दोष; गीतार्थ अथवा चैत्यमां सिद्ध साखे हो ! होवे निर्दोष. सु० २१ द्रीन आराषे चरणविराधना, चरण आराधे हो द्रीन विराधक होय; त्रीमो बन्ने आराधतो, चोथे मांगो हो बन्ने निराधीक जोय सु० २२ शुद्ध प्ररूपक ने होये, शुद्ध चारित्र हो शके नहीं पाळ; काहे दुभग निज तणा, पहेलो भांगो हो नहीं मायाजाळ. सु० २३ चारित्र पाळे उनळो, न्युनाधिक हो। प्ररूपे जेह; जमाछि जेम जाणवो, बीजो भांगो हो थाये जाणो एह. शुद्ध प्ररूपे शुद्ध आचरे, गुरू गौतम हो भागे श्रीजो जाण; इमणां मारा जेवा बाळमां, भांमी हो ! चोथो पीछाण. स० २५ न्युनाधिक कोई पद कहे, कहे हो कोई अक्षर एक; चारित्रथी शीथिल होवे, चोथे मांगे हो मन करे अनेक सु० २६ एक बीजाने जूठो कहे उत्सूत्र हो ! बोछे करतां वाद; आगम उत्थापे अभिमानथी सत्यने हो ! कहे मिथ्यावाद. सु० २७ मेरू जेटला ओघा पातरां, लीघा हो महीं मवनी चैन. सु० २८ चोर करे जो चोरीयो, राजा पासे हो जो बोले साच; साफ ने माफ मळे सदा, कसोटी हो ! लेवे सोनुं जाच. सु० २९ एक मारी नहीं विमती, विनती हो, करे भरतनो संघ, आराधक पद दे नाथजी. लगावो हो ! प्रमु आपनो रंग. सु० ३० रागद्वेष तहारे नहीं, तेथी लखुं हो ! प्रमु वारंवार, अनंतवार आगळ लखी, नहीं सरी हो ! प्रमु वारंवार, संकीणीता न करो साहेबा, कांइ करो हो ! प्रमु वित्त उदार, खरच लागे नहीं आपने, मत मुको हो ! मुजने निराधार. सु० ३२ हवे तो पुरो धापी गयो, कंटाळ्युं हो ! संसारथी मन, मत तरसावो बापजी, नहीं मागुं हो ! कोइ राज के धन. सु० ३३ निर्मुणी तो पण आपनो, क्यां जाउं हो ! नहीं बीजो नाथ, अनेक भक्तोने तारीया, हमणां हो ! वारो आल्यो मुम सात.

स० ३४

मेह आवो मेह आवो करे मोरीयां, वर्षवुं हो ! ते तो ईद्रने हाथ, मारे तो जोर छखवा तणुं देवुं छेवुं हो ! जाणो जगनाथ. सु॰ ३९

ढाळ ३० मी—मारो जीव अनंत काळथी संसारमें भ्रमण करतो पण कोइ काळे आराधीकपद नथी मिल्यो, आ वस्तते पण सीमंधर स्वामीथी प्रार्थना करी छे जे मीछे ते सक. (१०२)

पूर्णता.

दोइरा.

साधु नहीं सौ सारीखा, श्रावक नहीं सब तुल्य, सामान्य विशेष किया करे, पामी धर्म अमूल्य जे कछम जेमां चले तेनुं थाय व्याख्यान, राग द्वेष करशो नहि, पामी निर्मळ ज्ञान

ं (ढाल २४ मी).

देशी उपरनी.

मुख्यतामां ए कह्या, गौणतामां हो ! घणा गुणवान, तप संयम किया करे, वंदना होजो हो ! उगते (भाण) सूर्य सु० १ तीथोंद्धार केइ मुनि करे, केइ करे हो ! आगम उद्धार, शासन प्रेमी केइ मुनि, केइ हो ! करे किया उद्धार. सु० २ श्रद्धालु श्रावक घणा, शासन पर हो ! झाझो प्रेम, देव गुरू मिक्त करे, रुडां पाळे हो ! लीधां त्रतने नेम. सु० ३ नेनामां समकीत वसे, स्विलंगी हो ! अन्य लिंगी होय, ते तो जाशे मोक्षमां, ढोंगी हो ! रोलशे जगमांय. सु० ४ आणा पाळी शके नहीं, तो पण हो ! काढे निजना दोष, ते दिन रुडो उगशे, पाळुं हो ! संयम निर्देष. सु० ६ समकीत शुद्ध कह्युं तेहनुं, आयु बांधे हो ! उंची गित जाय,

ते तुज चरणमां आवशे, मोक्ष देजो हो ! प्रभु महेर कराय सु० ६ पोते पूरु पाळे नहीं, बीजानी हो ! करे निंदा पूर, भवाभिनंदी जीवडा जिन मार्ग हो ! तेथी रहेशे दूर. सु० ७ जो तेने रुचशे नहीं, ते तो हो ! कुडां करशे तोफान, ते मुजने परवा नहीं, मारे माथे हो ! मोटा भगवान सु० ८ सुई तो जाये शोधवा, नीकळ जावे हो ! मोटा उंटना उंट, काने मुणी जुठी होवे, नजरे देखी हो ! नहीं होवे जुठ. कदाचित पासत्था मळी, साचाने हो ! करी देवे जूठ, पण परभवे छुटे नहीं, परमाधामी हो ! कररो नही छुट. सु० १० मेझर वांची बापजी, मत देजो हो ! गादी नीचे मेल, अधारं फेल्युं भरतमां, नहीं हो ! दीवामां तेल. सु • तारो हुकम माने घणा, ईद्रादिक हो ! रहे कोडो देव, राजा राणा नित्य पूजता, करता हो ! तारा चरणनी सेव. सु० १२ कांतो मोकलो देवने, नहीं तो हो ! मोकलो समाचार, मारूं जोर छखवा तणुं तुं जाणे हो ! प्रभुतारो आचार सु० १३ विपारी छोकोने पूछीयुं, मेझर आंगे हो ! नहीं छोकमां रीत; उत्तर छलनो कृपा करी, बनी रहे हो ! तारे मारे प्रीत. सु० १४ सिद्ध क्षेत्रनी यात्रा, कारणे हो आव्यो गुजरात, मुणवाथी अधिकुं देखी, आपथी हो ! नहीं छानी वात. मारो हेतु खोटो नहीं, नहीं हो परनिंदाथी काम, ्रद्वेष बुद्धि मारी नहीं, जाणो हो ! श्री आतमराम. सु० १६ जेवो रस्तो कल्पनो, छल्या हो ! मेशरमां जोय, 🕐

न्युनाधिक मित दोषथी, मुझने हो ! मिच्छामिदुक्क हं होय. सु॰ १७ संघ रज मुज शीर चडो, हुं छोटो हो ! संघ चरणोनी रज, अवगुण भर्यो मुज आतमा, मत जाणो हो! मुजमां कशुं धज सु० १८ मारी मने खबर नहीं, मन्या भन्य हो ! जाणो जगनाथ, तो पण घन जिम गाजशुं, मारे माथे हो ! प्रभु तारो हाथ. सु० २२ हजार दुर्जीन नवला होने, सबळो हो ! होने एकज नाथ, कुण गंजे तारा दासने, तारे हो ! हजार छे हाथ. सु० २३ ज्ञानसुंदर गरीवडो, एकलडो हो ! पड्यो तुज पाय, बीजुं शरणुं कंइ नहीं, मारे तो हो ! तुं बापने माय सु० २४ ओगणीसे पंचोतरमे, सुखे हो सुरत चोमास, मेझरनामुं शरु कर्यु, पूर्ण कीर्युं हो ! सिद्धाचल खास. सु० २५

कळशं.

सीमंघर स्वामी अंतर जामी, मोक्ष कामी जग जयो, आगम संगे, मने चंगे, मेझर रंगे में छरुयो, नित्य वांचो हृदय जाचो, श्रद्धो साचो सुखमयो, इत्नपायो, झान गायो, सुख सवायो, शिवगयो.

ढाळ ३१ मी—पूर्णतामे बधा साधु के सरखा नथा थाता तो पण जे अमूल्य रत्नोनी अंदर काचना कटकाने तुरत जुदा पाडवानी जरुरत छे. पछे रत्न आप एथी प्रकाश करशे. मारी मावना दर्शावी छे भुछनी क्षमा याचना प्रदान करशे. इति.